वीणा

कक्षा 5 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

0531

© NCERT not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Reprint 2026-27

0531 – वीणा
कक्षा 5 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5729-667-0

प्रथम संस्करण
जून 2025 ज्येष्ठ 1947

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2026 माघ 1947

PD 260T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा विश्व परिवार, प्लॉट न. 421, सड़क न. 7, सेक्टर सी, उर्ला इंडस्ट्रियल एरिया, उर्ला, रायपुर - 492 003, छत्तीसगढ़ द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरू 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*दीपक जैसवाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*प्रकाश वीर सिंह*

आवरण एवं चित्रांकन

अचिन जैन
(ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि.)

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का प्रारंभिक स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए और उन्हें हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्भूत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने तथा आधारभूत साक्षरता और गणितीय कौशल अर्जित करने का आधार प्रदान करता है ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण मध्य स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

प्रारंभिक स्तर, आधारभूत और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का काम करता है। यह विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, अनिवार्य रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ जारी रहेंगी लेकिन इनके साथ-साथ इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से भी समग्र अधिगम और आत्मावलोकन हेतु उनमें सभी विषयों का आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा एवं पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषाओं, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 5 के लिए वर्तमान पाठ्यपुस्तक *वीणा* इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विकसित की गई है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का अक्षरशः अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है जो इस स्तर की शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समेकन किया गया है। साथ ही विद्यालय-आधारित समग्र मूल्यांकन जैसे विषयों से संयोजित होने वाले बिंदुओं को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इन सबके साथ भरपूर रोचक विचारों और गतिविधियों से पूर्ण यह पुस्तक निश्चित रूप से बच्चों के लिए केवल रोचक ही नहीं होगी, अपितु उनकी ज्ञानवृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगी। बच्चे इसमें सम्मिलित सभी विचारों को आत्मसात करेंगे तथा इसमें सुझाई

© NCERT not to be republished

गई गतिविधियों को अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ मिलकर करेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है बल्कि यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे संबंधित अन्य गतिविधियाँ सीखने की प्रक्रिया को आनंदमयी और लाभप्रद बनाती हैं। इसलिए इस पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों से सीखकर, विद्यार्थी और शिक्षक दोनों, इस स्तर पर अपना अनुभव समृद्ध कर और भी बहुत-सी आनंददायक गतिविधियों को कर पाएँगे।

यहाँ यह महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पाठ्यपुस्तक का शिक्षणशास्त्रीय पक्ष समझ, मौलिकता, तर्कशक्ति और निर्णय लेने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस स्तर पर बच्चे सहज जिज्ञासु होते हैं और उनके मन में बहुत-से प्रश्न होते हैं। इसलिए सीखने के मूल सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियों की रूपरेखा बनाते समय बच्चों की उत्सुकता को संबोधित करने के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए। यद्यपि आधारभूत स्तर से खेल आधारित सीखने की विधियाँ जारी रहेंगी, तथापि इस स्तर पर शिक्षण-अधिगम में सम्मिलित खिलौनों और खेलों की प्रकृति थोड़ी भिन्न होगी। अब ये खेल केवल आकर्षक होने के बजाय बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से अधिक जोड़ने में सहायक होंगे।

इसी प्रकार, इस पुस्तक से सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है, तथापि यह अपेक्षा भी है कि बच्चे इस विषय पर बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी पढ़ेंगे और उनसे सीखेंगे। अत: विद्यालयों में पुस्तकालय इस हेतु अद्यतन किए जाने चाहिए। साथ ही, यह भी अपेक्षित है कि माता-पिता तथा शिक्षक बच्चों की सीखने में और अधिक सहायता करेंगे।

सीखने हेतु प्रभावी वातावरण ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि बच्चे ध्यान, उत्साह एवं जुड़ाव के साथ सीखने के लिए प्रेरित हों। उनकी जिज्ञासा तथा सृजनशीलता को विकसित करने के लिए उन्हें निरंतर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इस विश्वास के साथ कि यह पुस्तक इन सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध होगी, मैं यह पुस्तक प्रारंभिक स्तर के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सम्मिलित समस्त लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित हितधारकों की अपेक्षाओं के अनुरूप होगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आपकी सकारात्मक टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जो भावी संशोधनों में सहायक होंगी।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
31 मई 2025

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक के विषय में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि कक्षा 5 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *वीणा* आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे बच्चे अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बच्चों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अतः यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों की जीवन-शैली में परिवर्तन होने के साथ-साथ उनमें अपेक्षित व्यवहारगत बदलाव होना भी शामिल है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी प्रधानतः भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्यों का सापेक्ष संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों को अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विद्यार्थी भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें अपितु इसके सौंदर्यशास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है—

1. पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, नाटक, पहेली, चुटकुले व अन्य रचनाओं को रखा गया है ताकि विद्यार्थी पिछली कक्षाओं में पढ़ी गई सामग्री की शृंखला में इसे देखें और इनसे अधिक गहराई से जुड़ें। पाठ्यपुस्तक में संयोजित सामग्री रुचिपूर्ण एवं पाठ्यचर्या के लक्ष्यों व सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर चयनित की गई है तथा पाठाभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे विद्यार्थियों में भाषा-संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।

© NCERT not to be republished

2. पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।

3. यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से विद्यार्थियों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।

4. पुस्तक में विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे – समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

प्रारंभिक स्तर (प्रिपेरेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं —

पाठ्यचर्या लक्ष्य-1: विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-2: परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे – गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-3: अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-4: विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-5: पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति भी एक प्रमुख उद्देश्य है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफल तय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री का संयोजन

पुस्तक का आरंभ 'किरन' कविता से किया गया है। यह कविता सूर्य की किरणों के बारे में रोचक, सरल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। 'सुंदरिया' (कहानी) में मानवीय भावनाओं को प्रस्तुत किया

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

गया है। सुंदरिया, हीरासिंह के परिवार के लिए केवल एक पशु नहीं है बल्कि पारिवारिक सदस्य की तरह है। 'न्याय' (नाटक) में हंस को बचाने का करुणामय व्यवहार सिद्धार्थ द्वारा किया गया है। ये दोनों रचनाएँ विद्यार्थियों को अपने परिवेश में अन्य प्राणियों को करुणा की दृष्टि से देखने और व्यवहार करने के लिए प्रेरित करेंगी। पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित 'न्याय की कुर्सी' तथा 'तीन मछलियाँ' कहानियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ व्यक्तित्व में विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों की प्रेरणा देती हैं। हमारे देश में *पंचतंत्र*, *जातक कथाएँ*, *हितोपदेश*, *सिंहासन बत्तीसी* की कहानियाँ ज्ञानवर्धक, लोकप्रिय होने के साथ-साथ मूल्यों के संवर्धन के लिए उपयुक्त मानी जाती रही हैं।

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता तथा वैज्ञानिक प्रगति आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। अतः पुस्तक में इन विशेषताओं को उद्घाटित करने वाले विभिन्न साहित्यिक विधा वाले पाठ लिए गए हैं। 'साङकेन' (निबंध), 'हमारे ये कलामंदिर' (निबंध), 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' (पत्र), 'गंगा की कहानी' (आत्मकथात्मक निबंध) और 'गगनयान' (विज्ञानकथा संवाद) पाठ विद्यार्थियों में भारतीय भौगोलिक परिवेश और वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति को जानने एवं भारतीयता को आत्मसात करने में सहायक होंगे।

बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी दिनचर्या में आनंद और हास्य सहजता से शामिल होते हैं। 'चाँद का कुरता' (कविता), 'चतुर चित्रकार' (कविता), 'पेड़ का जादू' (लघुकथा), 'दो मेंढकों की यात्रा' (जापानी लोककथा) तथा 'मेरा बचपन' (संस्मरण) रचनाएँ विद्यार्थियों को हँसाने-गुदगुदाने का माध्यम बनेंगी और उन्हें खेल-भावना के लिए भी उत्प्रेरित करेंगी।

सारांशतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पुस्तक, विद्यार्थियों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, वैज्ञानिक एवं तार्किक चिंतन विकसित करने, रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता को पोषित करने जैसी प्रवृत्तियों को पुष्पित-पल्लवित करने का अवसर प्रदान करेगी। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में हमारी परंपरा और संस्कृति से 'गगनयान' तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मौखिक भाषा का विकास और लिखना

पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से अभ्यास निर्मित किए गए हैं। हर पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी भाग ले सकता है और अपना अनुभव साझा कर सकता है। उदाहरण के लिए 'किरन' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है — "आपको कैसे पता चलता है कि सुबह हो गई है?" एक अन्य उदाहरण 'चाँद का कुरता' कविता से है — "जब आप अपने अभिभावक के साथ कपड़े खरीदने जाते हैं, तब किन बातों का ध्यान रखते हैं?" इस प्रकार के प्रश्न प्रत्येक विद्यार्थी के लिए हैं। ऐसे प्रश्न सभी विद्यार्थियों को अपने-अपने अनुभवों के आधार पर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं। मातृभाषा एवं

© NCERT not to be republished

बहुभाषिकता की भावना को पोषित करने की दृष्टि से भी ये प्रश्न उपयुक्त हैं। मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम, विद्यार्थियों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है।

पाठों के अभ्यास में विद्यार्थियों के लिए छोटे-छोटे वाक्य-निर्माण की गतिविधियाँ भी दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। विद्यार्थी सरलता और आनंद के साथ इन अभ्यासों को करें। उदाहरण के लिए, 'हमारे ये कलामंदिर' पाठ में विद्यार्थियों को धन्यवाद कार्ड लिखने की तथा 'न्याय' नाटक में सपने में सिद्धार्थ और हंस की बातचीत की रुचिकर गतिविधियाँ दी गई हैं। अतः पाठ्यपुस्तक में, बोलने से लिखित भाषा की ओर विद्यार्थियों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पना विशेष स्थान रखती है। विद्यार्थी इस उम्र में कल्पना करने में पर्याप्त सक्रिय होते हैं। वे अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ न कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिससे विद्यार्थियों की कल्पना की दुनिया में विस्तार हो। ऐसे प्रश्न विद्यार्थियों पर सही अथवा गलत उत्तर का दबाव नहीं डालते। उदाहरण के लिए, 'न्याय की कुर्सी' पाठ के अभ्यास में एक प्रश्न है — "आपमें कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे आप कहानी के सिंहासन पर बैठ सकें?" इसी प्रकार 'चतुर चित्रकार' कविता में प्रश्न दिया गया है — "कल्पना कीजिए कि चित्रकार ने जंगल में एक चित्रकला विद्यालय खोला है। आप इस विद्यालय का कोई नाम सुझाइए और इसके बारे में कुछ वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।"

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्तियों में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए संबंधित गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' पत्र के अभ्यास के एक प्रश्न में विद्यार्थियों को पक्षी अभयारण्य, उसकी स्थापना की आवश्यकता के कारण तथा भारत के प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्यों के बारे में खोजबीन करने और पुस्तकालय की सहायता लेने वाली गतिविधियाँ रखी गई हैं। इसी पाठ के एक अन्य अभ्यास में भारत के मानचित्र में विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों को दर्शाकर प्रश्न पूछे गए हैं। विद्यार्थी इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इन स्थानों के बारे में पढ़ेंगे और जानेंगे। इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों में खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाएँगे।

रचनात्मकता, मन की बात करने तथा रचने और लिखने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में सृजनात्मकता और विद्यार्थी के बीच के संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु ऐसी बहुत-सी गतिविधियाँ दी गई हैं जो रोचक हैं। उदाहरण के लिए 'न्याय' नाटक के अभ्यास में कागज का पक्षी बनाने की गतिविधि दी गई है। 'साङकेन' पाठ में पत्तियों द्वारा अपने मनपसंद प्राणी की आकृति तथा 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' पाठ के अभ्यास में बादलों में पशुओं की आकृतियाँ बनाने की गतिविधियाँ दी

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

गई हैं। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता को उभारने का कार्य करेंगी। विद्यार्थियों का पुस्तक से जुड़ाव स्थापित करने में ये रचनात्मक गतिविधियाँ सहायक सिद्ध होंगी। इस पुस्तक में रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी स्थान रखा गया है। 'खट्टे हैं अंगूर' शीर्षक के माध्यम से चित्र आधारित अभिव्यक्ति रखी गई है। पुस्तक का समापन भी चित्र आधारित अभिव्यक्ति के माध्यम द्वारा किया गया है।

परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं। उदाहरण के लिए 'चाँद का कुरता' कविता में 'सोचिए, समझिए और बताइए' शीर्षक में दिया गया प्रश्न है — "मान लीजिए चाँद का एक मित्र है जो देख नहीं सकता। चाँद उसे अपने बदलते हुए आकार के बारे में कैसे समझाएगा?" इसी प्रकार के अन्य संवेदनशील प्रश्न भी पाठों में हैं। महिलाओं और पुरुषों की सार्थक और संतुलित भागीदारी से समाज और राष्ट्र निर्मित होता है। अतः पाठ्यपुस्तक में जेंडर संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक में भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ-साथ उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से समेकन भी किया गया है।

बहुभाषिकता और कक्षा-शिक्षण

बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है। विशेष रूप से छोटे विद्यार्थियों के लिए जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में ऐसी गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिसमें विद्यार्थी हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ेंगे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है — कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा बहुभाषिक शिक्षण पद्धति का उपयोग करना। अतः शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठों को पढ़ाते हुए विद्यार्थियों को अपनी भाषा, परिवेश और संस्कृति से जोड़ते हुए शिक्षण कार्य करें। सहायता के लिए स्थान-स्थान पर शिक्षण-संकेतों की भी व्यवस्था की गई है।

अंत में यह कि पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार है, एकमात्र साधन नहीं। एक रचनात्मक एवं प्रतिबद्ध शिक्षक को निरंतर नवीन पाठ्यसामग्रियों का सहारा लेना ही पड़ता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शिक्षकों को अपने-अपने विद्यार्थियों का स्तर देखते हुए स्वयं ही तय करना पड़ता है कि

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

उन्हें किस प्रकार की गतिविधियाँ और पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराई जाए। उद्देश्य तो अंततः अपेक्षित भाषायी कौशलों एवं दक्षताओं का विकास ही है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का निर्धारित उद्देश्यों और निर्देशों के अनुसार रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी होगा और विद्यार्थी आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

नीलकंठ कुमार
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
भाषा शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विज़िटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी. गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.आई.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर,* योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

चमन लाल गुप्त, *प्रोफेसर* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश (**अध्यक्ष**)

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटोर *अध्यापक* (हिंदी), आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

कविता बिष्ट, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प., परिसर, नई दिल्ली

निशा जैन, *प्रवक्ता* (हिंदी), राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शकरपुर, दिल्ली

वंदना शर्मा, *सहायक प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* (हिंदी), आरोही आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग, कैथल, हरियाणा

शारदा कुमारी, *प्रधानाचर्या* (सेवानिवृत्त), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नई दिल्ली

सय्यद मतीन अहमद, *प्रोफेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, तेलंगाना

साकेत बहुगुणा, *सहायक प्रोफेसर*, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली एवं मानद सदस्य, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार

नीलकंठ कुमार, *सहायक प्रोफेसर* (हिंदी), भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य समन्वयक**)

समीक्षक

गोविंद प्रसाद शर्मा, *पूर्व अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली एवं *सदस्य,* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति (एन.ओ.सी.)

मीरा भार्गव, *प्रोफेसर* एमेरिटस, हॉफ्स्ट्रा विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)
(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)
द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति (एन.ओ.सी.) के अध्यक्ष एवं सदस्यों के प्रति इस पाठ्यपुस्तक में एन.सी.एफ.एस.ई. के परिप्रेक्ष्यों के समावेशन हेतु मार्गदर्शन एवं योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.) के अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष एवं सदस्यों के प्रति उनके निरंतर मार्गदर्शन और पाठ्यपुस्तक की गहन समीक्षा के लिए आभारी है। परिषद्, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) के हिंदी उपसमूह तथा अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों का भी उनके अंतरानुशासनात्मक मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, अमरेंद्र प्रसाद बेहेरा, *प्रोफेसर*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग; सुनीता फारक्या, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; सुनीति सनवाल, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; मिली रॉय, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; ज्योत्स्ना तिवारी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही उनके पूरे समूह का एवं यदुनाथ देशपांडे, वरिष्ठ परामर्शदाता, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी. का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के निर्बाध समेकन और अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों से उनके संबंध को सुनिश्चित करने के सूक्ष्म प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद् सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। परिषद्, रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निरंकार देव 'सेवक' (किरन); विनोद कुमार शुक्ल (पेड़ का जादू, इकतारा ट्रस्ट प्रकाशन); लीलावती भागवत (न्याय की कुर्सी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली); जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् (मध्यप्रदेश की जनपदीय पहेलियाँ);

© NCERT not to be republished

रामधारी सिंह 'दिनकर' (चाँद का कुरता); अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (जागो प्यारे); भवानी प्रसाद मिश्र, (होली आई, होली आई); जैनेंद्र कुमार (सुंदरिया); रामनरेश त्रिपाठी (चतुर चित्रकार); श्याम दुआ सं. (दो मेंढकों की यात्रा, टिनी टॉट पब्लिकेशंस); प्रेमचंद (मेरा बचपन, रत्न सागर प्रकाशन); अरूप कुमार दत्ता (काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा, रत्न सागर प्रकाशन); प्रदीप कुमार जैन (घूमो-देखो); विष्णु प्रभाकर (न्याय); महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद् (दिमाग चलाओ, बाल भारती, हिंदी 5); एकलव्य प्रकाशन (तुम भी बनाओ कबूतर, *चकमक* पत्रिका); मालती देवी (तीन मछलियाँ); नीलकंठ कुमार, ज्योति एवं रश्मि (गगनयान) के प्रति आभारी है।

परिषद्, विविध कार्यशालाओं हेतु प्रशासनिक सहयोग के लिए सुशीला जरोदिया, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग के प्रति आभारी है। साथ ही परिषद्, एस.वी. शर्मा *प्रधानाचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर के प्रति उनके सार्थक सहयोग तथा रामनिवास, *एसोसिएट प्रोफेसर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर द्वारा स्थानीय अकादमिक एवं प्रशासनिक सहयोग हेतु आभार व्यक्त करती है। अकादमिक सहयोग हेतु परिषद् यास्मीन अशरफ़, *सहायक प्रोफेसर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, सुधा मिश्रा, *परामर्शदाता* एवं *साक्षरता विशेषज्ञ*, पी.एम.यू, राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, टीना कुमारी, *सहायक प्रोफेसर*, दिल्ली विश्वविद्यालय (मुक्त शिक्षा), मोनू सिंह गुर्जर, *सहायक प्रोफेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, ज्योति, *वरिष्ठ शोध सहायक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रश्मि रानी, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं संदीप कुमार, *प्रूफ रीडर* (हिंदी, संविदा) का इस पाठ्यपुस्तक में विशेष अकादमिक योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद्, हिंदी प्रकोष्ठ, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के प्रति भी प्रशासनिक एवं अकादमिक सहयोग हेतु आभार प्रकट करती है।

परिषद्, विशेष रूप से अचिन जैन (ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि., नई दिल्ली) का आभार प्रकट करती है जिनके अथक परिश्रम से यह पाठ्यपुस्तक इस रूप में आ सकी है।

परिषद्, इस पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग के अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); अंजू शर्मा, *संपादन सहायक*; तथा पवन कुमार बरियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ, मोहन सिंह, विवेक मंडल एवं अनिता कुमारी, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

संभव है कि आभार व्यक्त करने में किसी व्यक्ति अथवा प्रकाशन का नाम सम्मिलित न हो पाया हो। भविष्य में सुधार के लिए हमें उनकी ओर से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है?

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तक के विषय में *v*

1. किरन 1

   पेड़ का जादू 7

2. न्याय की कुर्सी 8

3. चाँद का कुरता 22

   जागो प्यारे 32

© NCERT not to be republished

4.	साङ्केन	33
	होली आई, होली आई	44
5.	सुंदरिया	46
	हाथी और चींटी	59
6.	चतुर चित्रकार	61
	दो मेंढकों की यात्रा	72

7.	मेरा बचपन	75
8.	काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा	85
	घूमो-देखो	97
9.	न्याय	99

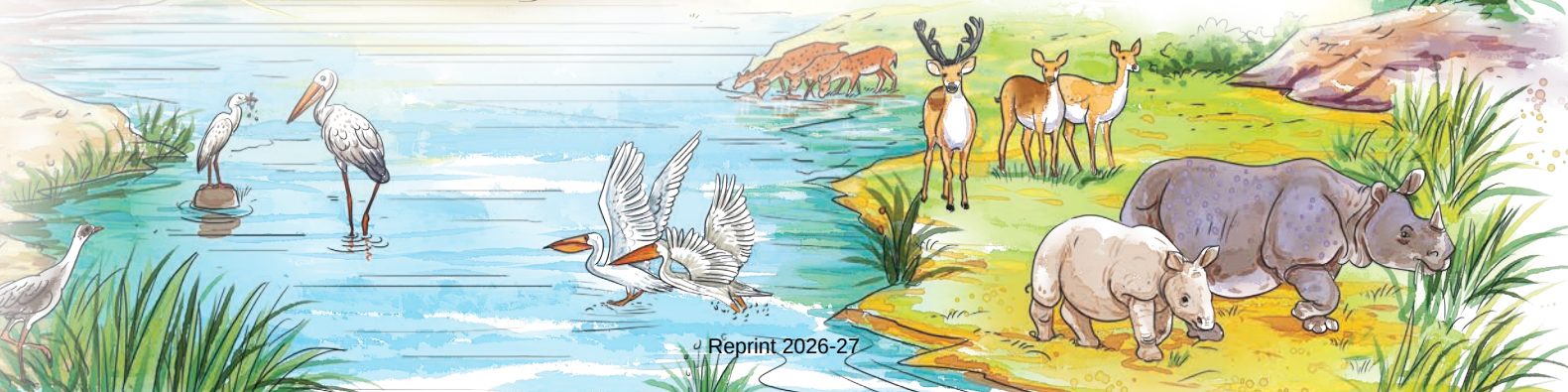

© NCERT not to be republished

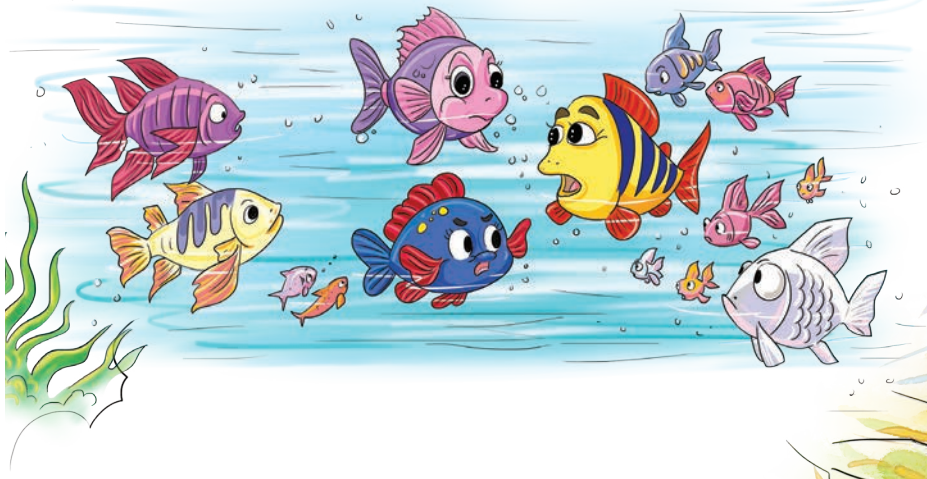

10.	तीन मछलियाँ	117
11.	हमारे ये कलामंदिर	129
12.	गंगा की कहानी	143
	गगनयान	153

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

1

किरन

0531CH01

अरी किरन तू उठकर इतनी
जल्दी आज चली आई।
मैं तो बिस्तर में से अपने
अब तक निकल नहीं पाई।

कल तो तेरे साथ शाम तक
खेल बहुत से खेली मैं।
पर जब तू चल दी सोने को
तो रह गई अकेली मैं।

तू सुख से सोई होगी पर
मुझको नींद नहीं आई।
परी कथाएँ पढ़ते-पढ़ते
बड़ी देर में सो पाई।

कहने लगी किरन यह सुनकर
मैं ही कब सो पाती हूँ।
तुम्हें सुलाकर एक दूसरी
दुनिया में मैं जाती हूँ।

बच्चे जो बिस्तर में सोए
होते, उन्हें जगाती हूँ।
वहाँ शाम हो जाती है तो
लौट यहाँ फिर आती हूँ।

– निरंकार देव 'सेवक'

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आपको कैसे पता चलता है कि सुबह हो गई है?
2. ऐसे कौन-कौन से कार्य हैं जो सूर्य के प्रकाश के बिना संभव नहीं हैं?
3. सुबह और शाम में से आपको कौन-सा समय अधिक अच्छा लगता है और क्यों?

पाठ से

सही उत्तर पर सूरज का चित्र (☼) बनाइए—

1. किरन के अनुसार वह मुख्य रूप से कौन-सा काम करती है?

   (क) सोते बच्चों को जगाना

   (ख) खेलते बच्चों को सुलाना

   (ग) बच्चों के साथ खेलना

   (घ) परी कथाएँ पढ़ना-पढ़ाना

2. बालिका को बहुत देर तक नींद क्यों नहीं आई?

   (क) क्योंकि वह देर रात तक खेल रही थी।

   (ख) क्योंकि वह पढ़ रही थी।

   (ग) क्योंकि उसे बहुत गरमी लग रही थी।

   (घ) क्योंकि वह घूमने गई थी।

3. जब किरन आई, उस समय बालिका क्या कर रही थी?

   (क) वह सो रही थी।

   (ख) वह खेल रही थी।

   (ग) वह गीत गा रही थी।

   (घ) वह पढ़ और लिख रही थी।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

सोचिए और लिखिए

1. किरन ने दूसरी दुनिया में जाने की बात क्यों कही होगी?
2. "वहाँ शाम हो जाती है तो
   लौट यहाँ फिर आती हूँ।"

   उपर्युक्त पंक्तियों में 'वहाँ' और 'यहाँ' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुए हैं?
3. प्रकृति हमें प्रकाश, फल, फूल, लकड़ी, वायु, पानी और बहुत कुछ देती है। हम प्रकृति के लिए क्या-क्या कर सकते हैं? सोचिए और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।
4. कविता की किन पंक्तियों से पता चलता है कि किरन बालिका के साथ दिन भर रहती है? उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए।

समझ और अनुभव

1. "कहने लगी किरन यह सुनकर
   मैं ही कब सो पाती हूँ।
   तुम्हें सुलाकर एक दूसरी
   दुनिया में मैं जाती हूँ।"

   किरन कितना परिश्रम करती है, यहाँ से वहाँ नियत समय पर प्रतिदिन आती-जाती है। आपको अपने आस-पास कौन-कौन परिश्रम करते दिखाई देते हैं?
2. वे कौन-कौन से लोग हैं जो किरन की भाँति आपको जगाते हैं, आपके साथ खेलते हैं और प्रोत्साहित करते हैं? उनके लिए आप क्या-क्या करते हैं, यह भी लिखिए।
3. आपके घर या प्रदेश में सूर्य अथवा चाँद से जुड़े किसी एक त्योहार का पता लगाइए और उसके बारे में लिखिए।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

अनुमान और कल्पना

1. यदि किरन कभी न आए या न जाए तो क्या होगा?
2. यदि आपको किरन के साथ दूसरी दुनिया में जाने का अवसर मिले तो आप कहाँ जाना चाहेंगे और क्यों?

भाषा की बात

1. "कल तो तेरे साथ शाम तक
खेल बहुत से खेली मैं।"

'शाम' के लिए हम संध्या, साँझ, सायं जैसे शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। मिलते-जुलते या समान अर्थ वाले ऐसे शब्दों को समानार्थी शब्द कहते हैं।

नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्दों पर घेरा बनाइए—

- नभ — आकाश, अंबर, नभचर
- हवा — वायु, व्योम, पवन
- पेड़ — विशाल, वृक्ष, तरु
- फूल — कुसुम, सरिता, सुमन
- दुनिया — भूमि, संसार, विश्व

2. दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों से कीजिए—

(क) मैं आज यह परी-कथा पढ़ूँगा, ... आप पढ़ लेना।

(ख) मैं जब तक खेलने के लिए आई तब तक हरिका चली ..... थी।

(ग) वह ..... आया और शाम को चला गया।

(घ) मेरे जागने और ..... का समय निश्चित है।

© NCERT not to be republished

3. "चिड़ियाँ गाती गीत चलीं
हवा चली, खिल उठे पेड़ सब।"

इन पंक्तियों को सामान्य बातचीत के रूप में लिखा जाए तो ऐसे लिखेंगे—

"चिड़ियाँ गीत गाती हुई उड़ रही थीं, हवा चलने लगी, हवा के चलने से पेड़-पौधों की पत्तियाँ भी हिलने लगीं जैसे कि वे प्रसन्नता से झूम रही हों।"

आप भी सामान्य ढंग से कही गई बात को कविता का रूप दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, इन पंक्तियों को पढ़िए—

"चंद्रमा चमक रहा है, तारे भी चमक रहे हैं, आकाश में प्रकाश ही प्रकाश हो गया है।"

आइए, इन पंक्तियों को कविता का रूप देने का प्रयास करते हैं—

"चंदा चमका तारे चमके
चमका सारा अंबर"

आप भी सामान्य रूप से कही गई किसी बात को कविता के रूप में लिखने का प्रयास कीजिए।

आपकी बातचीत

कविता में बालिका, किरन से बात कर रही है। यदि आपको भी नीचे दिए गए विकल्पों में से किसी से बात करने का अवसर मिले तो आप किससे बात करना चाहेंगे? अपने चुने गए विकल्प के सामने सही का चिह्न (✓) लगाइए—

वृक्ष ◯	पानी ◯	चाँद ◯	पत्ता ◯
हवा ◯	मिट्टी ◯	तितली ◯	बादल ◯

- अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि आप इनसे क्या बातचीत करेंगे?
- अपने सहपाठियों की सहायता से इस बातचीत का अभिनय भी कीजिए।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

इसे भी जानिए

हमारी धरती गेंद की तरह गोल है। वह अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती रहती है। सूर्य निरंतर प्रकाशित रहता है। पृथ्वी का जो भाग सूर्य की ओर आ जाता है, वहाँ दिन हो जाता है। चित्र में यदि बत्ती को सूर्य मान लें और गोलक को पृथ्वी तो प्रकाश गोलक के जिस भाग पर पड़ रहा है, वहाँ दिन है और दूसरे अँधेरे भाग में रात है।

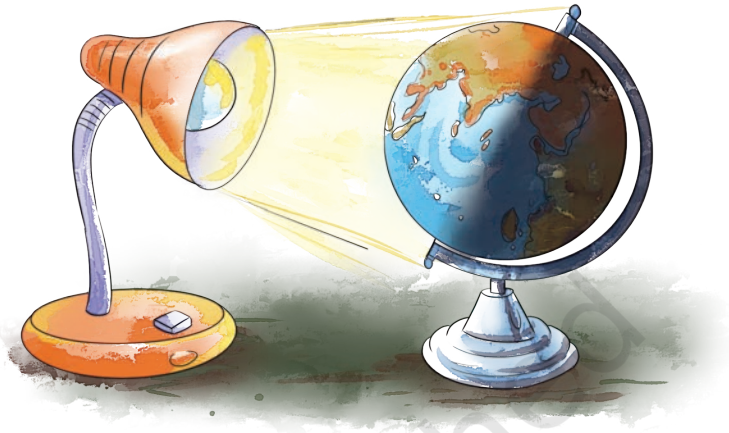

अधिक जानने के लिए आप निम्न वीडियो लिंक पर भी जा सकते हैं—

https://www.youtube.com/watch?v=NoCXddI2sg8&t=1s

स्रोत – वीडियो — रात और दिन, एन.सी.ई.आर.टी. ऑफिसियल यूट्यूब चैनल

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

आपको ज्ञात ही होगा कि सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री हैं। शिक्षकों एवं अभिभावकों की सहायता से आप सुनीता विलियम्स के बारे में पुस्तकालय एवं अन्य स्रोतों से जानकारी एकत्रित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पेड़ का जादू

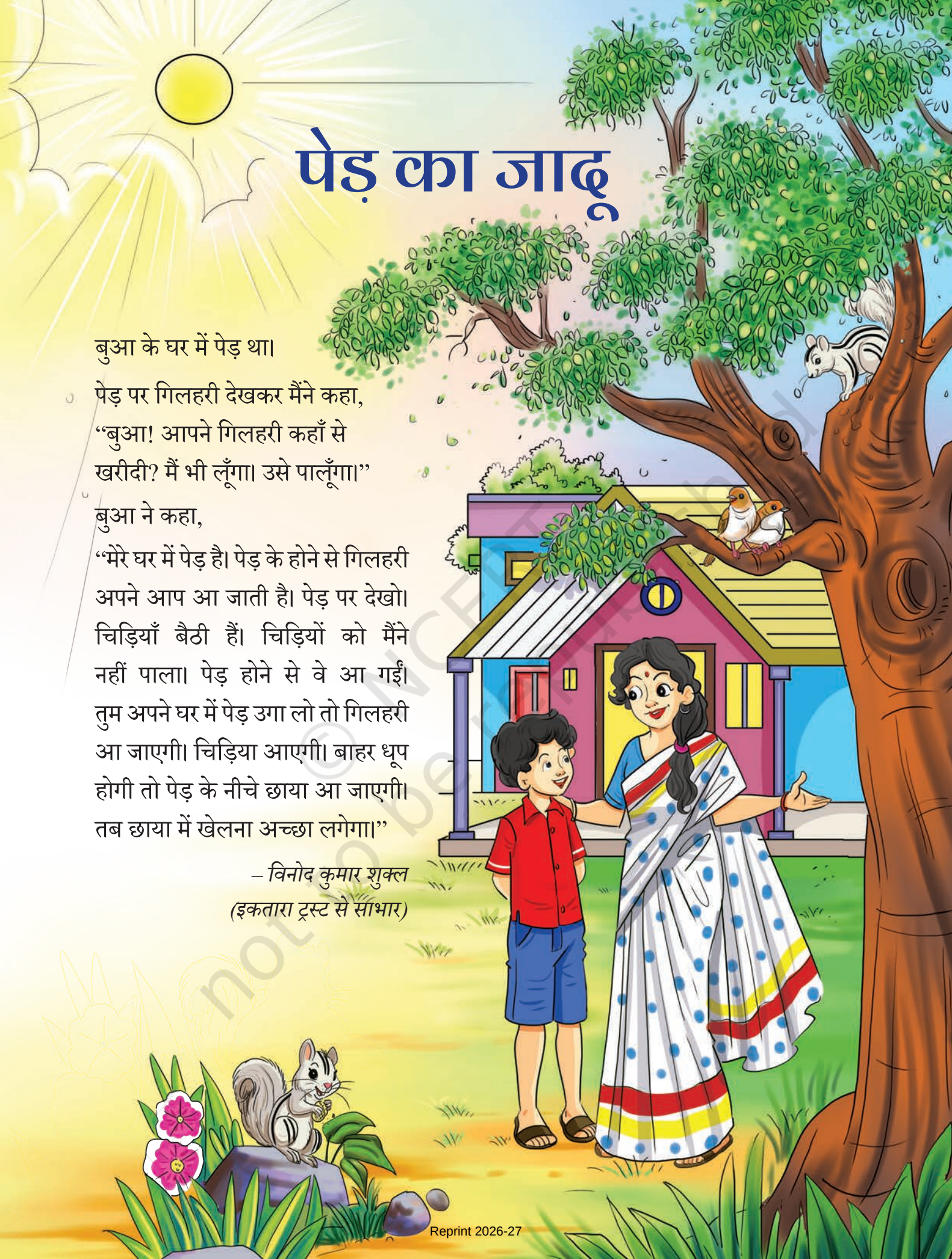

बुआ के घर में पेड़ था।

पेड़ पर गिलहरी देखकर मैंने कहा,
"बुआ! आपने गिलहरी कहाँ से खरीदी? मैं भी लूँगा। उसे पालूँगा।"

बुआ ने कहा,
"मेरे घर में पेड़ है। पेड़ के होने से गिलहरी अपने आप आ जाती है। पेड़ पर देखो। चिड़ियाँ बैठी हैं। चिड़ियों को मैंने नहीं पाला। पेड़ होने से वे आ गईं। तुम अपने घर में पेड़ उगा लो तो गिलहरी आ जाएगी। चिड़िया आएगी। बाहर धूप होगी तो पेड़ के नीचे छाया आ जाएगी। तब छाया में खेलना अच्छा लगेगा।"

– विनोद कुमार शुक्ल
(इकतारा ट्रस्ट से साभार)

© NCERT not to be republished

2 न्याय की कुर्सी

0531CH02

उज्जैन की प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी के बाहर एक लंबा-चौड़ा मैदान था। यहाँ-वहाँ टीले थे। एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था। एक लड़का कूदता-भागता एक टीले पर चढ़ गया। अचानक वह ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसने इधर-उधर देखा कि किस चीज से ठोकर लगी है। उसको एक बड़े चिकने पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखा। वह उठकर गया और अपने मित्रों को बुलाकर वह शिला दिखाई। फिर शान से उस पर बैठकर बोला, "यह सिंहासन है मेरा। मैं राजा हूँ और तुम सब मेरे दरबारी। तुम अपनी-अपनी फरियाद लेकर आओ। फिर मैं उनका फैसला करूँगा।"

दूसरे लड़कों को यह खेल पसंद आया। वे एक-एक करके आते और कोई काल्पनिक फरियाद सुनाते। फिर गवाह बुलाए जाते। उनकी गवाही ली जाती। उसके बाद राजा बना हुआ लड़का उनसे सवाल करता और अपना फैसला सुनाता।

इस खेल में उनको इतना आनंद आया कि वे रोज ही यह खेल खेलने लगे। शिकायतें सुनी जातीं, अपराधी पेश किए जाते, बयान लिए जाते, फिर शिला पर बैठा हुआ लड़का अपना फैसला सुनाता।

© NCERT not to be republished

बात इधर-उधर फैलने लगी। लोग लड़के की न्याय-बुद्धि की चर्चा करने लगे और कहने लगे कि अवश्य ही उस लड़के में कोई दैवी शक्ति है।

एक दिन दो किसानों के बीच जमीन को लेकर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मामला गंभीर था। टीलेवाले लड़के की इतनी चर्चा थी कि वे राजा के दरबार में जाने के बजाय उसी के पास गए और उसको अपने झगड़े के बारे में बताया। लड़के ने बड़ी गंभीरता से दोनों किसानों के बयान सुने। उसके बाद उसने जो फैसला दिया, उसे सुनकर वे दंग रह गए।

उस दिन के बाद से तो नगर के सभी लोग अपनी फरियाद लेकर यहीं आने लगे। राजा के दरबार में कोई न जाता। और ऐसा कभी नहीं हुआ कि लड़के के फैसले से उन्हें संतोष न हुआ हो।

धीरे-धीरे यह बात राजा के कानों तक पहुँची। उसको बहुत क्रोध आया। उसने गरजकर कहा, "उस छोकरे की यह मजाल कि अपने को मुझसे अच्छा न्यायकर्ता समझे? मैं इन किस्सों में विश्वास नहीं करता। मैं खुद जाकर देखूँगा।"

Reprint 2026-27

ऐसा कहकर राजा अपने लाव-लश्कर के साथ उस मैदान में पहुँचा जहाँ लड़के अपना प्रिय खेल खेल रहे थे। बड़ी देर तक राजा उनका खेल देखता रहा। वह स्तंभित रह गया। उसने अपने मंत्री से कहा, "लड़का सचमुच बहुत बुद्धिमान है। इतनी छोटी उम्र में इतनी बुद्धि का होना आश्चर्य की बात है। इसकी न्याय-बुद्धि के आगे तो बड़े-बड़ों को लोहा मानना पड़ेगा।"

उसी समय किसी ने राजा को बताया, "लेकिन महाराज, यह तो रोज वाला लड़का नहीं है। वह बीमार हो गया है, इस कारण कोई नया ही लड़का टीले पर बैठा है।"

"यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा।"

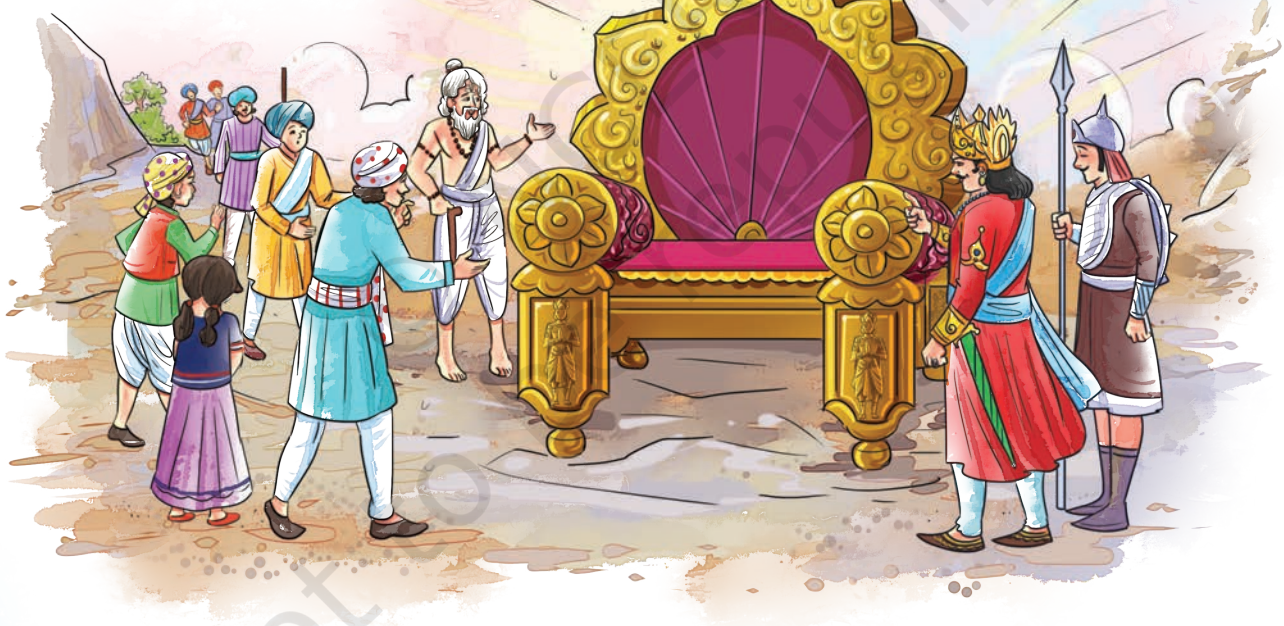

राजा का इशारा पाते ही उस स्थान को खोदकर पत्थर को बाहर निकाला गया। राजा ने देखा कि वह पत्थर नहीं, बहुत ही सुंदर सिंहासन था। उस पर बहुत बारीक और खूबसूरत मूर्तियाँ खुदी हुई थीं। उसके चारों पायों पर चार देवदूतों की मूर्तियाँ बनी हुई थीं। चारों ओर खबर फैल गई। बात ही बात में वहाँ अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई। विद्वान पंडितों

Reprint 2026-27

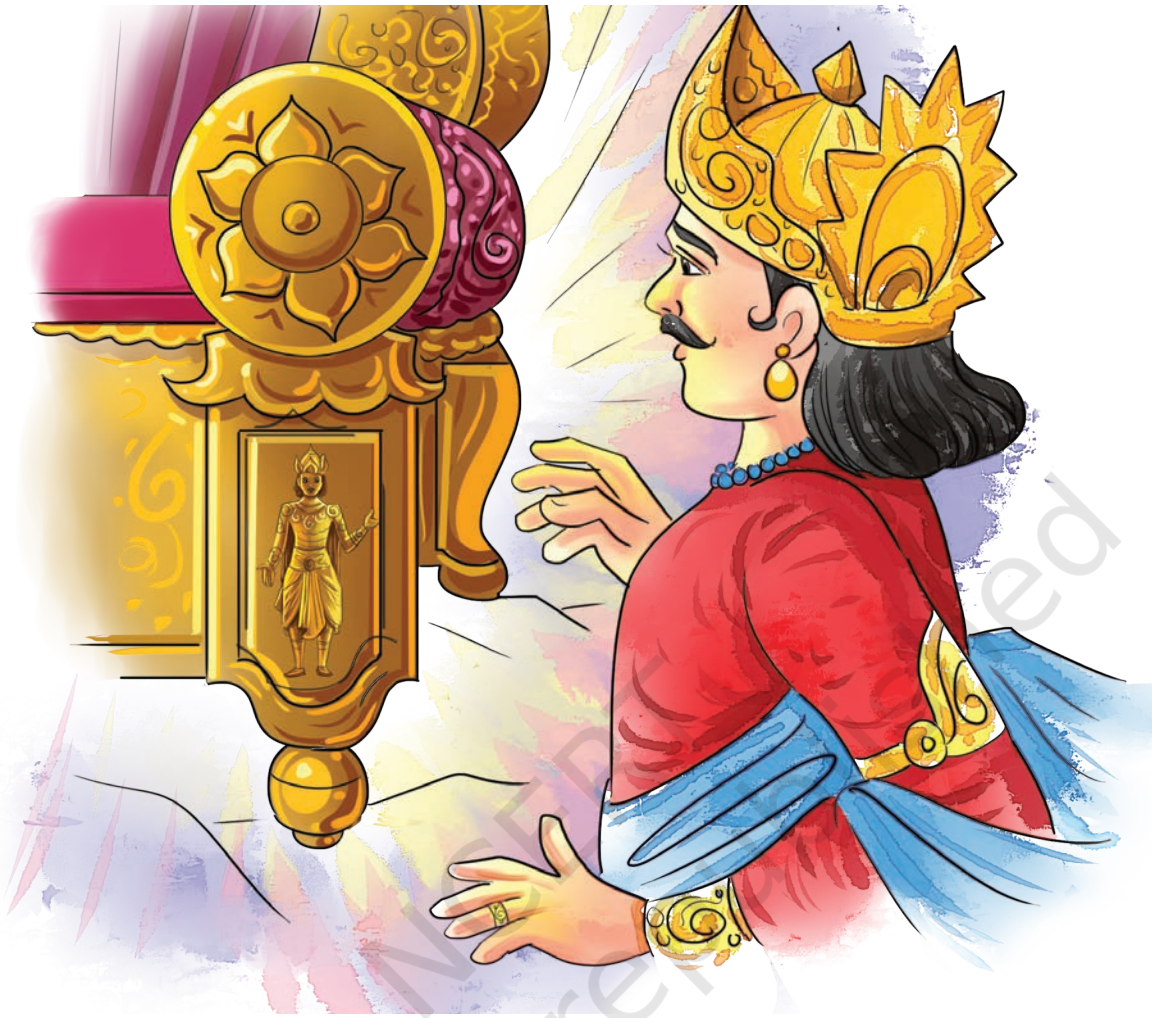

ने बताया कि वह कोई ऐसा-वैसा सिंहासन नहीं था — सदियों पुराना, राजा विक्रमादित्य का सिंहासन था। राजा विक्रमादित्य अपने न्याय और विवेक के लिए बहुत प्रसिद्ध थे।

राजा ने आज्ञा दी कि सिंहासन को ले जाकर राजदरबार में रख दिया जाए। उसने कहा, "मैं इस पर बैठकर अपनी प्रजा की फरियाद सुनूँगा और उनका फैसला करूँगा।" अगले दिन राजा दरबार में आया और सीधे उस सिंहासन की ओर बढ़ा। वह उस पर बैठने ही वाला था कि किसी की आवाज सुनाई दी, "ठहरो!"

राजा ने रुककर चारों ओर देखा। कोई नजर नहीं आया। वह फिर सिंहासन की ओर बढ़ा। फिर इसी प्रकार आवाज आई, "ठहरो!" इस बार राजा ने आश्चर्य से देखा कि सिंहासन के एक पाये पर बनी मूर्ति बोल रही है।

Reprint 2026-27

मूर्ति ने कहा, "क्या तुम इस सिंहासन पर बैठने योग्य हो? क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुमने कभी चोरी नहीं की है?"

राजा ने लज्जा से सर झुका लिया। "यह सच है कि हाल में ही मैंने अपने एक दरबारी की जमीन पर कब्जा कर लिया था क्योंकि मैं उससे नाराज हो गया था।"

"तब तो तुम इसके योग्य नहीं हो", मूर्ति ने कहा। "तुमको तीन दिन तक प्रायश्चित करना होगा।" यह कहकर मूर्ति अपने पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

राजा ने तीन दिन तक उपवास किया और प्रार्थना की। चौथे दिन वह फिर दरबार में आया। ज्यों ही सिंहासन पर बैठने लगा, दूसरी मूर्ति ने कहा, "ठहरो! तुम विश्वास के साथ कह सकते हो कि तुमने कभी झूठ नहीं बोला?"

राजा सकपकाया। झूठ तो उसने किसी न किसी मुसीबत से बचने के लिए कई बार बोला था। राजा पीछे हट गया। दूसरी मूर्ति भी पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

राजा ने तीन दिन तक फिर उपवास और पूजा-पाठ किया। तीसरी बार वह फिर सिंहासन पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। हिचकिचाते हुए वह आगे बढ़ा। वह बैठने ही वाला था कि तीसरी मूर्ति ने पूछा, "बैठने के पहले यह बताओ कि क्या तुमने कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाई है?"

राजा पीछे हट गया। तीसरी मूर्ति भी अपने पंख फैलाकर उड़ गई। फिर तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करने के बाद राजा सिंहासन की ओर बढ़ा। उसके पैर लड़खड़ा गए। चौथी मूर्ति ने कहा, "ठहरो! जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे, वे भोले-भाले थे। उनके मन में कलुष नहीं था। अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो।"

राजा बड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने मन ही मन कहा, "अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ। मैं राजा हूँ। मुझसे ज्यादा धनवान, बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा? मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ।"

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

यह कहकर राजा सिंहासन की ओर दृढ़ कदमों से बढ़ा। लेकिन उसी समय चौथी मूर्ति पंख फैलाकर सिंहासन समेत आकाश में उड़ गई।

– लीलावती भागवत

(राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित 'स्वर्ग की सैर तथा अन्य कहानियाँ' पुस्तक से साभार)

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आपका प्रिय खेल कौन-सा है? आप उसे कैसे खेलते हैं?
2. क्या आपने कभी किसी समस्या का समाधान किया है? अपना अनुभव साझा कीजिए।
3. यदि आप राजा के स्थान पर होते और आपको लड़के के बारे में पता चलता तो आप क्या करते?
4. लड़के के अंदर ऐसे कौन-कौन से गुण होंगे जिनके कारण वह सिंहासन पर बैठ पा रहा था?

पाठ से

नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के आगे तारे का चिह्न (★) बनाइए। एक से अधिक विकल्प भी सही हो सकते हैं—

1. राजा को लड़के द्वारा न्याय करने के विषय में कैसे पता चला?

   (क) लड़के द्वारा की गई शरारतों को सुनकर

   (ख) लोगों द्वारा लड़के के न्याय की प्रशंसा सुनकर

   (ग) लड़के द्वारा अपने न्याय की बुराई सुनकर

   (घ) मंत्रियों द्वारा लड़के की बुद्धि की प्रशंसा सुनकर

2. राजा को सबसे अधिक आश्चर्य किस बात से हुआ?

   (क) बच्चे खेल-खेल में न्याय कर रहे थे।

   (ख) लोग राजा के दरबार में नहीं आ रहे थे।

   (ग) सिंहासन पर बैठने वाला लड़का सही न्याय करता था।

   (घ) स्वयं सिंहासन में ही कोई चमत्कारी शक्ति विद्यमान थी।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

3. लड़कों को यह खेल इतना अच्छा क्यों लगा कि वे प्रतिदिन इसे खेलने लगे?

(क) क्योंकि वे राजा जैसा बनने का आनंद ले रहे थे।

(ख) क्योंकि यह अन्य खेलों से अधिक मनोरंजक था।

(ग) क्योंकि उन्हें न्याय करने का अनुभव अच्छा लगा।

(घ) क्योंकि इस खेल से वे नगर भर में प्रसिद्ध हो गए थे।

4. राजा ने उपवास और प्रायश्चित क्यों किया?

(क) ताकि वह सिंहासन पर बैठने के योग्य बन सके।

(ख) क्योंकि उसे अपने कर्मों पर पछतावा था।

(ग) क्योंकि मूर्तियों ने उसे ऐसा करने के लिए कहा था।

(घ) क्योंकि जनता ने उसे ऐसा करने को कहा था।

सोचिए और लिखिए

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

1. सभी लड़के सिंहासन पर बैठ पा रहे थे लेकिन राजा नहीं बैठ पाया। ऐसा क्यों?
2. क्या राजा को प्रायश्चित करने के बाद सिंहासन पर बैठने का अधिकार मिलना चाहिए था? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।
3. दोनों किसानों ने अपने झगड़े के निपटारे के लिए राजा के दरबार में जाने के बजाय लड़के के पास जाने का फैसला क्यों किया?
4. चौथी मूर्ति सिंहासन के साथ आकाश में क्यों उड़ गई?
5. इस कहानी को एक नया शीर्षक दीजिए और बताइए कि आपने यह शीर्षक क्यों चुना?

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

अनुमान और कल्पना

1. कहानी में सिंहासन की मूर्तियाँ उड़कर किसी और जगह चली जाती हैं। वे कहाँ जाती होंगी और वहाँ क्या करती होंगी?
2. यदि इस कहानी के अंत में राजा सिंहासन पर बैठने में सफल हो जाता तो क्या होता?

भाषा की बात

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

यह तो और भी आश्चर्य की बात है हो न हो पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है मैं इसकी जाँच करूँगा

ऊपर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। आपको इसका अर्थ समझने में कुछ कठिनाई हो रही है न? अब इसी वाक्य को एक बार फिर पढ़िए—

"यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा।"

अब आपको इन वाक्यों का अर्थ और भाव ठीक-ठीक समझ में आ रहा होगा। इसका कारण है कुछ विशेष चिह्न, जैसे– " " , । !

इस प्रकार के चिह्नों को 'विराम चिह्न' कहते हैं। विराम चिह्नों से पता चलता है कि लिखे हुए वाक्यों में कहाँ ठहराव है और उनका क्या भाव है।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए—

(क) चौथी मूर्ति ने कहा ठहरो जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे वे भोले भाले थे उनके मन में कलुष नहीं था अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो

(ख) राजा बड़ी देर तक सोचता रहा फिर उसने मन ही मन कहा अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ मैं राजा हूँ मुझसे ज्यादा धनवान बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ

© NCERT not to be republished

2. "तीसरी मूर्ति भी उड़ गई।" इस वाक्य के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) इस वाक्य में संज्ञा शब्द कौन-सा है?

.....

(ख) कौन-सा शब्द इस संज्ञा शब्द के गुण या विशेषता को बता रहा है?

.....

3. कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण शब्द पहचानकर उनके नीचे रेखा खींचिए—

(क) एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था।

(ख) उज्जैन की प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी के बाहर एक लंबा-चौड़ा मैदान था।

(ग) इतनी छोटी उम्र में इतनी बुद्धि का होना आश्चर्य की बात है।

(घ) राजा ने देखा कि वह पत्थर नहीं, बहुत ही सुंदर सिंहासन था।

(ङ) बात ही बात में वहाँ अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई।

4. आपमें कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे आप कहानी के सिंहासन पर बैठ सकें? लिखिए—

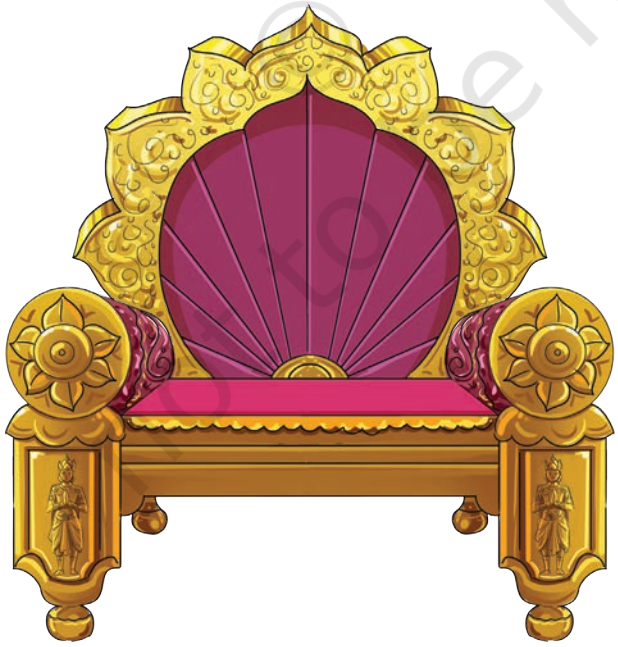

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पाठ से आगे

1. कहानी में गाँव वाले न्याय करवाने या झगड़े सुलझाने बच्चों के पास जाया करते थे। आप अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए किन-किनके पास जाते हैं? आप उन्हीं के पास क्यों जाते हैं?

2. क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो? आपने उस स्थिति का सामना कैसे किया?

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

आपने जो कहानी पढ़ी, वह हमारे देश की सैकड़ों वर्ष पुरानी एक पुस्तक पर आधारित है। उस पुस्तक का नाम है *सिंहासन बत्तीसी*।

इस पुस्तक में राजा भोज को भूमि में गड़ा राजा विक्रमादित्य का सिंहासन मिलता है जिसमें बत्तीस मूर्तियाँ जड़ी होती हैं। प्रत्येक मूर्ति राजा भोज को राजा विक्रमादित्य की एक कहानी सुनाती है। इस पुस्तक की प्रत्येक कहानी बहुत रोचक है।

- पुस्तकालय में से यह पुस्तक खोजकर पढ़िए और अपनी मनपसंद कहानी कक्षा में सुनाइए।
- *सिंहासन बत्तीसी* की तरह भारत में अनेक पारंपरिक कहानियाँ प्रचलित हैं, जैसे – *पंचतंत्र*, *हितोपदेश*, *जातक कथाएँ* आदि। इन्हें भी पुस्तकालय से ढूँढ़कर पढ़िए।

पता लगाकर कीजिए

"राजा ने आज्ञा दी कि सिंहासन को ले जाकर राजदरबार में रख दिया जाए।"

सिंहासन एक विशेष प्रकार की भव्य कुर्सी हुआ करती थी जिस पर राजा-महाराजा बैठा करते थे। आज भी हम बैठने के लिए अनेक प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करते हैं। इनमें से कुछ वस्तुओं के चित्र दिए गए हैं। इनका वर्णन कीजिए और यह भी लिखिए कि आपकी भाषा में इन्हें क्या कहते हैं।

© NCERT not to be republished

वस्तु	वर्णन	आपकी भाषा में नाम
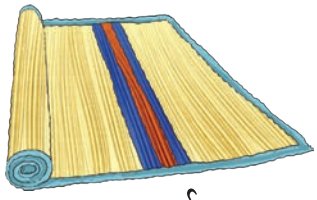 चटाई	यह घास, बाँस या प्लास्टिक से बनी होती है। इसे भूमि पर बिछाकर बैठा जाता है।	.....
दरी	यह मोटे कपड़े या सूती धागों से बनी होती है। यह उत्सवों या सामाजिक कार्यक्रमों में उपयोग की जाती है।	.....
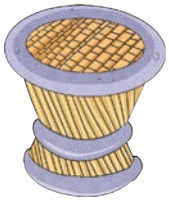 मूढ़ा	....	.....
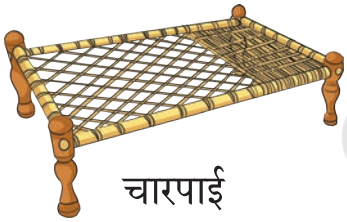 चारपाई	....	.....
पीढ़ा	....	.....
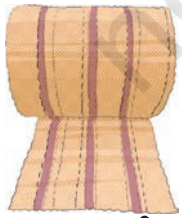 टाट पट्टी	....	.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

बूझो तो जानें

आज हम आपके लिए लाए हैं भारत की अलग-अलग भाषाओं की विभिन्न पहेलियाँ। हो सकता है कि इनमें से कुछ को पढ़कर आपको लगे — अरे! ये पहेली तो मेरे घर पर भी बूझी जाती है। तो आइए, बूझते हैं ये रोचक पहेलियाँ —

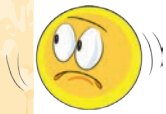

गोंड पहेली

न तो खाय न तो पीवैह,
संग मा रेंगत है।
(न खाती है, न पीती है,
संग-संग चलती है)

निमाड़ी पहेली

हरो माथणो, लाल पेट,
रस पी लेव भर-भर पेट।
(हरे मटके का लाल पेट,
रस पी लो भर-भर पेट)

मालवी पहेली

एक जानवर ऐसो,
जिकी दूम पे पैसो।
(एक जानवर ऐसा,
जिसकी दुम पर पैसा)

बुंदेली पहेली

एक लकड़ी की ऐसी कहानी,
ऊमें लुको है मीठो पानी।
एक लकड़ी की ऐसी कहानी,
उसमें छिपा है मीठा पानी)

बघेली पहेली

एक दिया
सबतर उंजियार।
(एक दीपक से
चारों ओर उजियारा)

(जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् से साभार)

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

मेरा न्याय

- अपनी कक्षा से किन्हीं दो ऐसी समस्याओं को चुनिए जिन पर न्याय किया जाना है।
- कक्षा को दो समूहों में विभाजित कीजिए।
- दोनों समूह एक समस्या लेकर उस पर विचार करेंगे।
- तत्पश्चात दोनों समूह एक-एक कर नाटक-मंचन के द्वारा समस्या को सुलझाएँगे।
- दर्शक समूह प्रतिपुष्टि प्रदान करेंगे।

क्र.सं.	प्रतिपुष्टि के बिंदु	अंक				
		1	2	3	4	5
(क)	प्रस्तुतीकरण					
(ख)	पात्र संवाद					
(ग)	समस्या का समाधान					
(घ)	पात्रों का आत्मविश्वास					

शिक्षण-संकेत – शिक्षक, इस गतिविधि में समस्याओं के चुनाव, संवाद-रचना, नाटक-मंचन और कक्षा में समूहों को व्यवस्थित करने में बच्चों की सहायता करें। यह भी सुनिश्चित करें कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा इस गतिविधि में सम्मिलित हो।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

3 चाँद का कुरता

0531CH03

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
“सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।
सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का।”
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, “अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोने।

© NCERT not to be republished

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।
कभी एक अंगुल-भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।
घटता-बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।
अब तू ही तो बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आए?"

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

बातचीत के लिए

1. आकाश आपको कब-कब बहुत सुंदर दिखाई देता है और क्यों?
2. चाँद को ठंड लगती है इसलिए वह झिंगोला माँग रहा है। सूरज क्या कहकर अपनी माँ से कपड़े माँगेगा?
3. आपने आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते देखे हैं?
4. जब आप अपने अभिभावक के साथ नए कपड़े खरीदने जाते हैं तब किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं?

कविता से

नीचे दिए गए प्रश्नों में चार विकल्प हैं। इनमें एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सही विकल्प पर चाँद का चित्र ( ) बनाइए—

1. चाँद की माँ उसे झिंगोला क्यों नहीं दे पा रही है?

   (क) चाँद के पास पहले से ही बहुत से झिंगोले हैं।

   (ख) चाँद के शरीर का आकार घटता-बढ़ता रहता है।

   (ग) चाँद अपने वस्त्र सँभालकर नहीं रखता है।

   (घ) चाँद की माँ अभी कोई नया वस्त्र नहीं सिलवाना चाहती है।

2. कविता में चाँद के बदलते आकार का वर्णन करने के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया गया है?

   (क) एक अंगुल-भर चौड़ा (ख) एक फुट मोटा

   (ग) किसी दिन बड़ा (घ) किसी दिन छोटा

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

3. कविता में ठंड के मौसम का वर्णन करने के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग किया गया है?

(क) ऊन का मोटा झिंगोला ☐ (ख) सन-सन चलती हवा ☐

(ग) ठिठुर-ठिठुरकर यात्रा ☐ (घ) भाड़े का कुरता ☐

सोचिए और लिखिए

1. कविता की किन पंक्तियों से पता चलता है कि चाँद किसी एक दिन बिलकुल दिखाई नहीं देता है?
2. सर्दी से बचने के लिए चाँद, माँ से ऊन के झिंगोले के अतिरिक्त और कौन-से कपड़े माँग सकता है?
3. जाड़े के मौसम में चाँद को क्या कठिनाई होती है?
4. चाँद किस यात्रा को पूरा करने की बात कर रहा है?

अभिभावक और आप

जब नीचे दी गई बातें एवं घटनाएँ होती हैं तब आपके अभिभावक क्या-क्या कहते या करते हैं? अपने-अपने अनुभव कक्षा में साझा कीजिए।

☺ जब आप ठंडी रात में सोते समय अपने पैरों से कंबल या रजाई उतार फेंकते हैं।

☺ जब आप ठंड में आइसक्रीम खाने का हठ करते हैं।

☺ जब आप दूध पीने, हरी सब्जियाँ और फल आदि खाने से कतराते हैं।

☺ जब आप देर तक सोते हैं।

☺ जब कोई आपके घर आपकी शिकायत करने आता है।

☺ जब आपके अच्छे कामों के लिए आपकी प्रशंसा होती है अथवा पुरस्कार मिलता है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

अनुमान और कल्पना

1. आप अपनी माँ से चाँद का दुखड़ा कैसे बताएँगे?
2. गरमी और वर्षा से बचने के लिए चाँद अपनी माँ से क्या कहेगा? वह किस प्रकार के कपड़ों एवं वस्तुओं की माँग कर सकता है?
3. चाँद ने माँ से कुरता किराए पर लाने के लिए क्यों कहा होगा?
4. यदि माँ ने चाँद का कुरता सिलवा दिया होता तो क्या होता?

भाषा की बात

1. "सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ।" कविता की इस पंक्ति में 'भर' शब्द का प्रयोग किया गया है। अब आप 'भर' की सहायता से पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए, जैसे– पानी गिलास भर है, उसने दिन भर पढ़ाई की आदि।

2. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

   (क) "ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।"

   (ख) "ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।"

   अपनी बात पर बल देने के लिए हम इस प्रकार के कुछ शब्दों का प्रयोग दो बार करते हैं, जैसे– जल्दी चलो, जल्दी-जल्दी चलो आदि। अब आप ऐसे ही पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

3. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पहचानकर उन्हें दिए गए स्थानों में लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

पंक्ति	संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला।	हठ, चाँद, दिन, माता	यह	एक	कर बैठा, बोला

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।				
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।				
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।				

चाँद का झिंगोला

1. मान लीजिए कि चाँद, झिंगोले के लिए माँ, कपड़े के दुकानदार और दर्ज़ी से संवाद करता है। बातचीत के कुछ अंश नीचे दिए गए हैं। आप इन्हें आगे बढ़ाइए। आप संवाद अपनी मातृभाषा में भी लिख सकते हैं।

चाँद और माँ का संवाद

चाँद: माँ, मुझे बहुत ठंड लगती है। मेरे लिए एक मोटा झिंगोला सिलवा दो!

माँ: तुझे सच में ठंड सताती होगी लेकिन एक समस्या है।

चाँद: समस्या? कैसी समस्या, माँ?

माँ: तेरा आकार तो प्रतिदिन बदलता रहता है। कभी छोटा, कभी बड़ा, कभी एकदम गायब! मैं कैसे नाप लूँ?

चाँद: (सोचकर) अरे हाँ! लेकिन फिर भी कोई उपाय तो होगा?

माँ: .....

चाँद: .....

माँ: .....

चाँद: .....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

चाँद और कपड़े का दुकानदार

चाँद: दुकानदार जी, मुझे एक गरम कपड़ा चाहिए जिससे मेरी सर्दी दूर हो जाए।

दुकानदार: अवश्य, कितने मीटर चाहिए?

चाँद: यही तो समस्या है! मैं कभी छोटा होता हूँ, कभी बड़ा। आप ही बताइए... कितने मीटर लूँ?

दुकानदार: (हँसकर) अरे छोटू चाँद! जब आपका नाप ही तय नहीं तो कपड़ा कैसे दूँ? पहले नाप तो तय करके आओ!

चाँद: .....

दुकानदार: .....

चाँद: .....

दुकानदार: .....

चाँद: .....

चाँद और दर्ज़ी का संवाद

चाँद: दर्ज़ी जी, मेरे लिए एक कुरता सिल दीजिए।

दर्ज़ी: बिलकुल! लेकिन पहले नाप तो दो।

चाँद: यही तो समस्या है! कभी मैं छोटा, कभी बड़ा हो जाता हूँ।

दर्ज़ी: (हँसते हुए) तो फिर ऐसा करो, प्रतिदिन मेरे पास आओ और मैं प्रत्येक दिन तुम्हारे नाप का नया कुरता सिल दूँगा!

चाँद: (प्रसन्न होते हुए) फिर तो मुझे प्रतिदिन नए कपड़े मिलेंगे! लेकिन माँ मानेंगी नहीं!

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

दर्ज़ी: .....

चाँद: .....

दर्ज़ी: .....

चाँद: .....

2. अब आप इन संवादों पर कक्षा में शिक्षक की सहायता से अभिनय कीजिए।

कविता से आगे

1. क्या चाँद की तरह आप भी अपनी माँ से किसी वस्तु के लिए हठ करते हैं? आप अपनी माँ को इसके लिए कैसे मनाते हैं?
2. आपकी माँ आपको किसी काम के लिए कैसे मनाती हैं?
3. गरमी, सर्दी या वर्षा से बचने के लिए आपकी माँ आपको क्या कहती अथवा क्या-क्या करती हैं?

सोचिए, समझिए और बताइए

1. कविता में चाँद अपनी माँ से बातें कर रहा है। मान लीजिए कि चाँद बोल नहीं सकता। अब वह अपनी माँ को अपनी बात कैसे बताएगा?
2. मान लीजिए कि चाँद का एक मित्र है जो देख नहीं सकता। चाँद उसे अपने बदलते हुए आकार के बारे में कैसे समझाएगा?

पढ़िए और समझिए

1. चाँद के लिए कुरता सिलना एक कठिन कार्य है। इसलिए चाँद की माँ ने उसका कुरता सिलवाने के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित किया है। इसे पढ़िए और इसका प्रचार-प्रसार कर चाँद की माँ की सहायता कीजिए—

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

विज्ञापन

चाँद की माँ की विशेष घोषणा!

क्या आप हैं सबसे कुशल दर्ज़ी?

क्या आप सिल सकते हैं ऐसा कुरता जो प्रतिदिन बदलते आकार में भी फिट आए?

समस्या: मेरा बेटा चाँद कभी एक अंगुल-भर छोटा तो कभी एक फुट मोटा हो जाता है। उसके लिए एक ऐसा कुरता चाहिए जो हर दिन उसके शरीर में फिट बैठ सके।

आवश्यकता

ऐसा कुरता जो अपने-आप छोटा-बड़ा हो सके

ऊन का मोटा झिंगोला ताकि ठंड से बच सके

यदि कुरता नहीं बन सकता तो भाड़े का भी चलेगा!

पुरस्कार

जो भी दर्ज़ी इस अद्‌भुत कुरते को सिलने में सफल होगा, उसे मिलेगा विशेष पुरस्कार!

स्थान: चाँद की माँ का घर

संपर्क करें: आकाशवाणी से संदेश भेजें

शीघ्र आवेदन करें क्योंकि चाँद ठंड से ठिठुर रहा है।

© NCERT not to be republished

2. अब एक रोचक विज्ञापन तैयार कीजिए जिसमें आप अपने लिए कोई वस्तु मँगवा रहे हों।

आपकी कलाकारी

आइए, चाँद के लिए एक कुरता बनाएँ।

सामग्री : रंगीन कागज, गोंद, कैंची, ग्लिटर, कपड़े के छोटे टुकड़े

Reprint 2026-27

बनाने की विधि

- ✶ चाँद के लिए कुरते का एक बड़ा चित्र बनाइए।
- ✶ अब अलग-अलग रंगीन कागज या कपड़े के टुकड़ों से चाँद के लिए सुंदर कुरता तैयार कीजिए।
- ✶ ग्लिटर या सितारों की आकृति बनाकर उसे सजाइए।
- ✶ अब तैयार कुरते को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

1. पुस्तकालय में चाँद, सूरज, तारे, आकाश आदि पर बहुत-सी रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक पुस्तकें अवश्य उपलब्ध होंगी। उन पुस्तकों को ढूँढ़कर पढ़िए और उनके बारे में कक्षा में भी चर्चा कीजिए।
2. अपने शिक्षक, पुस्तकालय प्रभारी और मित्रों की सहायता से चाँद तथा सूरज की बदलती स्थितियों की और भी जानकारी प्राप्त कीजिए। यह भी पता लगाइए कि चंद्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण कब-कब और क्यों होते हैं। आप अपने माता-पिता या अभिभावक से भी इनके बारे में बात कर सकते हैं।

बूझो तो जानें

तन है मेरा हरा-भरा,
रस से रहता सदा भरा।
भीतर से हूँ मैं लाल,
प्यास बुझाकर पूछूँ हाल।

हम दोनों हैं पक्के मित्र,
करते रहते काम विचित्र।
पाँच-पाँच सेवक हैं साथ,
लेकिन करते कभी न बात।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

जागो प्यारे

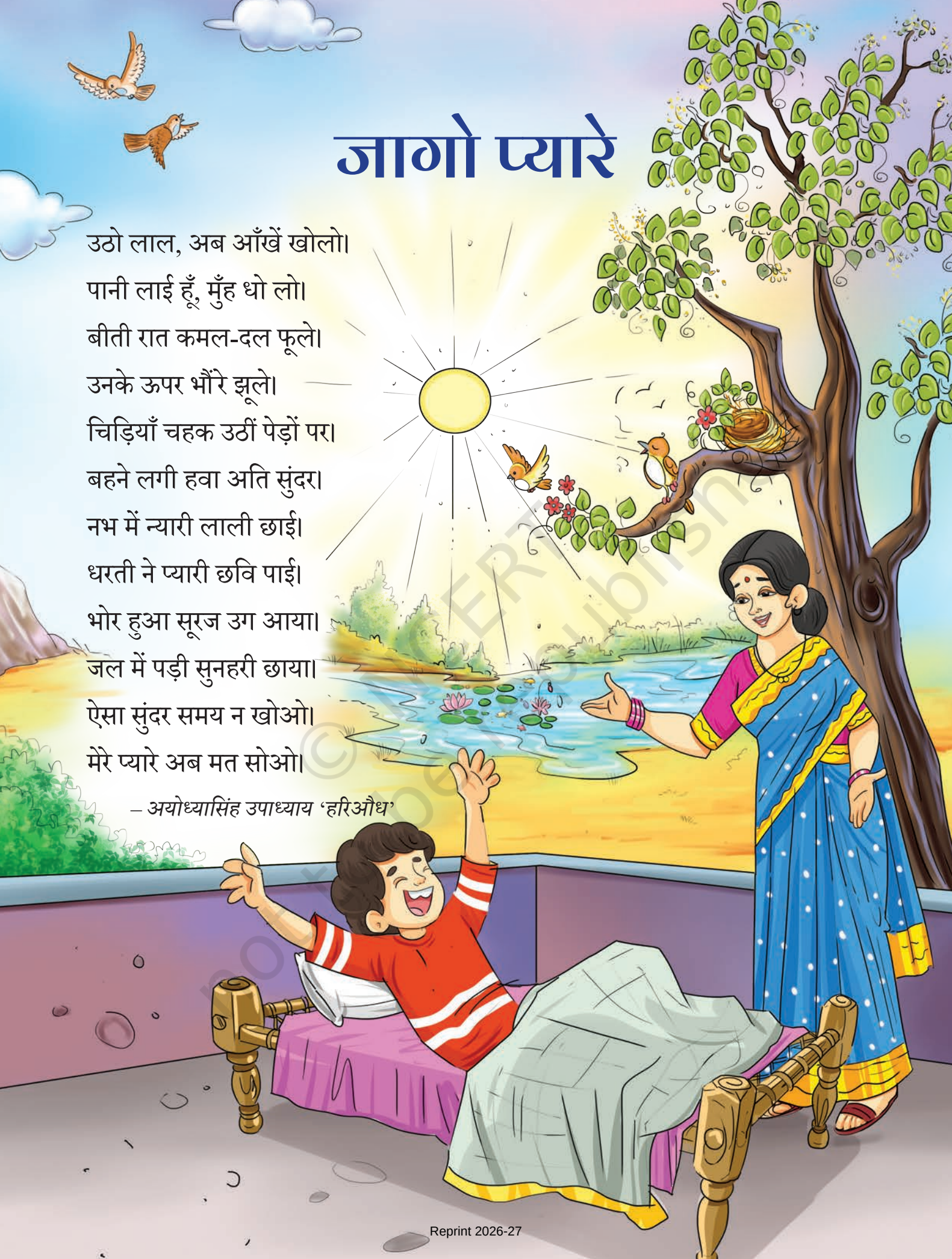

उठो लाल, अब आँखें खोलो।
पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।
बीती रात कमल-दल फूले।
उनके ऊपर भौंरे झूले।
चिड़ियाँ चहक उठीं पेड़ों पर।
बहने लगी हवा अति सुंदर।
नभ में न्यारी लाली छाई।
धरती ने प्यारी छवि पाई।
भोर हुआ सूरज उग आया।
जल में पड़ी सुनहरी छाया।
ऐसा सुंदर समय न खोओ।
मेरे प्यारे अब मत सोओ।

– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

© NCERT not to be republished

4 साङकेन

0531CH04

अरुणाचल प्रदेश में चौखाम के मंडल कार्यालय में वल्लरी के पिताजी एक अधिकारी हैं। इस बार उन्होंने दिल्ली से अपने परिवार को भी अपने पास बुला लिया है। कहाँ दिल्ली की भीड़भरी सड़कें, हॉर्न बजाती हुई कारें और बसें, आदमियों की लंबी-लंबी कतारें और कहाँ चौखाम का खुला और शांत वातावरण। जिधर देखो, हरियाली ही हरियाली और फूल ही फूल। यहाँ के लोगों के मुखों पर सदैव मुस्कान बनी रहती है।

एक दिन वल्लरी को उसके मित्र चाऊतान ने अपने घर बुलाया। वल्लरी अपने पिताजी के साथ चाऊतान के घर गई। उस समय चाऊतान के पिताजी घर की सफाई कर रहे थे। वल्लरी और उसके पिताजी को देखकर उन्होंने सफाई का काम छोड़ दिया और उन दोनों का स्वागत किया।

चाऊतान की माताजी कई प्रकार के पकवान ले आईं। ये पकवान बहुत स्वादिष्ट थे। वल्लरी और उसके पिताजी

© NCERT not to be republished

पकवान खाने लगे। तभी वल्लरी ने देखा कि सड़क पर एक शोभायात्रा निकल रही है। शोभायात्रा में बहुत-से लोग थे। कुछ लोगों के कंधों पर पालकियाँ थीं। इन पालकियों में बड़ी-बड़ी और सुंदर-सुंदर मूर्तियाँ रखी हुई थीं। शोभायात्रा में सब लोग नाचते-गाते हुए जा रहे थे। लोगों में बहुत उत्साह था।

वल्लरी ने चाऊतान से पूछा, "ये लोग कहाँ जा रहे हैं? बहुत प्रसन्न दिख रहे हैं।"

चाऊतान ने बताया, "अभी एक-दो दिन पहले ही हमारे गाँव के लोगों ने नदी के किनारे एक मंदिर बनाया है। ये लोग बौद्ध-विहार से भगवान बुद्ध और उनके शिष्यों की मूर्तियाँ लाए हैं और इन्हें मंदिर ले जा रहे हैं। ये मूर्तियाँ तीन दिन तक उस मंदिर में रखी रहेंगी। गाँव के लोग इन मूर्तियों पर प्रतिदिन जल चढ़ाएँगे और इनकी पूजा करेंगे।"

"क्या हम लोग भी शोभायात्रा में सम्मिलित हो सकते हैं?" वल्लरी के पिताजी ने पूछा। "हाँ-हाँ, अवश्य। चलिए, हम सब शोभायात्रा में चलते हैं।" चाऊतान के पिताजी

© NCERT not to be republished

बोले। सब लोग शोभायात्रा में सम्मिलित हो गए। शोभायात्रा में लोग गाते-बजाते हुए और नाचते-कूदते हुए चले जा रहे थे। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।

थोड़ी देर में शोभायात्रा मंदिर के पास पहुँची। मंदिर की जालीदार दीवारें बाँस और बाँस की खपच्चियों से बनी हुई थीं। बीच-बीच में पेड़ों की हरी-भरी टहनियाँ लगाई गई थीं और खोंस-खोंसकर उन पर रंग-बिरंगे फूल सजा दिए गए थे। इतना सादा और सुंदर मंदिर वल्लरी ने पहले कभी नहीं देखा था।

देखते-देखते भीड़ मंदिर के द्वार पर एकत्रित होने लगी। बौद्ध भिक्षुओं ने मंत्र पढ़ते हुए इन मूर्तियों को पालकियों से उतारा और इन्हें मंदिर में रख दिया। अब वे इन मूर्तियों की पूजा करने लगे और इन पर जल चढ़ाने लगे।

हँसी-खुशी के इस वातावरण में वल्लरी ने देखा कि लोग एक-दूसरे पर बालटियाँ भर-भरकर पानी डाल रहे हैं। वे एक-दूसरे के चेहरों पर चावल का आटा भी लगा रहे हैं। वल्लरी को होली की याद आ गई। उसने चाऊतान से कहा, "चाऊतान भाई, लगता है कि लोग होली का त्योहार मना रहे हैं।" चाऊतान बोला, "तुम्हें मालूम नहीं, आज हमारे यहाँ साङकेन का त्योहार है। आज से हमारा नया वर्ष आरंभ होता है।"

Reprint 2026-27

वल्लरी ने बताया, "हमारे यहाँ भी होली से ही नया वर्ष आरंभ होता है। होली के दिन हम लोग भी एक-दूसरे के ऊपर रंगीन पानी फेंकते हैं और मुँह पर गुलाल लगाते हैं। होली के दूसरे दिन लोग एक-दूसरे से मिलने जाते हैं। उस दिन लोग घरों में कई प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन बनाते हैं और अतिथियों का स्वागत करते हैं।"

चाऊतान ने बताया, "आज शाम को हम लोग भी अपने ताऊजी के यहाँ जाएँगे। हमारी ताईजी ने भी विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए होंगे। हम उन्हें प्रणाम करेंगे। वे हमें आशीर्वाद देंगे। कल मेरी बुआजी और मेरे फूफाजी भी हमारे यहाँ आएँगे।"

इतने में किसी ने वल्लरी और उसके पिताजी पर एक बालटी पानी डाल दिया। वे भीग गए। फिर तो लोग बहुत देर तक एक-दूसरे पर पानी डालते रहे और साङ्केन मनाते रहे।

"तीन दिन तक इसी तरह साङ्केन मनाया जाता है।" चाऊतान ने बताया। "तीसरे दिन बौद्ध भिक्षु इन मूर्तियों को पुनः पालकियों में रखकर बौद्ध-विहार ले जाएँगे। वहाँ वे मंत्र पढ़-पढ़कर इन मूर्तियों को इनके स्थान पर रख देंगे।"

चाऊतान के पिताजी ने बताया, "गाँव के लोग फिर बौद्ध-विहार जाएँगे और भिक्षुओं को बार-बार दंडवत प्रणाम करेंगे। भिक्षु लोग हमें आशीर्वाद देंगे —

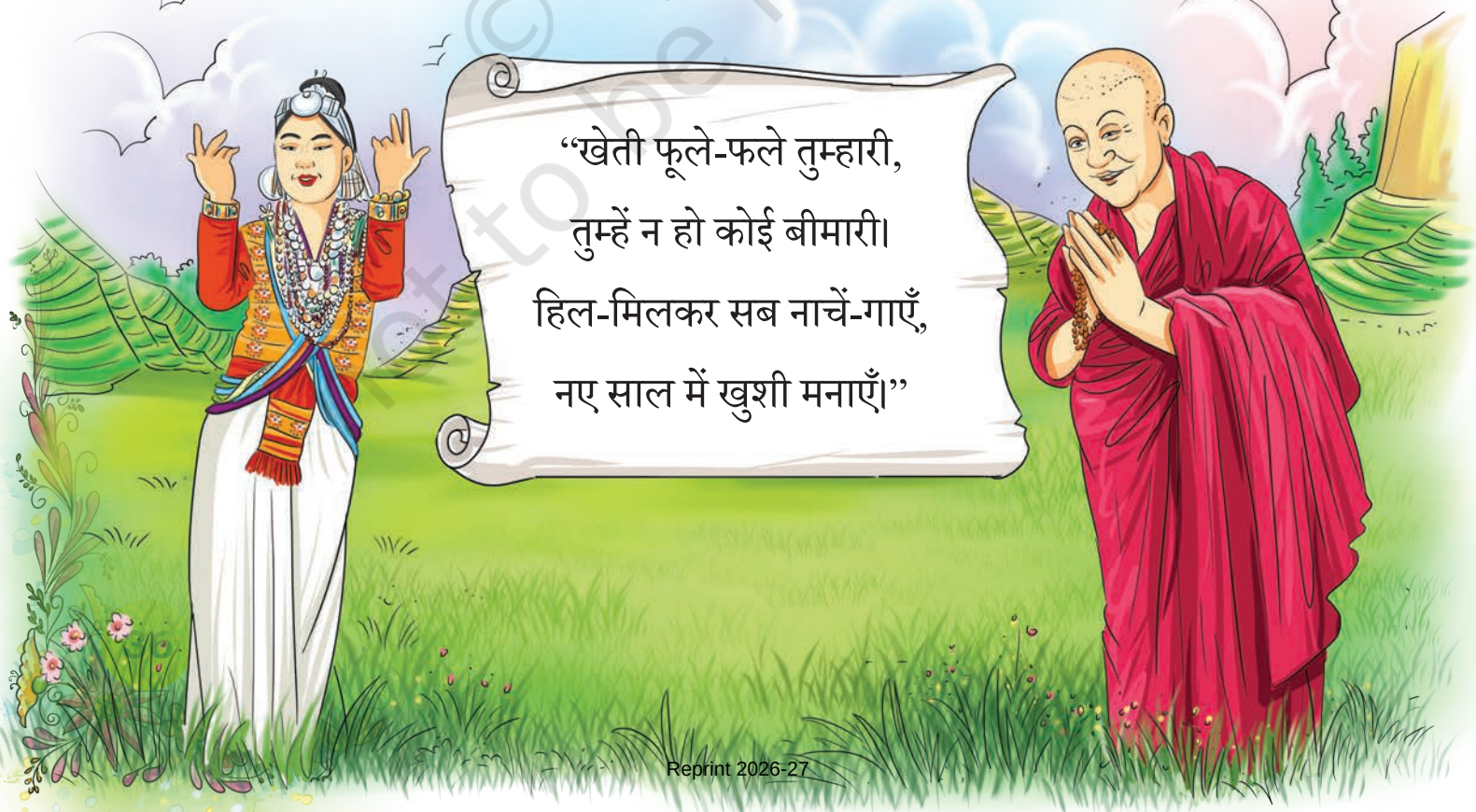

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. त्योहारों पर घरों में कई प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन बनाई जाती हैं। आपको कौन-सी मिठाइयाँ और नमकीन अच्छी लगती हैं? वे किस त्योहार पर बनाई जाती हैं?
2. आप कौन-से त्योहार मनाते हैं? उनमें और साङकेन में कौन-कौन सी समानताएँ हैं?
3. हमारे देश में अनेक अवसरों पर शोभायात्राएँ (जुलूस) निकाली जाती हैं। आपने कौन-कौन सी शोभायात्राएँ देखी हैं? उनके बारे में अपने अनुभव बताइए।
4. आप नया वर्ष कब और कैसे मनाते हैं?

पाठ से

प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सामने तारे का चिह्न (★) बनाइए—

1. साङकेन क्यों मनाया जाता है?

   (क) दीपावली पर्व के कारण ☐

   (ख) नव वर्ष प्रारंभ होने के उपलक्ष्य में ☐

   (ग) नए मंदिर के उद्घाटन की प्रसन्नता में ☐

   (घ) बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर ☐

2. भगवान बुद्ध का मंदिर कहाँ बना हुआ था?

   (क) चिकित्सालय के पास ☐ (ख) सरोवर के किनारे ☐

   (ग) नदी के किनारे ☐ (घ) समुद्र के किनारे ☐

3. लोग बहुत देर तक एक-दूसरे पर पानी डालते रहे क्योंकि—

   (क) उन्हें गरमी लग रही थी। ☐ (ख) वे स्नान कर रहे थे। ☐

   (ग) वे गंदे हो गए थे। ☐ (घ) वे साङकेन मना रहे थे। ☐

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

4. "यहाँ के लोगों के मुखों पर सदैव मुस्कान बनी रहती है।" इस वाक्य का क्या अर्थ है?

(क) यहाँ के लोग सदैव प्रसन्न रहते हैं।

(ख) यहाँ के लोग सदैव प्रसन्न रहने का अभिनय करते हैं।

(ग) यहाँ के लोगों को खेलना-कूदना अच्छा लगता है।

(घ) यहाँ के लोगों को नाचना-गाना अच्छा लगता है।

पाठ से

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

(क) साङकेन का त्योहार मनाते समय वल्लरी को होली की याद क्यों आई?

(ख) वल्लरी को चौखाम और दिल्ली में क्या अंतर लगा?

(ग) मंदिर की सजावट कैसे की गई थी?

(घ) आपको कौन-कौन आशीर्वाद देते हैं? वे क्या आशीर्वाद देते हैं?

2. नीचे पाठ की कुछ पंक्तियों के भावार्थ दिए गए हैं। उदाहरण के अनुसार पाठ की उन पंक्तियों को लिखिए जो दिए गए भावार्थ पर आधारित हैं—

भावार्थ	पाठ की पंक्तियाँ
शोभायात्रा में लोग बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।	शोभायात्रा में सब लोग नाचते-गाते हुए जा रहे थे। लोगों में बहुत उत्साह था।
मंदिर सुंदर सजा था।	....
ऐसा लगता है कि लोग होली का त्योहार मना रहे हैं।	....
त्योहारों में सब एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं।	....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते हुए अपनी लेखन-पुस्तिका में वाक्यों को पुनः लिखिए—

(क) एक दिन वल्लरी को उसके मित्र चाऊतान ने अपने घर बुलाया।

(ख) हमारे गाँव के लोगों ने नदी के किनारे एक मंदिर बनाया है।

(ग) बीच-बीच में पेड़ों की हरी-भरी टहनियाँ सजाई गई थीं।

(घ) आज हमारे यहाँ साङकेन का त्योहार है।

2. दिए गए उदाहरण को समझकर वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) जहाँ देखो हरियाली ही हरियाली और फूल ही फूल!

(ख) मैं समुद्र के किनारे गई, जहाँ देखो ..... पानी!

(ग) मेरा गाँव केरल में है; जहाँ देखो नारियल के पेड़ ..... !

(घ) मुंबई में जिधर देखो ..... !

(ङ) ..... की दुकान में जहाँ देखो ..... !

3. रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पूरा कीजिए—

(क) शोभायात्रा में बड़ी मूर्ति की पालकी सबसे पीछे थी और छोटी मूर्तियों की ....पालकियाँ.... आगे थीं।

(ख) बाँस की खपच्चियाँ उधर रखी हैं, एक ..... मुझे दे दीजिए।

(ग) गंगा एक पवित्र नदी है। भारत में अनेक पवित्र ..... हैं।

(घ) मेरे जन्मदिन पर कई प्रकार की मिठाइयाँ थीं लेकिन मुझे रसगुल्ले की ..... सबसे अच्छी लगती है।

(ङ) सारी बालटियाँ पानी से भर गई हैं, केवल एक ..... बची है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

4. जब किसी की बात ज्यों की त्यों लिखी जाती है तब एक चिह्न लगाया जाता है। इसे उद्धरण चिह्न कहते हैं। उदाहरण के लिए—

चाऊतान बोला, "आज से हमारा नया वर्ष आरंभ होता है।"

पाठ में आए ऐसे चार वाक्य खोजकर लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

5. पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन्हें हिंदी वर्णमाला के क्रम में लिखिए, जैसे— कलम, खरगोश, गगन...

करेला, समय, मठ, तट, नमकीन, जल, वन, मटका

पाठ से आगे

1. आपके घर में त्योहारों के लिए कौन-कौन सी तैयारियाँ की जाती हैं?
2. आपके घर पर त्योहारों के समय कौन-कौन, क्या-क्या काम करता है? सूची बनाइए।
3. हमारे देश में लोग अनेक प्रकार से अभिवादन करते हैं। उदाहरण के लिए, 'नमस्ते' बोलकर। आपके राज्य में क्या बोलकर अभिवादन किया जाता है? एक सूची बनाइए—

राज्य/केंद्रशासित प्रदेश	अभिवादन के लिए शब्द
दिल्ली	नमस्कार
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

इस कार्य के लिए आप अपने मित्रों, शिक्षकों और अभिभावकों की भी सहायता ले सकते हैं।

© NCERT not to be republished

सोचिए और लिखिए

1. इस पाठ में आपको सबसे अच्छा क्या लगा और क्यों?

2. नीचे दिए गए उदाहरण को देखकर आगे की कड़ी बनाइए—

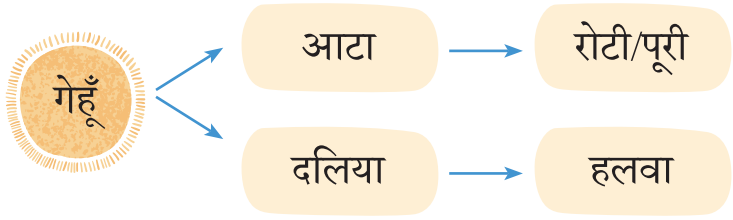

दूध	.....	.....	.....
गन्ना	.....	.....	.....
चना	.....	.....	.....
चावल	.....	.....	.....

3. अपने मित्र को साङकेन के बारे में पूरे दिन का आँखों-देखा वर्णन अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखकर बताइए। आपकी सहायता के लिए कुछ मुख्य संकेत बिंदु नीचे दिए गए हैं—

स्वागत, पकवान, शोभायात्रा, मूर्तियाँ, मंदिर, एक-दूसरे पर पानी डालना, मिल-जुलकर खुशी मनाना, पालकी, बाँस की खपच्चियाँ, भगवान बुद्ध का मंदिर, बौद्ध भिक्षु, होली, आशीर्वाद, घर, फूल

आप इन शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्दों की भी सहायता ले सकते हैं। ये शब्द आपकी अपनी भाषा से भी हो सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

मेरी कलाकारी

यहाँ कुछ प्राणियों के चित्र दिए गए हैं जिन्हें सूखे पत्तों से बनाया गया है। इन प्राणियों को पहचानिए और पत्तों से किसी भी प्राणी की आकृति बनाकर नीचे दिए गए स्थान पर चिपकाइए।

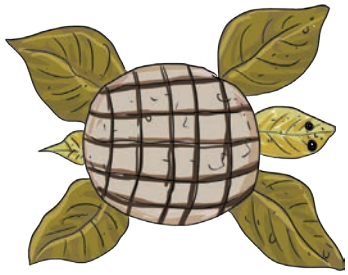

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पुस्तकालय से

नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर अरुणाचल प्रदेश के बारे में शिक्षकों और पुस्तकालय की सहायता से महत्वपूर्ण जानकारी जुटाइए।

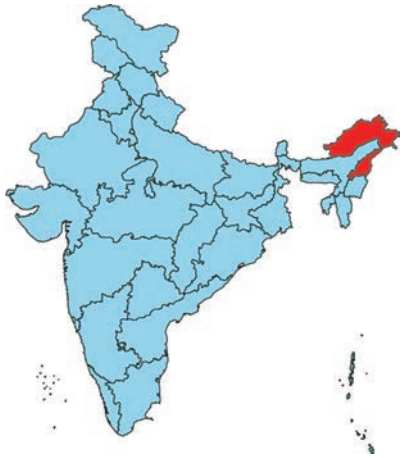

राजधानी

पड़ोसी राज्य

भाषा

मुख्य फसल

त्योहार

नृत्य

परिधान

बूझो पहेली

ज्योति को उसके जन्मदिन पर मिठाई बनाने के लिए उसकी माताजी ने दूधवाले भैया के पास 5 लीटर दूध लेने भेजा। दूधवाले भैया के पास दूध को मापने के दो ही बरतन थे — एक 4 लीटर का और दूसरा 3 लीटर का। दूधवाला कभी इस बरतन में, कभी उस बरतन में और कभी पतीले में दूध डाल रहा था। ज्योति ध्यानपूर्वक यह सब देख रही थी। उसे उत्सुकता भी थी कि आखिर वह 5 लीटर दूध कैसे दे सकेगा?

दूधवाले भैया ने उसे 5 लीटर दूध दे दिया जिसे लेकर वह घर आ गई। शाम को जन्मदिन के उत्सव पर उसने मित्रों को यह रोचक बात बताई और उनसे पूछा कि बताओ दूधवाले ने उसे 5 लीटर दूध कैसे दिया होगा।

अब आप बताइए कि ज्योति ने अपने मित्रों को उत्तर में क्या बताया होगा?

शिक्षण-संकेत – गणित की इस पहेली का उत्तर बच्चों द्वारा अलग-अलग दिए जाने की संभावना है। अत: शिक्षक धैर्यपूर्वक बच्चों द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों को सुनें और सही उत्तर तक पहुँचने में उनकी सहायता करें।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

होली आई, होली आई

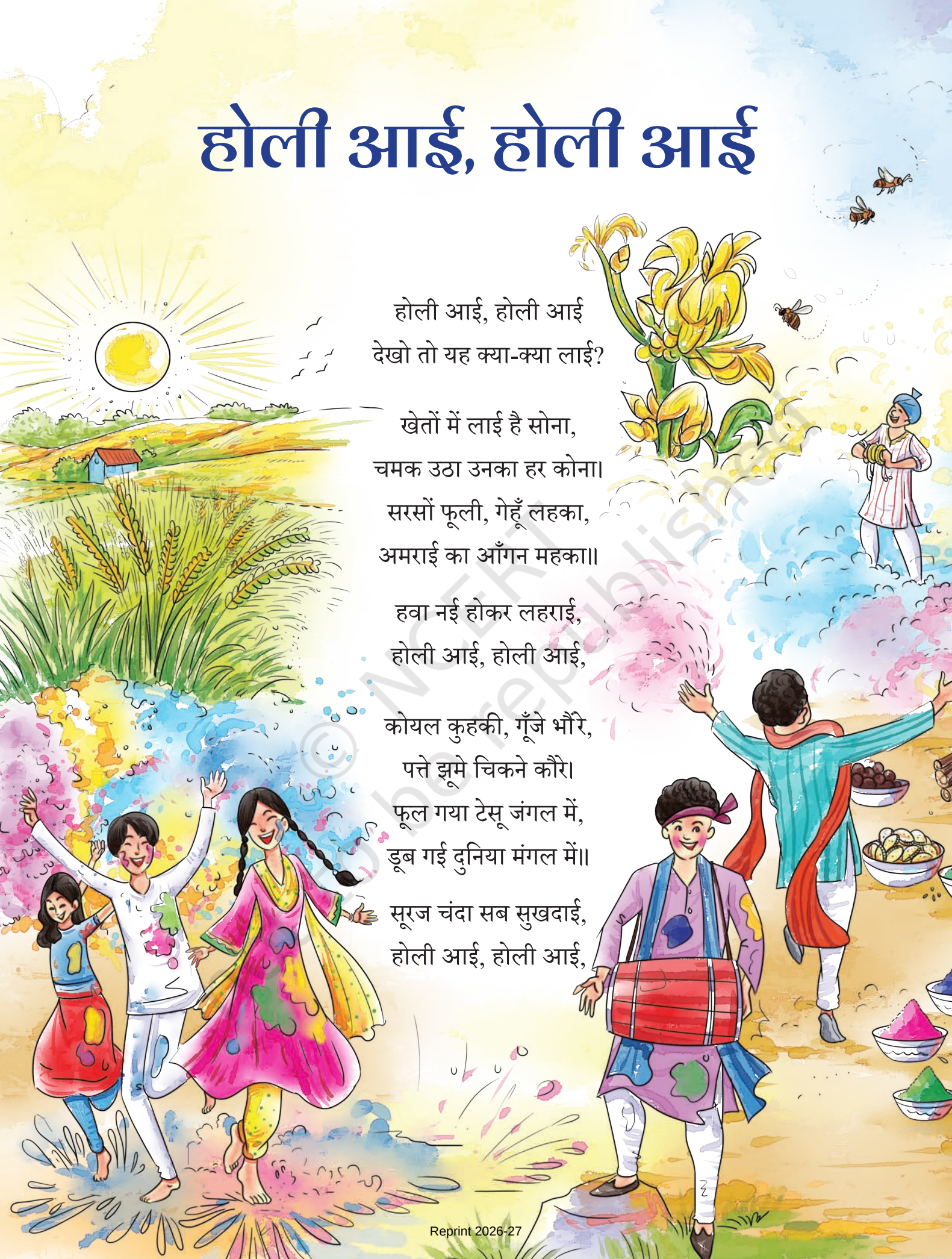

होली आई, होली आई
देखो तो यह क्या-क्या लाई?

खेतों में लाई है सोना,
चमक उठा उनका हर कोना।
सरसों फूली, गेहूँ लहका,
अमराई का आँगन महका॥

हवा नई होकर लहराई,
होली आई, होली आई,

कोयल कुहकी, गूँजे भौंरे,
पत्ते झूमे चिकने कौरे।
फूल गया टेसू जंगल में,
डूब गई दुनिया मंगल में॥

सूरज चंदा सब सुखदाई,
होली आई, होली आई,

© NCERT not to be republished

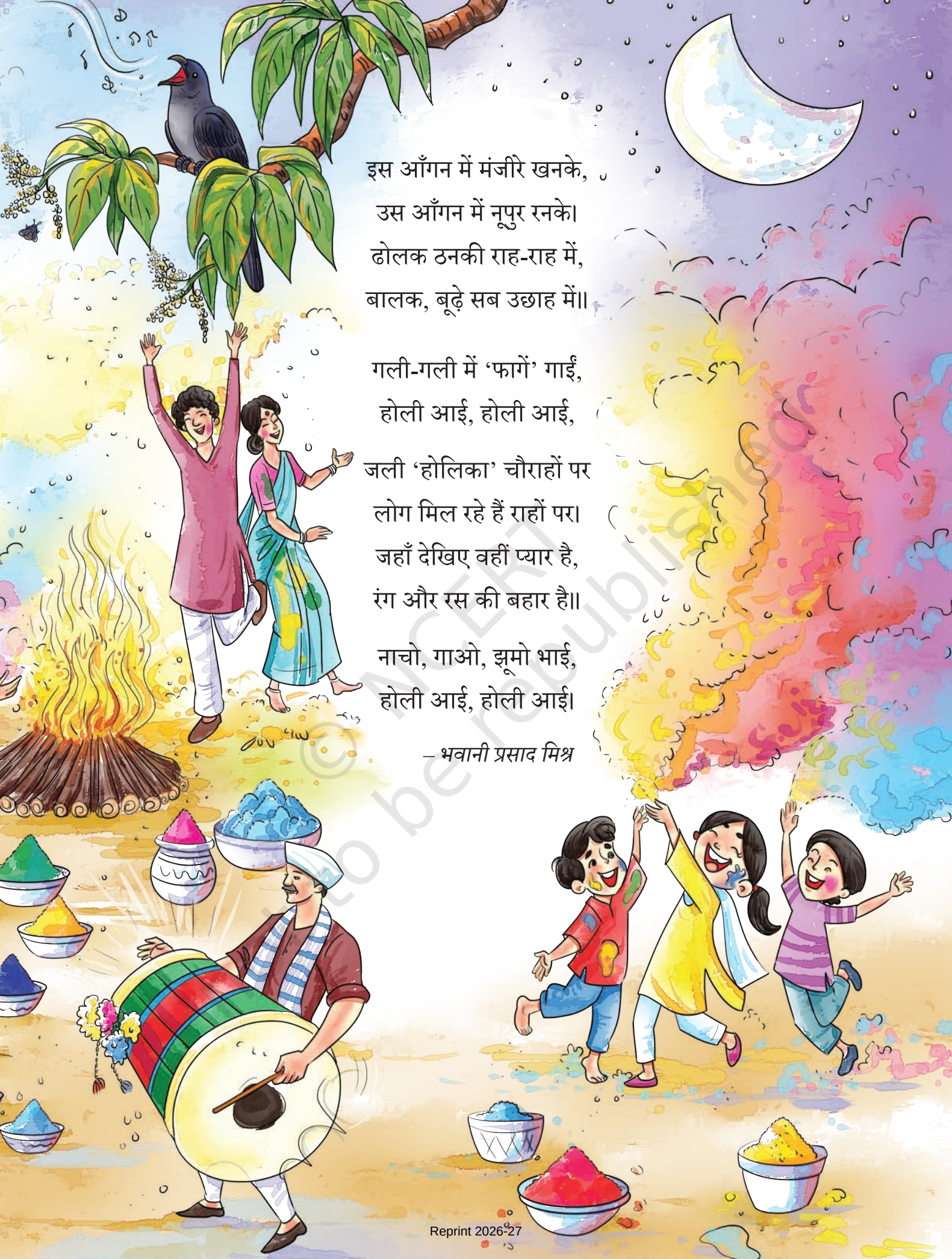

इस आँगन में मंजीरे खनके,
उस आँगन में नूपुर रनके।
ढोलक ठनकी राह-राह में,
बालक, बूढ़े सब उछाह में॥

गली-गली में 'फागें' गाईं,
होली आई, होली आई,

जली 'होलिका' चौराहों पर
लोग मिल रहे हैं राहों पर।
जहाँ देखिए वहीं प्यार है,
रंग और रस की बहार है॥

नाचो, गाओ, झूमो भाई,
होली आई, होली आई।

– भवानी प्रसाद मिश्र

© NCERT not to be republished

5 सुंदरिया

0531CH05

हरियाणा के किसी गाँव में हीरासिंह नामक एक किसान था। उसकी समझ में यह नहीं आता था कि वह अपने बीवी-बच्चों और अपनी प्यारी गाय सुंदरिया की परवरिश कैसे करे?

सुंदरिया गाय डील-डौल में काफी बड़ी थी। उसे देखकर लोगों को ईर्ष्या होती थी। गरीबी के कारण हीरासिंह गाय का चारा भी नहीं जुटा पाता था। खाने-पीने की कमी होने लगी तो हीरासिंह ने सोचा— 'मैं सुंदरिया को बेच दूँ?' पर उसका बड़ा लड़का जवाहरसिंह सुंदरिया को मौसी कहा करता था। इसलिए वह उसे बेचने से डरता था।

नौकरी की तलाश में वह दिल्ली चला आया। वहाँ उसे एक सेठ के यहाँ चौकीदार की नौकरी मिल गई। एक रोज सेठ ने हीरासिंह से कहा— "तुम तो हरियाणा के रहने वाले हो। वहाँ की गायें अच्छी होती हैं। एक गाय का बंदोबस्त कर दो।"

हीरासिंह सुंदरिया की बात सोचने लगा। उसने कहा— "एक है मेरी निगाह में।"

सेठ ने कहा— "कैसी गाय है?"

हीरासिंह बोला— "गाय तो ऐसी है कि दूध देने में कामधेनु। पंद्रह सेर दूध उसके तले उतरता है। उसके दो सौ रुपए तक लग चुके हैं।"

सेठ बोला— "चलो, पाँच हम ज्यादा दे देंगे?"

© NCERT not to be republished

हीरासिंह ने तब साफ-साफ ही कह दिया — "सेठ जी, सच यह है कि वह गाय अपनी ही है।"

सेठ जी ने खुश होकर कहा — "तब तो अच्छी बात है। तुम्हारे लिए जैसे दो सौ, वैसे दो सौ पाँच।"

हीरासिंह लाज से गड़ गया कि वह कैसे बताए कि सुंदरिया उसके परिवार का अंग है। पर उसने सोचा कि सेठ के यहाँ रहकर गाय तो उसकी आँखों के आगे रहेगी। सेठ ने सौ रुपए मँगाकर उसी वक्त हीरासिंह को थमा दिए। कहा — "देखो हीरासिंह, आज ही चले जाओ। कब तक वापस आ जाओगे?"

हीरासिंह ने कहा — "पाँच दिन तो लगेंगे ही।"

सेठ जी ने कहा — "पर ज्यादा दिन मत लगाना।"

हीरासिंह उसी रोज गाय लेने चला गया। जैसे-तैसे जवाहरसिंह को समझा-बुझाकर वह गाय ले आया। गाय देखकर सेठ बहुत खुश हुए। सचमुच वैसी सुंदर, स्वस्थ गाय उन्होंने अब तक न देखी थी। हीरासिंह ने खुद उसे सानी-पानी दिया, सहलाया और अपने हाथों से दुहा। दूध पंद्रह सेर से कुछ ऊपर ही बैठा। सेठ जी ने सौ के ऊपर सात रुपए उसे और दे दिए। सौ रुपए वह पहले ही ले चुका था। घोसी को बुलाकर सेठ जी ने गाय उसके सिपुर्द कर दी।

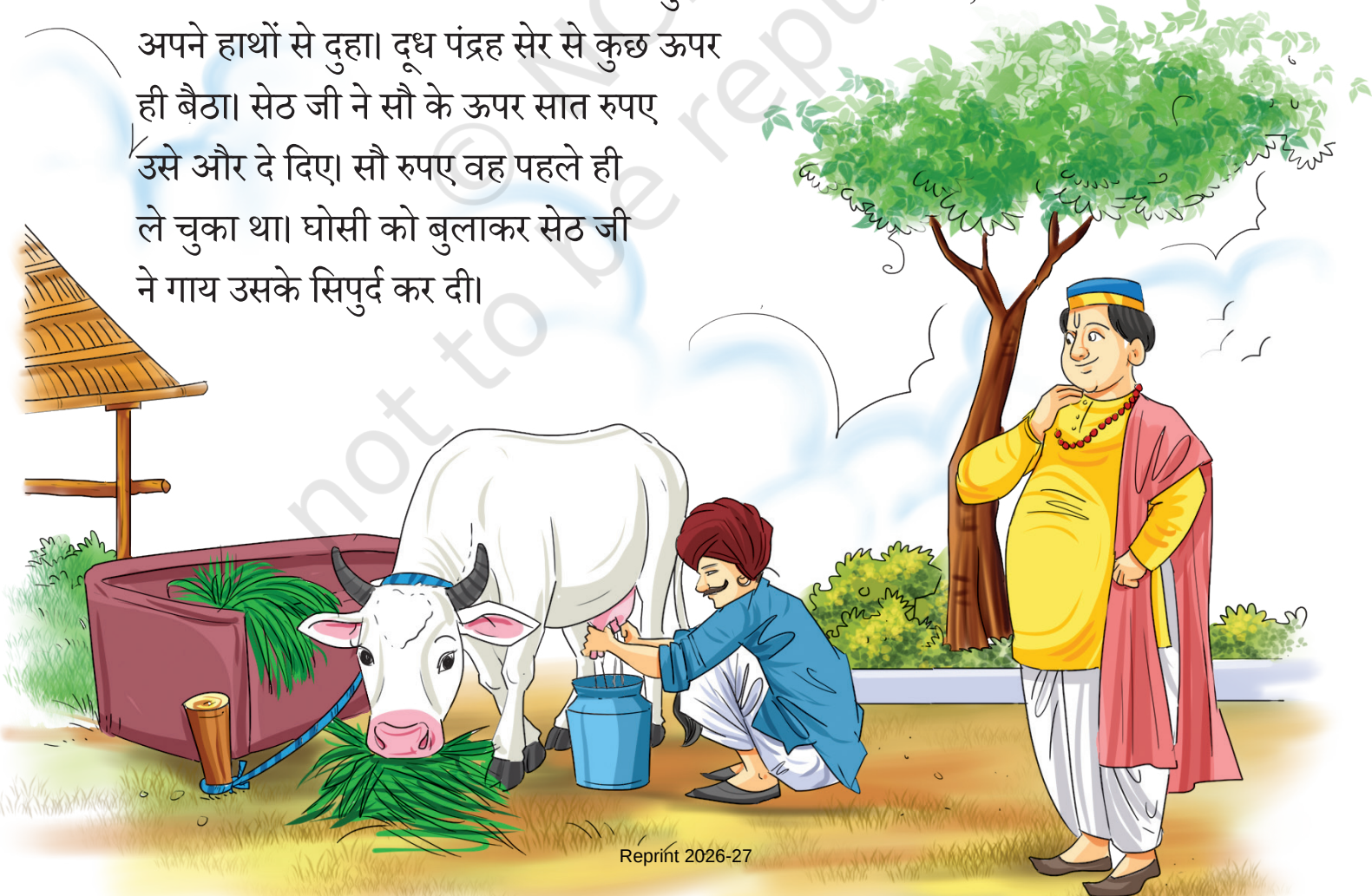

© NCERT not to be republished

रुपए तो ले लिए लेकिन हीरासिंह का जी भरा जा रहा था। जब घोसी गाय को ले जाने लगा, तब गाय उसके साथ जाना ही नहीं चाहती थी।

हीरासिंह बोला — "गाय की नौकरी पर मुझे लगा दीजिए। चाहे तनख्वाह कम कर दीजिए।"

सेठ जी ने कहा — "हीरासिंह, तुम्हारे जैसा ईमानदार चौकीदार हमें दूसरा कहाँ मिलेगा? तनख्वाह तो तुम्हारी हम एक रुपया और भी बढ़ा सकते हैं, पर तुमको ड्योढ़ी पर ही रहना होगा।"

हीरासिंह क्या कहता! उसने गाय को पुचकारकर कहा — "सुंदरिया जाओ, जाओ।"

गाय ने उसकी ओर देखा। जैसे पूछना चाहती थी — "क्या सचमुच ही इसके साथ चली जाऊँ?"

हीरासिंह ने उसे थपथपाया तो वह घोसी के पीछे-पीछे चली गई। हीरासिंह एकटक देखता रहा। लेकिन अगले दिन गड़बड़ हुई। सेठ जी ने हीरासिंह को बुलाकर कहा — "तुमने मुझे धोखे में क्यों रखा? गाय से सवेरे पाँच सेर दूध भी तो नहीं उतरा।"

हीरासिंह ने कहा — "मैंने खुद पंद्रह सेर से ऊपर दूध दुहकर आपको दिया था।"

सेठ जी ने कहा — "तो जाकर गाय को देखो।"

हीरासिंह गाय के पास गया। पुचकारकर कहा — "सुंदरिया, मेरी रुसवाई क्यों कराती है?"

गाय ने मुँह ऊपर उठाया मानो पूछ रही हो — "बोलो मुझे क्या करना है?"

हीरासिंह ने घोसी से कहा — "बालटी लाओ।"

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

घोसी ने कहा — "मैं तो पहले ही दुह चुका हूँ।"

"पर तुम बालटी तो लाओ।" हीरासिंह बोला।

उसके बाद साढ़े तेरह सेर दूध उसके तले से तोलकर हीरासिंह ने घोसी को दे दिया। कहा — "यह दूध सेठ जी को दे देना।" फिर गाय के गले पर सिर रखकर बोला — "सुंदरिया, देख... मेरी ओछी मत करा। मैं दूर हूँ तो क्या! इसमें मुझे सुख है?"

गाय मुँह झुकाए वैसी ही खड़ी रही। दूसरे दिन फिर वही हुआ। लाख कोशिश के बाद भी गाय ने पूरा दूध नहीं दिया। सेठ जी ने हीरासिंह को बुलाकर कहा — "क्यों हीरासिंह, यह क्या है? यह तो सरासर धोखा है।" हीरासिंह चुप रहा।

सेठ जी ने कहा — "ऐसा ही है तो ले जाओ अपनी गाय और मेरे रुपए वापस करो।"

लेकिन रुपए हीरासिंह गाँव भेज चुका था। उसमें से काफी रुपया मकान की मरम्मत में लग गया था। अब सेठ जी को देने के लिए रुपए कहाँ से लाए?

उसे चुप देख, सेठ जी बोले — "अच्छा, तनख्वाह में से रकम कटती जाएगी। जब पूरी हो जाएगी तो अपनी गाय ले जाना।"

अगले दिन सवेरे बहुत-सा दूध ड्योढ़ी में बिखरा हुआ था। उससे पहली शाम गाय ने दूध देने से बिलकुल इनकार कर दिया था।

सेठ जी ने पूछा — "हीरा, यह क्या बात है?" हीरासिंह सिर झुकाकर रह गया।

फिर उसने पूछा — "रात गाय खुली तो नहीं रह गई थी? आप इसकी खबर तो लीजिए।"

© NCERT not to be republished

घोसी को बुलाकर पूछा गया तो उसने कहा — "कल रात मैंने गाय को खुद खूँटे से बाँधा था।"

हीरासिंह ने कहा — "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। गाय रात को आकर ड्योढ़ी में खड़ी रही है और अपना दूध गिरा गई है।"

सेठ जी बोले — "ऐसी मसनूई बातें औरों से कहना। जाओ, खबर लगाओ कि वह कौन आदमी है, जिसकी करतूत है?"

हीरासिंह चुपचाप अपनी कोठरी में जाकर लुढ़क गया। कब आँख लगी, कुछ पता नहीं। रात को अचानक लगा कि दरवाजे की ओर से रगड़ की आवाज आई। उठकर दरवाजा खोला। देखा, सुंदरिया खड़ी है। मुँह ऊपर उठाकर सुंदरिया उसे अपराधी की आँखों से देख रही थी। मानो क्षमा याचना कर रही हो। जैसे कहती हो — 'मैं अपराधिनी हूँ। लेकिन मुझे क्षमा कर देना। मैं बड़ी दुखिया हूँ।'

देखकर हीरासिंह विह्वल हो उठा। उसके आँसू रोके न रुके। वह सुंदरिया की गर्दन से लिपट देर तक सिसकता रहा।

अगले सवेरे उसने सेठ जी से कहा — "आप मुझसे जितने महीने चाहें कसकर चाकरी करवाएँ, पर गाय आज ही यहाँ से गाँव चली जाएगी। रुपए जब आपके चुकता हो जाएँ, मुझसे कह दीजिएगा। तब मैं भी छुट्टी कर लूँगा।"

और सेठ जी कुछ कहें, इससे पहले ही हीरासिंह गाय को लेकर चल दिया।

–जैनेंद्र कुमार

शिक्षण-संकेत – इस कहानी में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जो प्रारंभिक हिंदी में प्रचलित थे। उदाहरण के लिए सिपुर्द, रुसवाई, मसनूई आदि। इनका अर्थ क्रमशः सौंपना, अपमान और बनावटी है। शिक्षक, बच्चों को ऐसे अन्य शब्द उनके अर्थ सहित शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़ने तथा वाक्यों में प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें।

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. जवाहरसिंह अपनी गाय को मौसी कहकर बुलाता है। आप अपने घर या आस-पास के पशु-पक्षियों को क्या कहकर पुकारते हैं?
2. सुंदरिया के दूर चले जाने के बाद जवाहरसिंह को कैसा लगा होगा? जब आपका कोई प्रिय आपसे दूर हो जाए तो आपको कैसा लगता है?
3. जवाहरसिंह सुंदरिया की देखभाल के लिए क्या-क्या करता होगा?
4. आप अपने आस-पास के पशु-पक्षियों के लिए क्या-क्या करते हैं?

पाठ से

नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर (☺) का चिह्न बनाइए। प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी सही हो सकते हैं—

1. लोग सुंदरिया को देखकर ईर्ष्या क्यों करते थे?

   (क) सुंदरिया को खाने-पीने को बहुत कुछ मिलता था। ☐

   (ख) सुंदरिया बहुत आकर्षक थी। ☐

   (ग) सुंदरिया बहुत दूध देती थी। ☐

   (घ) सुंदरिया सभी से प्रेम करती थी। ☐

2. हीरासिंह के मन में सुंदरिया को बेचने की बात क्यों आई?

   (क) सुंदरिया सभी को परेशान करने लगी थी। ☐

   (ख) सुंदरिया के लिए चारे का प्रबंध करना कठिन हो गया था। ☐

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(ग) सुंदरिया हीरासिंह के घर नहीं रहना चाहती थी।

(घ) सुंदरिया पड़ोसियों को परेशान करती थी।

3. हीरासिंह ने स्वयं को गाय की नौकरी पर लगाने की बात क्यों कही?

(क) सुंदरिया को ठीक से चारा नहीं मिलता था।

(ख) वह गाय से बिछोह सहन नहीं कर पा रहा था।

(ग) उसे रुपयों की आवश्यकता थी।

(घ) गाय घोसी के व्यवहार से प्रसन्न नहीं थी।

4. गाय घोसी के साथ क्यों नहीं जाना चाहती थी?

(क) गाय हीरासिंह और उसके परिवार से अलग नहीं होना चाहती थी।

(ख) गाय को भय था कि घोसी उसे स्नेह से नहीं पालेगा।

(ग) गाय को अपने गाँव के सभी लोगों की याद आ रही थी।

(घ) गाय बीमार थी और चल नहीं पा रही थी।

सोचिए और लिखिए

1. हीरासिंह गाय को बेचने से क्यों डर रहा था?
2. सेठ हीरासिंह की गाय को देखकर क्यों प्रसन्न हुआ?
3. "तुमने मुझे धोखे में क्यों रखा?" सेठ ने हीरासिंह से ऐसा क्यों कहा?
4. सेठ के कुछ कहने से पहले ही हीरासिंह गाय को लेकर क्यों चल दिया?

© NCERT not to be republished

सुंदरिया और हीरासिंह

1. कहानी में सुंदरिया की बहुत-सी विशेषताओं का पता चलता है। उन विशेषताओं को नीचे लिखिए। आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण दिया जा रहा है—

वह बहुत आकर्षक है।

.....

.....

.....

.....

.....

2. अब आप हीरासिंह की विशेषताओं को अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

समझ और अनुभव

1. क्या आपको लगता है कि पशु-पक्षी भी हमारी भावनाएँ समझते हैं? कोई अनुभव साझा कीजिए।
2. जवाहरसिंह सुंदरिया को मौसी कहकर क्यों संबोधित करता होगा?
3. हम देखते हैं कि नगरों में बड़े पशुओं (गाय, भैंस, ऊँट आदि) को पालतू बनाने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है। आपको इसके क्या कारण लगते हैं?
4. पशु-पक्षी मनुष्य की तरह बोल तो नहीं पाते परंतु वे भी आपस में अपनी बातें करते होंगे। क्या आप इस बात से सहमत हैं? अपने उत्तर के लिए उदाहरण भी दीजिए।

अनुमान और कल्पना

1. गाय का नाम 'सुंदरिया' किसने एवं क्यों रखा होगा?
2. हीरासिंह के घर से सुंदरिया की विदाई के दृश्य की कल्पना कीजिए।
3. सुंदरिया को वापस घर लेकर जाते हुए हीरासिंह को कैसा लग रहा होगा एवं क्यों?

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए मुहावरों का प्रयोग कहानी में किया गया है। कहानी में इन्हें ढूँढ़िए और इनके अर्थ लिखकर अपनी लेखन-पुस्तिका में वाक्य बनाइए—

- लाज से गड़ जाना
- दूध देने में कामधेनु
- जी भर जाना
- एकटक देखना
- आँख लगना

2. नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। वाक्यों में रेखांकित शब्द से मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द चुनकर वाक्य पुनः लिखिए—

(क) सुंदरिया की सुंदरता से कई लोगों को जलन होती थी। (प्रसन्नता/ईर्ष्या)

(ख) वहाँ की गायें अच्छी होती हैं। एक गाय का बंदोबस्त कर दो। (प्रबंध/संकेत)

(ग) सुंदरिया मेरी रुसवाई क्यों कराती है? (प्रशंसा/अपमान)

(घ) सुंदरिया को देखकर हीरासिंह विह्वल हो उठा। (भावुक/प्रसन्न)

(ङ) आप मुझसे जितने महीने चाहें, कसकर चाकरी करवाएँ। (नौकरी/बागवानी)

3. कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ आया? अपने विचार समूह में साझा कीजिए—

(क) रुपए तो ले लिए लेकिन हीरासिंह का जी भरा जा रहा था।

(ख) गाय की नौकरी पर मुझे लगा दीजिए। चाहे तनख्वाह कम कर दीजिए।

(ग) गाय ने उसकी ओर देखा। जैसे पूछना चाहती थी— "क्या सचमुच ही इसके साथ चली जाऊँ?"

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(घ) फिर गाय के गले पर सिर रखकर बोला — "सुंदरिया, देख... मेरी ओछी मत करा। मैं दूर हूँ तो क्या! इसमें मुझे सुख है?"

4. रेखांकित शब्द किसके लिए प्रयोग किए गए हैं? पहचानकर लिखिए—

(क) उसे एक सेठ के यहाँ चौकीदार की नौकरी मिल गई। – हीरासिंह के लिए

(ख) उसे देखकर लोगों को ईर्ष्या होती थी। – .....

(ग) वह कैसे बताए कि सुंदरिया उसके परिवार का अंग है। – .....

(घ) सचमुच वैसी सुंदर, स्वस्थ गाय उन्होंने अब तक न देखी थी। – .....

(ङ) गाय उसके साथ जाना ही नहीं चाहती थी। – .....

पाठ से आगे

1. नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। इनको देखते हुए अपने समूह में चर्चा कर यह सुझाइए कि हम पशु-पक्षियों के लिए क्या-क्या कर सकते हैं। आप इनके अतिरिक्त भी कुछ और बिंदु जोड़ सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

2. आपके घर में दूध कहाँ से आता है? यह भी पता कीजिए कि किन-किन पशुओं का दूध पीने के लिए उपयोग किया जाता है।
3. किसी गौशाला अथवा दुग्ध उत्पादन केंद्र (डेयरी फार्म) का भ्रमण कर पता कीजिए कि पशुओं का लालन-पालन कैसे किया जाता है। आप इस गतिविधि में शिक्षकों एवं अभिभावकों की सहायता ले सकते हैं।

कल्पना की उड़ान

सेठ के घर से लौटकर जाते हुए हीरासिंह सुंदरिया को बहुत प्यार करता है, उसको सहलाता है एवं उससे बातें करता है। यदि सुंदरिया भी बोल सकती तो कल्पना कीजिए कि सुंदरिया और हीरासिंह के बीच क्या बातचीत होती।

.....
.....

.....
.....

.....
.....

.....
.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

नाटक-मंचन

आपने ‘सुंदरिया’ कहानी पढ़ी। इस कहानी को नाटक के रूप में बदलकर कक्षा में अपने समूह के साथ नाटक-मंचन कीजिए।

बूझो पहेली

राग सुरीला रंग से काली,
सबके मन को भाती।
बैठ पेड़ की डाली पर जो,
मीठे गीत सुनाती।

जल-थल दोनों में है रहता,
धीमी जिसकी चाल।
खतरा पाकर सिमट जाए झट,
बन जाता खुद ढाल।

लकड़ी का एक ऐसा घर,
जो है जल में चलता।
सबको अपने साथ बिठाकर,
पार सभी को करता।

© NCERT not to be republished

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

इस पाठ में दूध की मात्रा को ‘सेर’ द्वारा दर्शाया गया है जो मापन की एक प्राचीन भारतीय इकाई थी। इसी प्रकार वस्तुओं की मात्रा के मापन की और भी प्राचीन भारतीय इकाइयाँ प्रचलित थीं। आप पुस्तकालय से मापन से संबंधित पुस्तकें ढूँढ़कर मापन की अन्य प्राचीन भारतीय इकाइयों का पता लगाइए। इसके लिए आप अपने शिक्षक और अभिभावक की भी सहायता ले सकते हैं। कक्षा में सहपाठियों के साथ इसे साझा कीजिए।

Reprint 2026-27

भूल-भुलैया

जवाहरसिंह ने सुंदरिया के बारे में जानने के लिए अपने पिता हीरासिंह को पत्र लिखा है। महिला डाकिया उस पत्र को हीरासिंह तक पहुँचाना चाहती है। आपको इस पहेली को हल करते हुए उसे बाहर निकालना है ताकि वह हीरासिंह तक पहुँच सके।

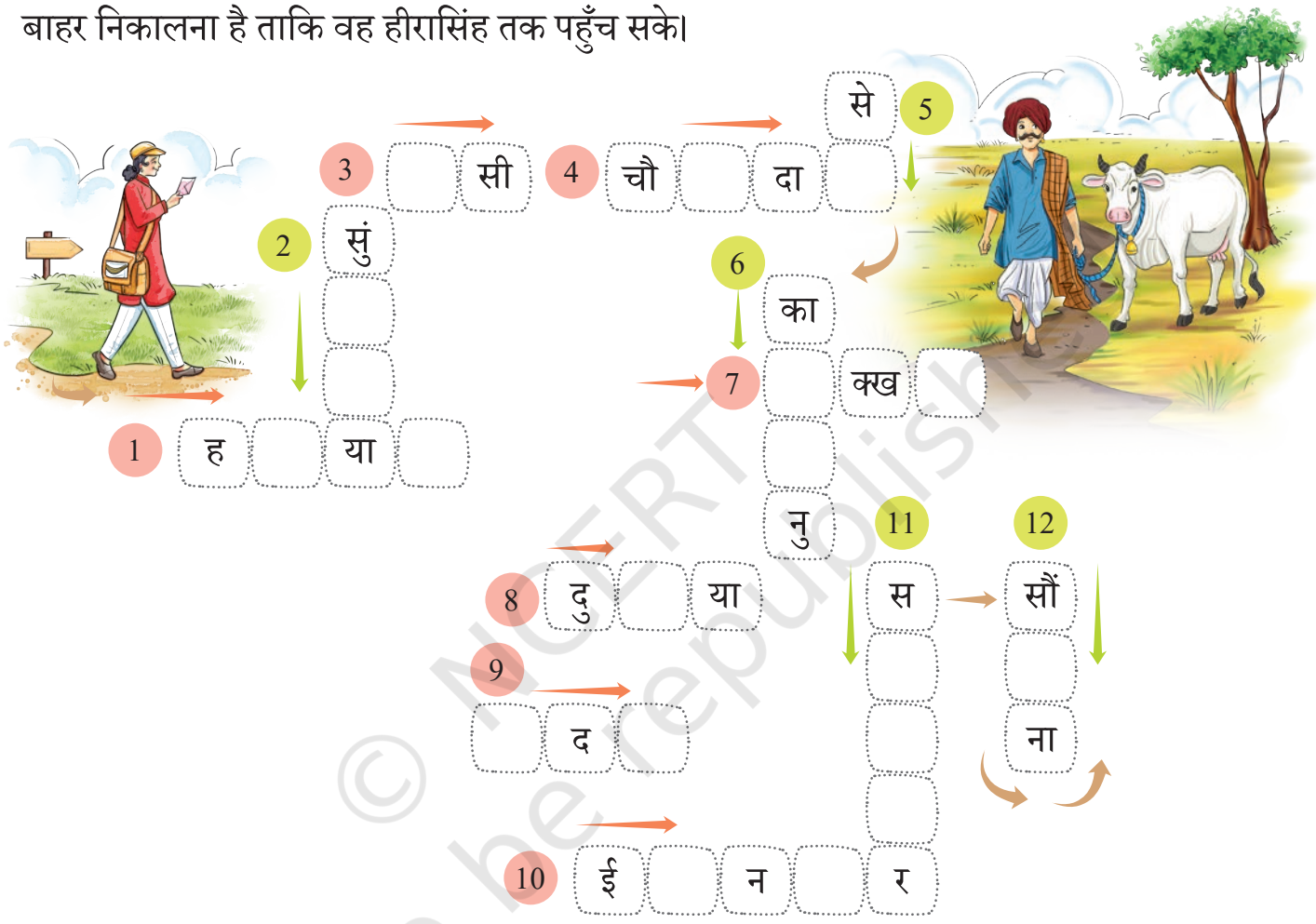

बाएँ से दाएँ का सूचक

1. हीरासिंह कहाँ रहता था?
3. जवाहरसिंह सुंदरिया को क्या कहा करता था?
4. सेठ के यहाँ हीरासिंह को कौन-सी नौकरी मिली?
7. दूध से क्या बनता है?
8. सुंदरिया ने स्वयं को क्या कहा?
9. सुंदरिया सेठ को दिखने में कैसी लगी?
10. हीरासिंह कैसा व्यक्ति था?

ऊपर से नीचे का सूचक

2. गाय का नाम क्या था?
5. मापन की एक प्राचीन इकाई।
6. सुंदरिया को क्या कहा गया है?
11. 'दार' प्रत्यय से एक शब्द बनाइए।
12. 'सिपुर्द' का अर्थ क्या है?

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

हाथी और चींटी

आपने कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक 'वीणा' में चींटी और हाथी की छुपन-छुपाई का आनंद लिया होगा। आइए, अब उनके साथ कुश्ती देखने चलते हैं।

एक बार की बात है, चींटी रानी अपनी फटफटिया मोटर साइकिल पर बैठकर कुश्ती देखने जा रही थी। रास्ते में मिले, हाथी भाई। हाथी भाई ने हाथ दिखाया तो चींटी रुक गई और बोली, "क्या हाल है, हाथी भाई? क्यों रोका?" हाथी बोला, "मैं सोच रहा था कि मेरे जैसे पहलवान को छोड़कर तुम्हें अकेले कुश्ती देखने में आनंद नहीं आएगा।"

चींटी ने कहा, "ठीक है पहलवान भाई, पीछे बैठ जाइए।" हाथी के बैठते ही चींटी ने सरपट फटफटिया दौड़ा दी। न जाने कहाँ से कोई रोड़ा रास्ते में आ गया। फटफटिया पलट गई। हाथी के सिर पर बहुत चोट लगी पर चींटी को मामूली-सी खरोंच भर आई। सोचिए, चींटी को चोट क्यों नहीं आई?

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

चींटी बनें हाथी नहीं। ट्रैफिक नियमों का पालन करें। आप क्या-क्या कर सकते हैं—

चलने के लिए सड़क के किनारे बनी पटरियों का उपयोग करें। यदि आपको सड़क पार करनी हो तो सावधानी बरतें। लाल बत्ती होने की प्रतीक्षा करें। जब लाल बत्ती जलती है, तब वाहनों को रुकना होता है। आप सड़क के दोनों ओर देखें तथा जेब्रा क्रॉसिंग के चिह्न पर चलकर सड़क पार करें। यदि आप अपने अभिभावकों के साथ हों तो उनका हाथ अवश्य पकड़ें। सड़क पार करते समय न तो बातचीत करें और न ही दौड़ें, वरना ध्यान भटक सकता है।

अब आप नीचे दिए गए सड़क संकेतों (रोड साइन) को पहचानिए और समझिए—

यातायात संकेतक

पैदल क्रॉसिंग

रुकिए

हेलमेट पहनिए

सुरक्षा पेटी अनिवार्य है

फुटपाथ पर चलें

© NCERT not to be republished

६

0531CH06

चतुर चित्रकार

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र,
इतने ही में वहाँ आ गया, यम राजा का मित्र।

उसे देखकर चित्रकार के, तुरंत उड़ गए होश,
नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह न गया कुछ जोश।

फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप,
बोला — सुंदर चित्र बना दूँ, बैठ जाइए आप।

उकड़ू-मुकड़ू बैठ गया वह, सारे अंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने, चित्रकार की ओर।

चित्रकार ने कहा — हो गया, आगे का तैयार,
अब मुँह आप उधर तो करिए, जंगल के सरदार।

© NCERT not to be republished

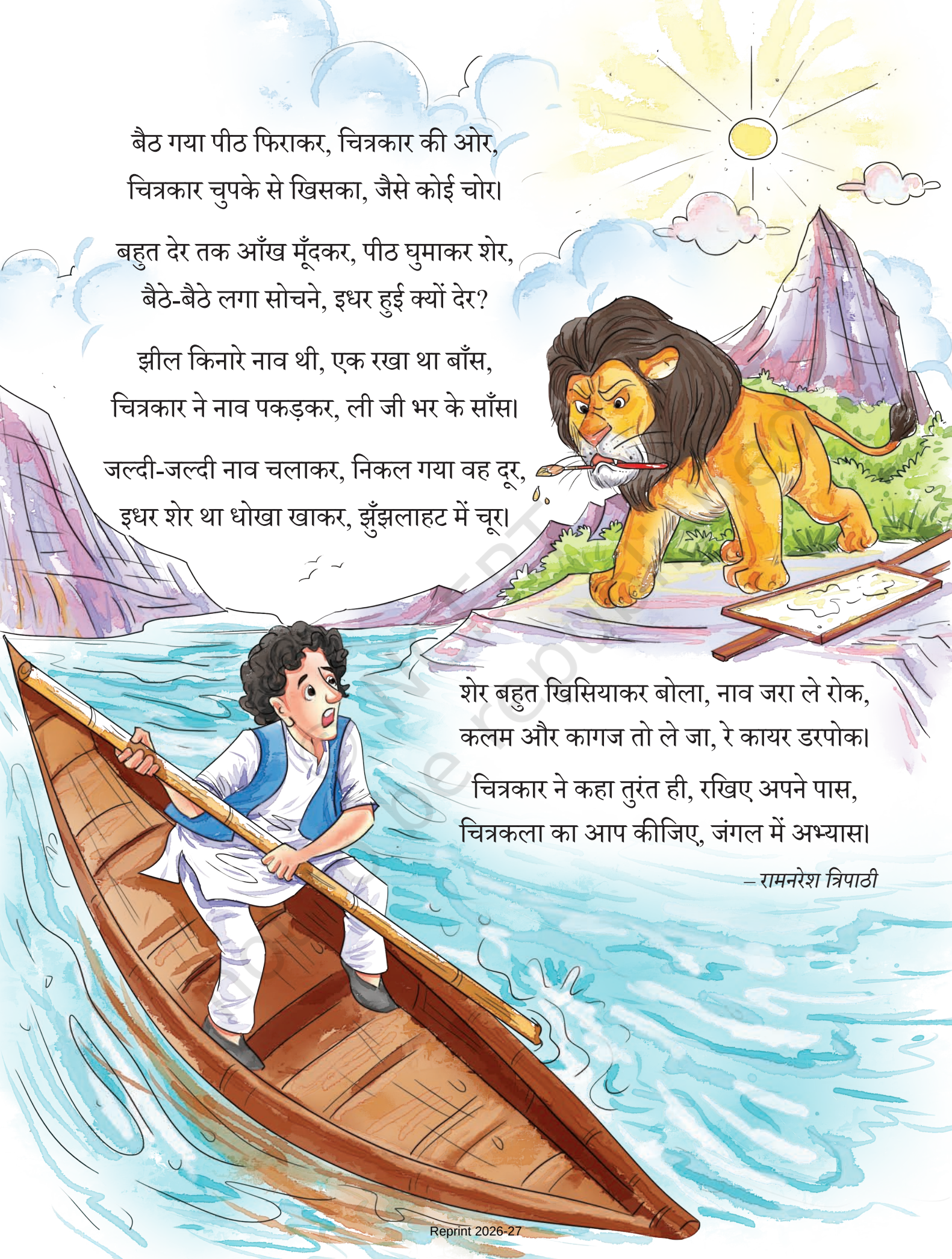

बैठ गया पीठ फिराकर, चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर।

बहुत देर तक आँख मूँदकर, पीठ घुमाकर शेर,
बैठे-बैठे लगा सोचने, इधर हुई क्यों देर?

झील किनारे नाव थी, एक रखा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भर के साँस।

जल्दी-जल्दी नाव चलाकर, निकल गया वह दूर,
इधर शेर था धोखा खाकर, झुँझलाहट में चूर।

शेर बहुत खिसियाकर बोला, नाव जरा ले रोक,
कलम और कागज तो ले जा, रे कायर डरपोक।

चित्रकार ने कहा तुरंत ही, रखिए अपने पास,
चित्रकला का आप कीजिए, जंगल में अभ्यास।

– रामनरेश त्रिपाठी

बातचीत के लिए

1. चित्रकार की कौन-सी विशेषता आपको सबसे अधिक अच्छी लगी और क्यों?
2. शेर ने चित्रकार को 'कायर-डरपोक' कहा। क्या आपको लगता है कि चित्रकार वास्तव में कायर और डरपोक था या वह चतुर और समझदार था? अपने उत्तर का कारण बताइए।
3. आपके अनुसार ऐसे कौन-कौन से कार्य हैं जिनका निरंतर अभ्यास करने से उनमें कुशलता बढ़ जाती है?
4. यदि झील के किनारे नाव न होती तो चित्रकार शेर से अपनी जान बचाने के लिए क्या उपाय करता?

पाठ से

नीचे दिए गए प्रश्नों के सबसे उपयुक्त उत्तरों पर तारे का चित्र (★) बनाइए —

1. चित्रकार ने जंगल के किस स्थान पर चित्र बनाना शुरू किया?

(क) नदी के किनारे ☐ (ख) सुनसान जगह ☐

(ग) पेड़ों के नीचे ☐ (घ) पहाड़ की चोटी पर ☐

2. यमराज का मित्र किसे कहा गया है?

(क) शेर को ☐ (ख) चित्रकार को ☐

(ग) नाविक को ☐ (घ) शिकारी को ☐

3. चित्रकार ने शेर से अपने प्राण कैसे बचाए?

(क) धैर्य और चतुराई से ☐ (ख) क्रोध और शक्ति से ☐

(ग) डर और घबराहट से ☐ (घ) अहंकार और गर्व से ☐

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

4. चित्रकार ने शेर को पीठ फेरकर बैठने के लिए क्यों कहा?

(क) ताकि वह शेर की पीठ का चित्र बना सके।

(ख) ताकि वह भागने की योजना पूरी कर सके।

(ग) ताकि शेर आराम से बैठ सके।

(घ) ताकि शेर के साथ आँख-मिचौनी खेल सके।

सोचिए और लिखिए

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए —

1. चित्रकार जिस वातावरण में चित्र बना रहा था, उसका वर्णन कीजिए।
2. चित्रकार ने शेर को जंगल में चित्रकला का अभ्यास करने के लिए क्यों कहा होगा?
3. आपको इस कविता की कौन-सी घटना सबसे रोचक लगी?
4. चित्रकार ने शेर से बचने के लिए क्या किया?

अनुमान और कल्पना

1. चित्रकार ने शेर को 'जंगल के सरदार' नाम से क्यों पुकारा होगा?
2. यदि चित्रकार जंगल में रुक जाता और शेर से मित्रता करने का प्रयत्न करता तो क्या होता?
3. यदि शेर को भी चित्रकला में रुचि होती तो वह कौन-से चित्र बनाना पसंद करता?
4. यदि चित्रकार के स्थान पर आप होते तो शेर से बचने के लिए क्या करते?

© NCERT not to be republished

भाषा की बात

1. कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इनमें छिपे मुहावरे पहचानिए और उनके नीचे रेखा खींचिए —

(क) "उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश।"

(ख) "नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह न गया कुछ जोश।"

(ग) "चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भर के साँस।"

(घ) "इधर शेर था धोखा खाकर, झुँझलाहट में चूर।"

2. अब इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए अपने मन से नए-नए वाक्य बनाइए।

3. नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए —

- इतने ही में वहाँ आ गया, यम राजा का मित्र।
- चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर।
- जल्दी-जल्दी नाव चलाकर, निकल गया वह दूर।

इन पंक्तियों में जिन शब्दों के नीचे रेखा खींची गई है, वे क्रिया शब्द हैं जिन्हें 'आने' या 'जाने' के कार्य को बताने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

- 'आ गया' शब्द का प्रयोग अचानक आने को दर्शाने के लिए किया गया है।
- 'खिसका' शब्द 'धीरे-धीरे हटने' या 'बिना किसी को पता लगे' जाने का भाव प्रकट करता है।
- 'निकल गया' शब्द तेजी से दूर जाने का संकेत देता है।

'आने' और 'जाने' के कार्य को बताने के लिए इसी प्रकार के अनेक क्रिया शब्दों का प्रयोग किया जाता है। आगे दिए गए ऐसे ही क्रिया शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए —

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

आने के लिए क्रिया शब्द	जाने के लिए क्रिया शब्द
आना – वह मेरे पास आया।	निकल पड़ना – मैं साहसिक यात्रा के लिए निकल पड़ा।
पहुँचना –	रवाना होना – .....
दाखिल होना –	उड़ना – .....
प्रवेश करना –	फिसलना – .....
उपस्थित होना –	खिसकना – .....

4. "फिर <u>उसको</u> कुछ हिम्मत आई, देख <u>उसे</u> चुपचाप"

उपर्युक्त पंक्ति को ध्यान से देखिए। यहाँ जिन शब्दों को रेखांकित किया गया है, वे शब्द संज्ञा शब्दों क्रमशः 'चित्रकार' और 'शेर' के लिए प्रयुक्त हुए हैं। आप जानते ही होंगे कि संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले ऐसे शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों को हटाकर उचित सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कीजिए —

(क) फिर <u>शेर को</u> चुपचाप देखकर <u>चित्रकार को</u> कुछ हिम्मत आई। → फिर **उसे** चुपचाप देखकर **उसको** कुछ हिम्मत आई।

(ख) <u>चित्रकार</u> जल्दी-जल्दी नाव चलाकर दूर निकल गया। → ..... जल्दी-जल्दी नाव चलाकर दूर निकल गया।

(ग) <u>चित्रकार</u> नाव में बैठ गया। → ..... नाव में बैठ गया।

© NCERT not to be republished

(घ) शेर बहुत गुस्से में था। → ..... बहुत गुस्से में था।

(ङ) चित्रकार और शेर के बीच वार्तालाप हुआ। → ..... के बीच वार्तालाप हुआ।

कविता से कहानी

1. 'चतुर चित्रकार' कविता में आपने शेर और चित्रकार की कहानी का आनंद लिया। अब इस कहानी को अपने शब्दों में लिखिए।

2. इस कहानी के अंत में चित्रकार नाव में बैठकर दूर चला जाता है। अपनी कल्पना से इस कहानी का अंत बदलकर लिखिए। उदाहरण के लिए —

- चित्रकार शेर से मित्रता कर लेता है।
- शेर चित्र बनाने में चित्रकार की सहायता करता है।

.....

.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

बातचीत

नीचे दी गई शेर और चित्रकार के मध्य बातचीत को अपनी कल्पना से पूरा कीजिए —

अरे जंगल के राजा! आप चुपचाप क्यों बैठे हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

तुलना

चित्रकार और शेर की विशेषताओं की तुलना कीजिए और उचित स्थान पर सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए —

गुण	चित्रकार	शेर
बुद्धिमान	✓	
शक्तिशाली		
डरपोक		
चतुर		
डरावना		
साहसी		
भोला		
जिज्ञासु		

© NCERT not to be republished

पाठ से आगे

1. चित्रकार अपनी चतुराई का प्रयोग करके संकट से बच गया था। क्या कभी आपने किसी संकट का सामना करने के लिए अपनी चतुराई दिखाई है? उस अनुभव को कक्षा में साझा कीजिए।
2. क्या आपने कभी किसी की संकट में सहायता की है? बताइए कि आपने कैसे सहायता की थी।

Reprint 2026-27

चित्रकार का विद्यालय

1. कल्पना कीजिए कि चित्रकार ने जंगल में एक चित्रकला विद्यालय खोला है। आप इस विद्यालय का कोई नाम सुझाइए और इसके बारे में कुछ वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

2. इस विद्यालय के बारे में एक आकर्षक विज्ञापन बनाइए जिसे पढ़कर जंगल के पशु-पक्षियों में इस विद्यालय में प्रवेश लेने की इच्छा जाग जाए।

(जैसे – प्रवेश जारी है। एक अनोखा विद्यालय, आपके पड़ोस में, आइए और सीखिए...)

खोजबीन

अपने अभिभावकों के साथ पशु-पक्षियों से संबंधित भारतीय वृत्तचित्र (डॉक्युमेंट्री) देखिए और उससे प्राप्त जानकारी कक्षा में साझा कीजिए।

जंगल में शांति और सुरक्षा

मान लीजिए, शेर और चित्रकार अच्छे मित्र हैं। वे चाहते हैं कि जंगल में सुख-शांति रहे। आप उन्हें जंगल में शांति के लिए क्या उपाय सुझाएँगे? कम से कम तीन सुझाव अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

(संकेत – ऐसे उपाय सोचिए जिनसे जंगल के पेड़-पौधे, हवा-पानी और पशु-पक्षी सुरक्षित रहें।)

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पुस्तकालय से

पुस्तकालय से अपने शिक्षक की सहायता से *पंचतंत्र* अथवा *हितोपदेश* में से उन कहानियों को ढूँढ़िए जिनमें पशु-पक्षियों और मनुष्यों के मध्य संवाद हों।

आज की पहेली

1. चित्रकार जिस जंगल में गया था, वहाँ कौन-कौन से पेड़ हो सकते थे? आइए इस पहेली से पता लगाते हैं। इस पहेली को इसी कविता के कवि ने रचा है। अपने समूह में मिलकर पहेली बूझिए —

   बाबूलाल मदन मुरलीधर इलाचंद्र हुबलाल।
   गिरिजाशंकर बेनीमाधव दंडपाणि यशपाल।।
   गणपति काशीराम कलापी टहलराम घनश्याम।
   लेकर गए एक से दूने, कितने थे कुल आम?

2. ऊपर दी गई कविता में 12 पेड़ों के नाम छिपे हैं। उन नामों को ढूँढ़िए, जैसे – गणपति, कलापी और टहलराम शब्दों में से 'पीपल' निकलता है। कोई एक अक्षर कई नामों के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है।

© NCERT not to be republished

उत्तर – 1. 16383 आम

2. पेड़ों के नाम — आम, पीपल, नीम, शीशम, जामुन, बबूल, कटहल, महुआ, बेल, इमली, बरगद, कदंब

शिक्षण-संकेत – इस पहेली के उत्तर बच्चों द्वारा अलग-अलग दिए जाने की संभावना है। अत: शिक्षक, धैर्यपूर्वक बच्चों द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों को स्वीकार करें और सही उत्तरों तक पहुँचने में उनकी सहायता करें।

Reprint 2026-27

दो मेंढकों की यात्रा

(जापानी लोककथा)

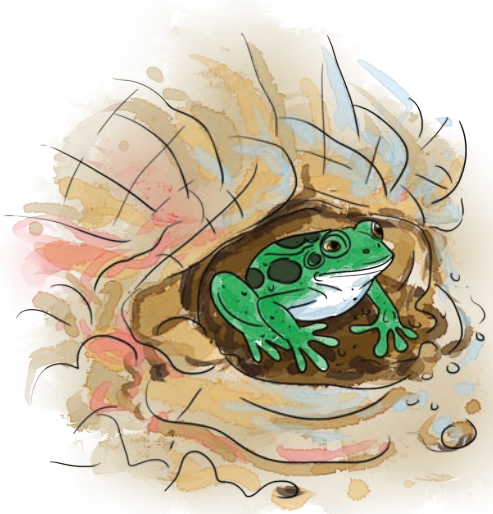

कई वर्ष पूर्व जापान में दो मेंढक रहते थे। उनमें से एक मेंढक ओसाका के पास एक खड्ड में रहता था जबकि दूसरा मेंढक क्योटो के पास बहने वाली एक नदी में निवास करता था।

एक दिन उन दोनों मेंढकों के दिमाग में एक साथ एक विचार आया। उन्होंने सोचा, 'इस जगह पर रहते हुए हमें बहुत दिन हो गए हैं। अब हमें यहाँ से निकलकर बाहर का संसार भी देखना चाहिए।'

यह संयोग ही था कि क्योटो के पास रहने वाले मेंढक ने ओसाका जाने का निश्चय किया जबकि ओसाका में रहने वाले मेंढक ने क्योटो जाने का निर्णय किया।

अगले ही दिन दोनों मेंढकों ने अपनी-अपनी यात्रा प्रारंभ कर दी। क्योटो और ओसाका शहरों को जोड़ने वाला एक ही मार्ग था। दोनों ही मेंढक उसी मार्ग पर अपनी-अपनी मंजिल की ओर चल दिए।

मार्ग में एक स्थान पर दोनों मेंढकों की भेंट हो गई। उन्होंने एक-दूसरे से हाथ मिलाया और फिर आपस में बातचीत करने लगे। तभी ओसाका के मेंढक ने क्योटो के मेंढक से पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो, मित्र?" क्योटो के मेंढक ने उत्तर दिया, "मैं ओसाका जा रहा हूँ।"

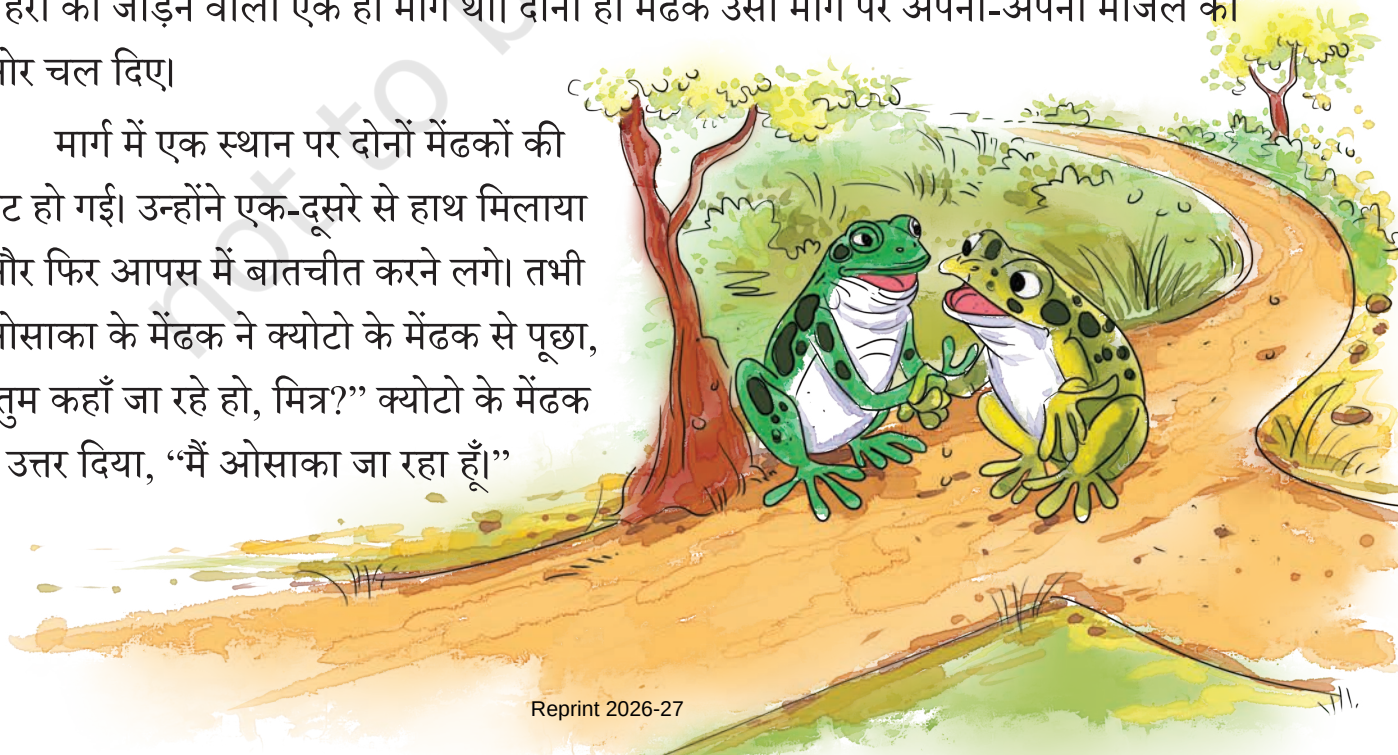

© NCERT not to be republished

यह सुनते ही ओसाका का मेंढक प्रसन्न होकर बोला, "क्या बात है! मैं क्योटो जा रहा हूँ।"

दोनों ही मेंढक चलते-चलते बहुत थक चुके थे इसलिए उन्होंने थोड़ा आराम करने का निश्चय किया। फिर वे पास ही स्थित एक बड़ी चट्टान की छाया में जा बैठे।

तभी ओसाका का मेंढक बोला, "कितना अच्छा होता, अगर हमारा आकार थोड़ा बड़ा होता।" क्योटो के मेंढक ने आश्चर्य से पूछा, "आकार बढ़ने से क्या होता?"

ओसाका के मेंढक ने उत्तर दिया, "तब हम आसानी से किसी पहाड़ पर चढ़कर उन शहरों को देख लेते, जहाँ हम जा रहे हैं। फिर हमें यह भी पता लग जाता कि वे शहर देखने लायक हैं भी या नहीं!"

यह सुनकर क्योटो का मेंढक बोला, "इसमें कौन-सी बड़ी बात है। यह कार्य तो हम अभी भी कर सकते हैं।" "वह कैसे?" ओसाका के मेंढक ने आश्चर्य से पूछा। क्योटो के मेंढक ने उसे समझाते हुए कहा, "यह कार्य तो बहुत आसान है। यदि हम पास के पहाड़ पर चढ़कर एक-दूसरे का सहारा लेते हुए अपने पिछले पैरों पर खड़े हो जाएँ तो फिर हम आसानी से उन शहरों को देख सकेंगे, जहाँ हम जाना चाहते हैं।"

ओसाका का मेंढक क्योटो की झलक देखने के लिए इतना उत्सुक था कि वह दौड़कर पास के पहाड़ पर चढ़ने लगा। यह देखकर क्योटो का मेंढक भी उसके पीछे दौड़ा। फिर वे दोनों उछलते-उछलते पास में ही स्थित एक पहाड़ के शिखर पर जा पहुँचे। दोनों मेंढक अपनी लंबी यात्रा के कारण बहुत

© NCERT not to be republished

थका हुआ अनुभव तो कर रहे थे लेकिन उन्हें इस बात की खुशी भी थी कि वे उन शहरों को देख सकेंगे जिन्हें देखने के लिए वे लंबी यात्रा करके वहाँ तक आए थे।

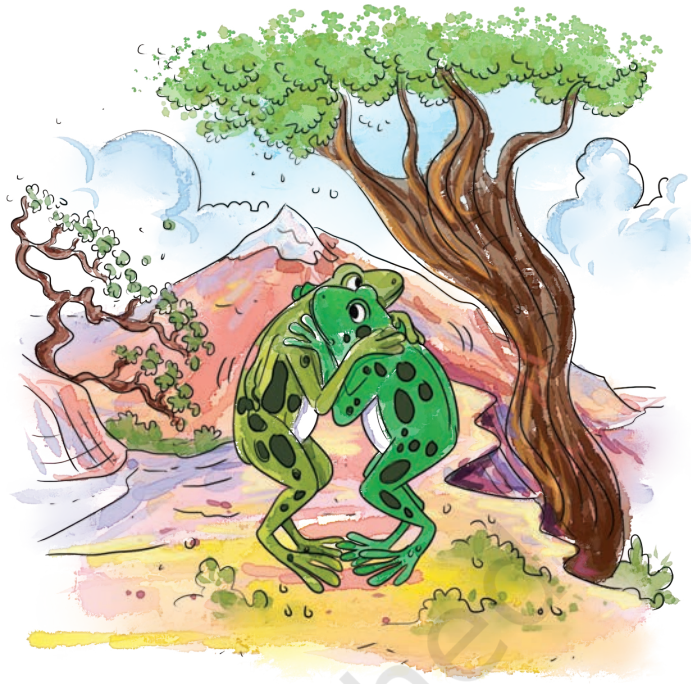

पहाड़ के शिखर पर पहुँचने के बाद ओसाका के मेंढक ने उछलकर अपने अगले पैरों को अपने मित्र के कंधों पर रख दिया। क्योटो के मेंढक ने भी ऐसा ही किया। अब दोनों मेंढक अपने पिछले पैरों पर खड़े थे और उनके अगले पैर एक-दूसरे के कंधों पर थे। उन्होंने एक-दूसरे को कसकर पकड़ रखा था ताकि वे पहाड़ से नीचे न गिर जाएँ। लेकिन उन दोनों ने एक बात की ओर ध्यान ही नहीं दिया था। उन्होंने अपनी पीठ उन्हीं शहरों की ओर कर रखी थी, जिन्हें वे देखना चाहते थे।

इस प्रकार दोनों मेंढकों के गलत तरीके से खड़े होने के कारण ओसाका से आया हुआ मेंढक ओसाका को ही देख रहा था जबकि क्योटो के मेंढक की नजर क्योटो पर ही पड़ रही थी। इस प्रकार दोनों ही मेंढक अपने प्रिय शहरों को नहीं देख पा रहे थे।

तभी ओसाका का मेंढक बोला, "ओह! लगता है, मैंने यहाँ तक आकर अपना समय ही नष्ट किया है। क्योटो तो बिल्कुल ओसाका की तरह ही दिखता है।"

क्योटो से आए मेंढक को भी अनुभव हो रहा था कि ओसाका भी क्योटो की तरह ही है। फिर दोनों मेंढक अपने-अपने घर लौट गए।

(टिनी टॉट पब्लिकेशंस से साभार)

© NCERT not to be republished

7 मेरा बचपन

0531CH07

हाय बचपन! तेरी याद नहीं भूलती। वह कच्चा टूटा घर, वह पयाल का बिछौना, वह नंगे बदन, नंगे पाँव खेतों में घूमना, आम के पेड़ों पर चढ़ना, सारी बातें आँखों के सामने फिर रही हैं।

मैं अपने चचेरे भाई हलधर के साथ दूसरे गाँव में एक मौलवी साहब के यहाँ पढ़ने जाया करता था। मेरी उम्र आठ साल थी, हलधर मुझसे दो साल जेठे थे। हम दोनों प्रातःकाल मटर और जौ का चबेना लेते थे।

रामलीला में भी आनंद आता था। मेरे घर से बहुत थोड़ी दूर पर रामलीला मैदान था। जिस घर में लीला पात्रों का रूप-रंग भरा जाता था, वह तो मेरे घर से बिलकुल मिला हुआ

© NCERT not to be republished

था। दो बजे दिन से पात्रों की सजावट शुरू होने लगती। मैं दोपहर से ही वहाँ जा बैठता। जिस उत्साह से दौड़कर छोटे-मोटे काम करता, उस उत्साह से तो आज अपनी पेंशन लेने भी नहीं जाता।

गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हूँ तो जी लोट-पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लॉन की जरूरत, न कोर्ट की, न थापी की, मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली और दो आदमी भी आ गए तो खेल शुरू हो गया। विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं। पर हम अंग्रेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गई है। हमारे स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ जो बिना दाम, कौड़ी के खेले जाते हैं। ठीक है, गुल्ली से आँख फूट जाने का भय रहता है तो क्या क्रिकेट से सिर टूट जाने का भय

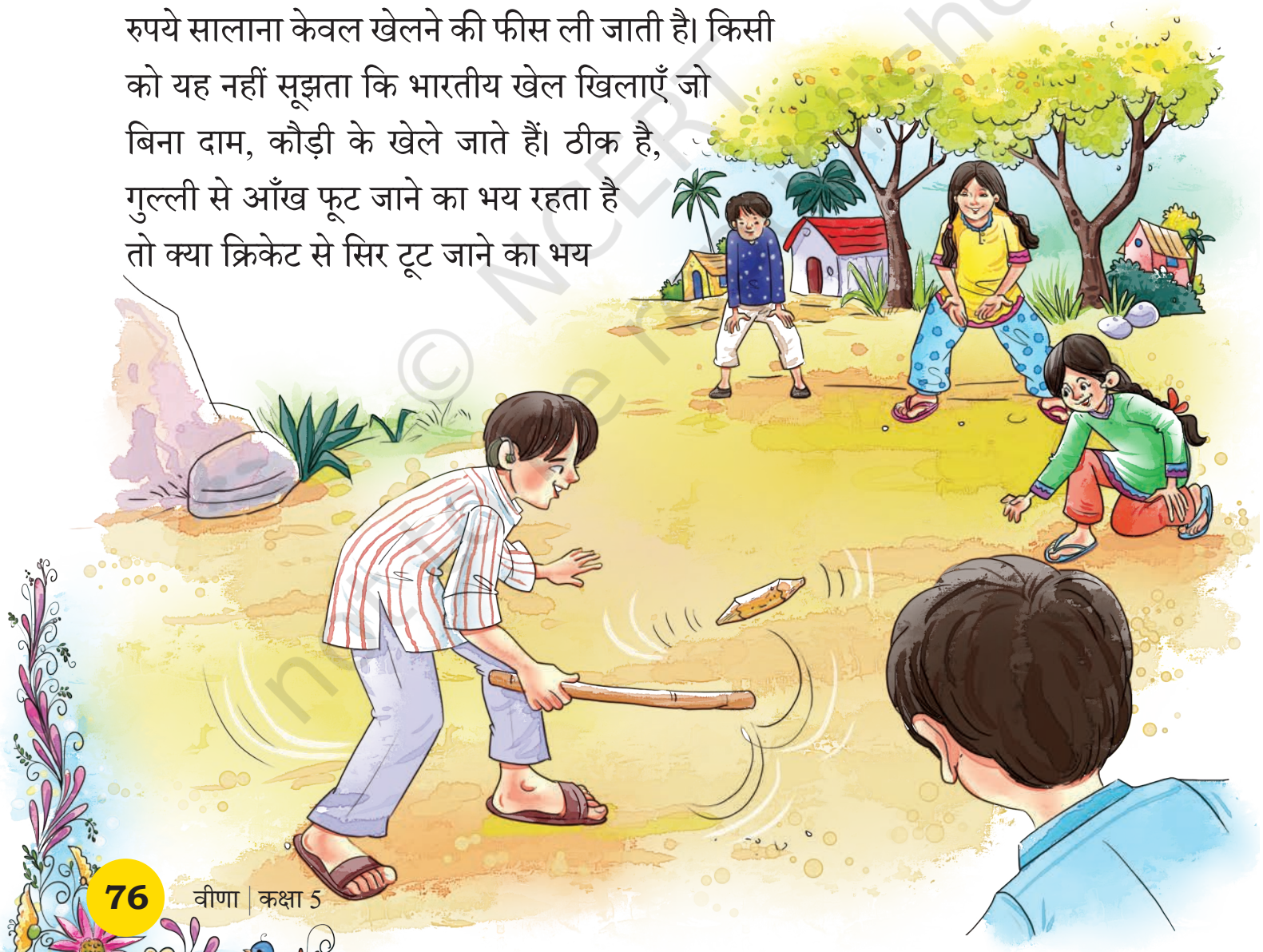

© NCERT not to be republished

नहीं रहता! अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे। खैर, यह तो अपनी-अपनी रुचि है, मुझे गुल्ली ही सब खेलों से अच्छी लगती है। प्रातःकाल घर से निकल जाना, पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली-डंडा बनाना। वह उत्साह, वह लगन, वह खिलाड़ियों के जमघट, वह लड़ाई-झगड़े, वह सरल स्वभाव, अमीर-गरीब का बिलकुल भेद न था, अभिमान की गुंजाइश ही न थी।

घरवाले बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं। न नहाने की सुध है, न खाने की। गुल्ली है जरा-सी, पर उसमें दुनिया भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनंद भरा है।

– प्रेमचंद

(रत्न सागर प्रकाशन से साभार)

बातचीत के लिए

1. लेखक को रामलीला की तैयारियों में कौन-कौन से काम सबसे अधिक उत्साहित करते होंगे?
2. आपको लेखक के बचपन की कौन-कौन सी बातें सबसे अच्छी लगीं? वे बातें आपको अच्छी क्यों लगीं?
3. खेलते समय चोट न लगे, इसके लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?
4. लेखक के पिता और घर के अन्य सदस्य चौके में बैठे-बैठे क्या-क्या बातें करते होंगे?

पाठ से

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

1. लेखक के चचेरे भाई हलधर की आयु कितनी थी?
2. लेखक ने अपने घरवालों के क्रोध का कारण क्या बताया है?
3. लेखक के अनुसार, गुल्ली-डंडा और विलायती खेलों में क्या अंतर है?
4. इस पाठ में लेखक ने अपने बचपन के किन-किन अनुभवों को याद किया है?

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

समझ और अनुभव

1. लेखक के बचपन के कौन-कौन से काम आपने भी किए हैं?
2. लेखक अपने बचपन में खेलने के लिए स्वयं गुल्ली बना लेते थे। आप कौन-कौन से खेल-खिलौने स्वयं बना लेते हैं? किसी एक को बनाकर कक्षा में लेकर आइए और अपने समूह के साथ मिलकर खेलिए।
3. अनेक बच्चे कपड़े धोने के लिए काम में आने वाली 'थापी' को बल्ले की तरह उपयोग कर लेते हैं। आप अपने घर या पास-पड़ोस की किन वस्तुओं को खेल-खिलौने की तरह उपयोग में लेते हैं?
4. लेखक बचपन में अनेक काम उत्साह से दौड़-दौड़कर किया करते थे। आप कौन-से काम बहुत उत्साह से करते हैं?

मिलान कीजिए

नीचे दिए गए चित्रों का उनके उपयुक्त विवरण से मिलान कीजिए—

- एक समुद्री कीड़े का खोल जिसे पुराने समय में मुद्रा की तरह उपयोग करते थे।
- काठ का चपटे और चौड़े सिरे का डंडा
- भ्रमण करना अथवा इधर-उधर चलना
- चबाकर खाने के लिए भुना हुआ अनाज

© NCERT not to be republished

खान-पान

1. लेखक सवेरे-सवेरे सबसे पहले मटर और जौ का चबेना खाते थे। 'चबेना' के बारे में नीचे दी गई जानकारी पढ़िए—

गुणकारी स्वादिष्ट चना-चबेना

चना-चबेना प्रायः हम उस खाद्य-सामग्री को कहते हैं जो चबाकर खाई जाती है। मकई, चिउड़ा, भेल, कई तरह के भुने हुए दाने, भुने हुए चावल, चना, मटर और मुरमुरे, भुना हुआ हरा व उबला चना, दर्जनों ऐसी खाद्य-सामग्रियाँ हैं जो हम भारतीय चाहे देश के किसी भी कोने में रहते हों, किसी-न-किसी रूप में चबाते हैं। कई प्रकार की कचरियाँ, कुरकुरे, पापड़, नमकीन, ये भी चबेनों का ही हिस्सा हैं। लेकिन ये घरेलू कम व सामान्यतः बाजार से मिलने वाले उत्पाद हैं जिनमें स्वाद तो बहुत होता है लेकिन ये शरीर के लिए उतने स्वास्थ्यवर्धक नहीं होते जितने घर के बने चबेने होते हैं।

ऐसे बनाया जाता है चना-चबेना

देश के विभिन्न स्थानों में चना-चबेना विशेष ढंग से बनाया जाता है। चना-चबेना में मटर, चना, सूखा चना, मिर्च-अदरक, प्याज-लहसुन, मक्का, पोहा, लाई, मूँगफली आदि खाद्य सामग्रियाँ सम्मिलित होती हैं। सबसे पहले इन सभी को कड़ाही में नमक डालकर भली प्रकार भून लिया जाता है। भुनने के बाद उसमें हल्का तेल मिलाया जाता है। मिर्च की चटनी के साथ प्याज और लहसुन भी मिलाया जाता है। इनसे चना-चबेना का स्वाद बढ़ जाता है।

2. आप दिन भर क्या-क्या खाते-पीते हैं? एक सूची बनाइए—

.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

आइए जानें

"मैं **दोपहर** से ही वहाँ जा बैठता।" 'दोपहर' शब्द बना है 'पहर' से। 'पहर' का अर्थ होता है— दिन का चौथा भाग या तीन घंटे का समय।

1. एक दिन और एक रात में कुल मिलाकर कितने पहर होते हैं?

.....

2. नीचे दिन के चार पहर दर्शाए गए हैं। आप इन पहरों में क्या-क्या करते हैं, लिखिए या चित्र बनाइए—

प्रातः 6 बजे से 9 बजे

9 बजे से 12 बजे

12 बजे से 3 बजे

3 बजे से 6 बजे

© NCERT not to be republished

तमाशा

"गुल्ली है जरा-सी, पर उसमें दुनिया भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनंद भरा है।" तमाशा का अर्थ है — वह दृश्य जिसे देखने से मनोरंजन हो, जैसे – मेला, नौटंकी आदि। नीचे दिए गए नामों को पढ़िए। इनमें से कौन-कौन से तमाशे आपने देखे हुए हैं? उन पर घेरा बनाइए —

कठपुतली का खेल

नाटक

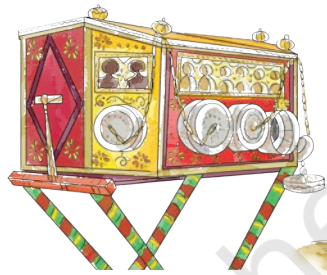

बाइस्कोप

करतब

रामलीला

आपने पाठ में 'रामलीला' के बारे में पढ़ा है। हमारे देश में और अन्य देशों में भी दीपावली के आस-पास स्थान-स्थान पर 'रामलीला' का आयोजन किया जाता है। आप भी अपनी कक्षा या विद्यालय में रामलीला का मंचन कीजिए। इसके लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं —

- आप विद्यालय की वर्दी में भी रामलीला का मंचन कर सकते हैं। किसी अतिरिक्त वस्तु या कपड़ों की आवश्यकता नहीं है।
- पूरी रामकथा का मंचन संभव न हो तो प्रत्येक कक्षा या समूह भिन्न-भिन्न दृश्यों को प्रस्तुत कर सकता है।
- आप अपने संवाद स्वयं बना सकते हैं।
- इस कार्य में आप अपने अभिभावकों, शिक्षकों और पुस्तकालय की सहायता भी ले सकते हैं।

शिक्षण-संकेत – नाटक-मंचन की प्रक्रिया में कई स्तरों पर चुनौतियाँ आती हैं। इसलिए शिक्षक, रामलीला के लिए रामायण की किसी विशेष घटना का चयन, पात्रों की संवाद-रचना, भावों के प्रकटीकरण तथा उपलब्ध संसाधनों में ही व्यवस्था करने में बच्चों की सहायता करें।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

भाषा की बात

"विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं।"

इस वाक्य में कुछ शब्दों के नीचे रेखा खींची गई है। इन पर ध्यान दीजिए। यहाँ 'विलायती', 'बड़ा' और 'महँगे' शब्द क्रमशः 'खेल', 'ऐब' तथा 'सामान' की विशेषता बता रहे हैं। आप जानते ही हैं कि 'खेल', 'ऐब' तथा 'सामान' संज्ञा शब्द हैं।

अब पाठ में से कुछ अन्य विशेषण तथा संज्ञा शब्द चुनकर नीचे लिखिए—

विशेषण	संज्ञा
विलायती	खेल
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

प्राथमिक चिकित्सा पेटी

कावेरी को कबड्डी खेलते हुए चोट लग जाती है। उसकी मित्र नीलोफर सभी से प्राथमिक चिकित्सा पेटी (फर्स्ट ऐड बॉक्स) माँगती है लेकिन वह किसी के पास नहीं थी। कावेरी को डॉक्टर के पास ले जाने के बाद नीलोफर सभी को प्राथमिक चिकित्सा पेटी दिखाती है और उसमें रखी हुई वस्तुओं तथा दवाइयों के बारे में बताती है।

अब आप प्राथमिक चिकित्सा पेटी में रखी जाने वाली उन वस्तुओं व दवाइयों की एक सूची बनाइए जिनके बारे में नीलोफर ने सभी को बताया होगा। आप भी अपने लिए एक प्राथमिक चिकित्सा पेटी तैयार कीजिए। इसके लिए आप अपने सहपाठियों तथा अभिभावकों की सहायता ले सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

आपके खेल

1. ऐसे अनेक खेल आप सभी खेलते होंगे जिनमें किसी विशेष महँगे सामान की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि जिनकी आवश्यकता पड़ती है, उन्हें आप स्वयं ही बना लेते हैं। ऐसे ही कुछ खेलों के चित्र नीचे दिए गए हैं। रेखा खींचकर इनके सही नामों से मिलाइए—

खेल का चित्र	खेल का नाम
	कबड्डी
	इकड़ी-दुकड़ी
	लट्टू
	पतंग

आपस में चर्चा कीजिए कि इन खेलों को कैसे खेला जाता है तथा यह भी बताइए कि आपके क्षेत्र में इन्हें क्या कहा जाता है।

2. उन आनंदमयी खेलों की एक सूची बनाइए जो आप अपने दिव्यांग मित्रों के साथ खेल सकते हैं। आप इस कार्य में मित्रों, शिक्षकों एवं अपने अभिभावकों की भी सहायता ले सकते हैं।

पुस्तकालय से

अपने पुस्तकालय में जाकर प्रेमचंद की लिखी कहानियाँ पढ़िए तथा कक्षा में उनके बारे में चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

इन्हें भी जानिए

सन् 1944 में महाराष्ट्र में जन्मे मुरलीकांत राजाराम पेटकर भारत के एक प्रसिद्ध पैरालंपिक तैराक के रूप में जाने जाते हैं। पैरालंपिक खेल दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए समय-समय पर आयोजित होने वाला ओलंपिक खेलों का कार्यक्रम है। पेटकर भारतीय सेना के एक जवान थे। सन् 1965 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय कई गोलियाँ लगने के कारण वे लकवाग्रस्त हो गए। उन्होंने चिकित्सकों की सलाह पर तैराकी शुरू कर दी। कुश्ती, हॉकी आदि खेलों में बचपन से ही रुचि रखने वाले मुरलीकांत पेटकर ने अपनी लगन और परिश्रम से कुछ ही समय में तैराकी में प्रवीणता प्राप्त कर ली। वे 1972 के हाइडिलबर्ग पैरालंपिक में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाने वाले दिव्यांग तैराक बने। तत्पश्चात सन् 2018 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया।

पता लगाइए

अब आप चित्र में दिखाई गई प्रसिद्ध पैरालंपिक महिला खिलाड़ी के बारे में पता लगाइए। इसके लिए आप अपने अभिभावकों, शिक्षकों अथवा अन्य स्रोतों की सहायता ले सकते हैं।

© NCERT not to be republished

8 काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा

0531CH08

प्रिय बच्चो,

यह पत्र मैं तुम्हें काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से लिख रहा हूँ।

काजीरंगा उद्यान असम में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित है। यहाँ विभिन्न प्रकार के पशु व पक्षी हैं। आज सुबह ही हम हाथियों पर चढ़कर उद्यान देखने गए। इसके लिए हमें बहुत सवेरे उठना पड़ा— तब सूरज भी नहीं निकला था।

उद्यान में सैकड़ों पशु थे। हिरण और जंगली भैंसों के कई झुंड आराम से घास चर रहे थे। उनमें कुछ एक सींग वाले गैंडे भी थे। इसी पशु के कारण काजीरंगा पूरे संसार में प्रसिद्ध हो गया है।

हिरणों और भैंसों ने हमें संदेह की दृष्टि से देखा और अलग हट गए। पर गैंडे वहीं जमे रहे। हमने एक सींग वाला गैंडा पहली बार देखा। यह हाथी के बाद भारत का सबसे बड़ा पशु है। इसको इंडियन राइनो (भारतीय गैंडा) भी कहते हैं। यह केवल भारत और नेपाल के जंगलों में पाया जाता है।

इंडियन राइनो (भारतीय गैंडे) के शरीर पर मोटी तह होती है, जैसे वह कवच पहने हो। इस पर हमारे महावत ने एक रुचिकर कथा सुनाई।

© NCERT not to be republished

भगवान कृष्ण ने एक बार सोचा कि हाथी के बदले गैंडे को रणक्षेत्र में भेजा जाए। उन्होंने उसे कवच पहनाकर अभ्यास कराया। पर गैंडा निर्देशों का पालन न कर सका। बस भगवान कृष्ण ने कवच सहित ही उसे वापस वन में भेज दिया।

सैकड़ों वर्ष पहले इंडियन राइनो (भारतीय गैंडे) पश्चिम में पेशावर से लेकर पूर्व में असम तक पाए जाते थे। पर लोगों ने राइनो के सींग पाने के लिए उनका शिकार किया। लोग यह मानते थे कि सींग में औषधि-संबंधी गुण हैं। बाद में वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि सींग में ऐसा कुछ नहीं है। इंडियन राइनो (भारतीय गैंडों) का शिकार इतनी अधिक संख्या में हुआ है कि अब उनकी संख्या कम हो गई है। इनमें आधे से अधिक काजीरंगा में रहते हैं। इसीलिए पूरे संसार से पशु-प्रेमी इसे देखने काजीरंगा आते हैं।

हमारा हाथी आगे बढ़ा तो एक मादा राइनो (गैंडा) अपने बच्चे के साथ दिखाई दी। महावत हमें पास नहीं ले गए। उन्होंने कहा कि शिशु साथ में हो तो मादा राइनो (गैंडा) हिंसक हो जाती है। हाथी के पास आने पर वह हमला कर सकती है।

सुबह की यात्रा में हमने हिरणों के अनेक झुंड देखे। काजीरंगा में चार प्रकार के हिरण हैं—भौंकने वाले हिरण, बौने सूअर हिरण, दलदली हिरण और साँभर हिरण। हमें वहाँ जंगली सूअर भी दिखाई दिए।

हमारी यात्रा शीघ्र समाप्त हो गई। मेरा मन अभी भरा नहीं था। अगले दिन सुबह का नाश्ता करके हम फिर निकल पड़े। इस बार हम जीप में गए। साथ में वन संरक्षक भी था।

© NCERT not to be republished

ड्राइवर हमें एक बील यानी झील की ओर ले गया। बील पर सैकड़ों पक्षियों के झुंड थे — पेलिकन (एक जल पक्षी), सारस, बगुला और कलहोन इत्यादि। एक ही स्थान पर इतने सारे पक्षी मैंने कभी नहीं देखे थे। बील के पानी में कुछ ऊदबिलाव भी उछल-कूद कर रहे थे।

लौटते समय तो हमारे भाग्य ही खुल गए। सामने जंगली हाथियों का एक झुंड दिखा। हमें बहुत प्रसन्नता हुई। झुंड में पाँच-छह बच्चे थे। जब तक पूरे झुंड ने रास्ता पार नहीं कर लिया, तब तक एक विशाल हाथी खड़ा निगरानी करता रहा।

काजीरंगा में मांसाहारी रॉयल बंगाल टाइगर भी हैं पर हमें दिखे नहीं। गाइड ने बताया कि उन्हें देखना कठिन है क्योंकि वे रात में ही निकलते हैं।

कुल मिलाकर यह एक अद्‌भुत अनुभव रहा। काजीरंगा में अलग-अलग प्रजाति के पशु शांति और भाईचारे से संग-संग रहते हैं। मेरे मन में यह बात बार-बार उठ रही थी कि क्यों नहीं मानव भी इनकी तरह ही शांतिपूर्वक मिल-जुलकर रहता! हम अपने वन्य-साथियों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। है न!

तुम्हारे चाचा

अरूप

– अरूप कुमार दत्ता

(रत्न सागर प्रकाशन से साभार)

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए। इसमें कौन-से पशु-पक्षी दिखाए गए हैं?
2. आपने इन पशु-पक्षियों को कहाँ-कहाँ देखा है?

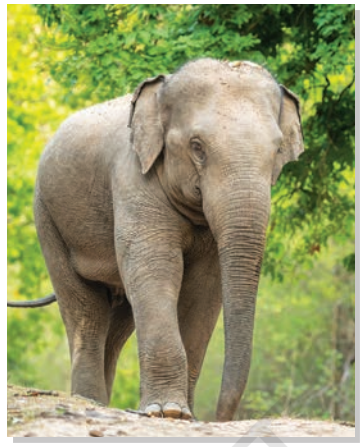

3. इस पाठ में पशुओं के स्वभाव के बारे में क्या-क्या बताया गया है?
4. आप कहाँ-कहाँ की यात्रा पर जाना चाहेंगे और क्यों?

© NCERT not to be republished

पाठ से

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर तारे का चित्र (★) बनाइए। यहाँ एक से अधिक उत्तर भी सही हो सकते हैं।

1. चाचा अरूप को यात्रा के समय किसने संदेह की दृष्टि से देखा?

   (क) गैंडों ने (ख) हिरणों ने

   (ग) भैंसों ने (घ) हाथियों ने

2. काजीरंगा में रॉयल बंगाल टाइगर भी हैं पर उन्हें देखना कठिन है, क्योंकि—

   (क) वे कभी दिखाई नहीं देते।

   (ख) वे बड़े हिंसक होते हैं।

   (ग) वे रात में ही निकलते हैं।

   (घ) वे कभी बाहर नहीं निकलते।

3. एक विशाल हाथी तब तक निगरानी करता रहा जब तक—

   (क) लेखक और उसके मित्र निकल नहीं गए।

   (ख) जीप वहीं खड़ी रही।

   (ग) पूरे झुंड ने रास्ता पार नहीं कर लिया।

   (घ) वहाँ से बाघ चला नहीं गया।

सोचिए और लिखिए

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

(क) यह पाठ एक पत्र है। यह पत्र किसने, किसे और क्यों लिखा है?

(ख) मादा गैंडा कब और क्यों हिंसक हो जाती है?

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(ग) भारतीय गैंडों की संख्या क्यों घट रही है?

(घ) भगवान कृष्ण ने हाथी के स्थान पर गैंडे को रणक्षेत्र में भेजने का विचार क्यों छोड़ दिया?

(ङ) प्रथम दिन की यात्रा के बाद लेखक का मन क्यों नहीं भरा?

2. दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए। यहाँ पक्षी से संबंधित एक प्रश्न दिया गया है। अब आप भी अपनी लेखन-पुस्तिका में इस पक्षी से संबंधित तीन और प्रश्नों का निर्माण कीजिए—

उदाहरण–

यह चित्र किस पक्षी का है?

भाषा की बात

1. कोष्ठक में से उचित शब्द का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) आज ..... ही हम हाथियों पर चढ़कर उद्यान देखने गए। (भोर, सुबह)

(ख) हमने एक सींग वाला गैंडा ..... बार देखा। (पहले, पहली)

(ग) हमारी यात्रा कुछ ..... ही समाप्त हो गई। (धीरे, जल्दी)

(घ) ड्राइवर हमें एक बील यानी झील की ..... ले गया। (और, ओर)

(ङ) मार्गदर्शक (गाइड) ने बताया ..... उन्हें देखना कठिन है। (कि, की)

2. "सामने जंगली हाथियों का एक झुंड दिखा।"

यहाँ 'झुंड' शब्द का प्रयोग हाथियों के समूह के लिए किया गया है। भिन्न-भिन्न समूहों के लिए ऐसे ही कुछ अन्य शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जैसे – अंगूरों का गुच्छा, जूतों की जोड़ी आदि।

© NCERT not to be republished

(क) नीचे दिए गए चित्रों का सही नामों के साथ मिलान कीजिए—

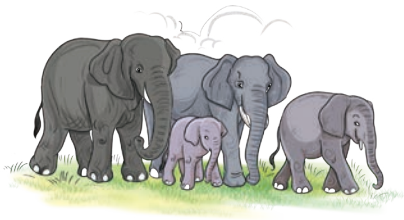

छत्ता

गुच्छा

भीड़

गट्ठर

झुंड

रेवड़

कक्षा

© NCERT not to be republished

(ख) अब मिलान किए गए समूह वाले शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

जैसे – मेले में लोगों की बहुत भीड़ थी।

3. घोड़ा घास खाता है।

घोड़ा शाकाहारी है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में एक ही बात दो प्रकार से व्यक्त की गई है, जैसे – 'घोड़ा घास खाता है' वाक्य में 'घास खाने वाला' वाक्यांश के लिए एक शब्द 'शाकाहारी' का प्रयोग किया गया है। अनेक शब्दों के लिए इस प्रकार के एक शब्द के प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कोई अंतर नहीं आता।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित वाक्यांशों के स्थान पर तालिका में से एक शब्द चुनकर वाक्यों को पुनः लिखिए—

(क) काजीरंगा का सौंदर्य देखने योग्य है।

(ख) रश्मि का कार्य प्रशंसा के योग्य है।

(ग) गौरव को उसके सहपाठी मधुर बोलने वाला लड़का मानते हैं।

(घ) विद्यालय में सप्ताह में एक बार श्रमदान किया जाता है।

(ङ) मेरा बड़ा भाई सैनिक है।

साप्ताहिक
मृदुभाषी
अग्रज
प्रशंसनीय
दर्शनीय

पाठ से आगे

1. इस पत्र में बहुत-से प्राणियों के नाम आए हैं। आप उन प्राणियों को किस नाम से पुकारते हैं? अपने अभिभावकों की सहायता से कुछ पशु-पक्षियों के नाम यहाँ लिखिए—

....

....

© NCERT not to be republished

2. नीचे भारत के मानचित्र में कुछ प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान दर्शाए गए हैं। इसमें दी गई सूचनाओं को समझते हुए दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(क) हाथियों के लिए प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान कौन-से राज्य में स्थित है?

.....

(ख) सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान किस राज्य में स्थित है और यह किसलिए प्रसिद्ध है?

.....

(ग) भारत का सबसे पुराना और प्रथम राष्ट्रीय उद्यान कौन-सा है और यह किस राज्य में स्थित है?

.....

(घ) स्तंभ 'क' और स्तंभ 'ख' का उचित मिलान कीजिए—

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
i. पेरियार राष्ट्रीय उद्यान	i. दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों का घर
ii. एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध	ii. केरल
iii. दुधवा राष्ट्रीय उद्यान	iii. सिमलिपाल राष्ट्रीय उद्यान
iv. ओडिशा	iv. काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
v. कान्हा राष्ट्रीय उद्यान	v. मध्यप्रदेश

यह भी जानें

राष्ट्रीय उद्यान एक ऐसा क्षेत्र है जिसे सरकार द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण के लिए सुरक्षित रखा जाता है। यहाँ उपस्थित पेड़-पौधे, पशु-पक्षी अपनी प्राकृतिक अवस्था में संरक्षित रहते हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान के अनुसार वर्तमान में भारत में 106 राष्ट्रीय उद्यान हैं।

© NCERT not to be republished

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

1. विद्यालय के पुस्तकालय में जाकर भारत के किसी एक पक्षी अभयारण्य के बारे में पढ़िए। अपने समूह में मिलकर वहाँ पाए जाने वाले पशु-पक्षियों के चित्र एकत्रित कर या बनाकर उन्हें अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। आप अपनी प्रस्तुति में निम्नलिखित जानकारी सम्मिलित कर सकते हैं—

(क) पक्षी अभयारण्य क्या है?

(ख) इनकी स्थापना करने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

(ग) वर्तमान में भारत में कुल कितने राष्ट्रीय पक्षी अभयारण्य हैं?

(घ) भारत के पाँच प्रसिद्ध राष्ट्रीय पक्षी अभयारण्य कौन-से हैं?

(ङ) इनमें कौन-से पशु-पक्षी पाए जाते हैं?

इस जानकारी को ढूँढ़ने तथा लिखने के लिए आप पुस्तकालय, अभिभावक या किसी अन्य स्रोत की सहायता भी ले सकते हैं।

2. नीचे दिए गए बादलों में मछली और बंदर का चित्र बनाया गया है। अब आप भी दिए गए बिंदुओं को मिलाकर चित्र पूरा कीजिए और उसमें रंग भरिए—

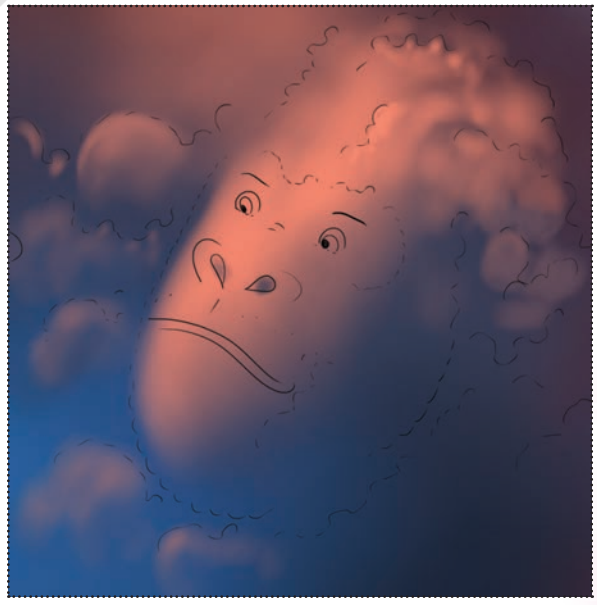

© NCERT not to be republished

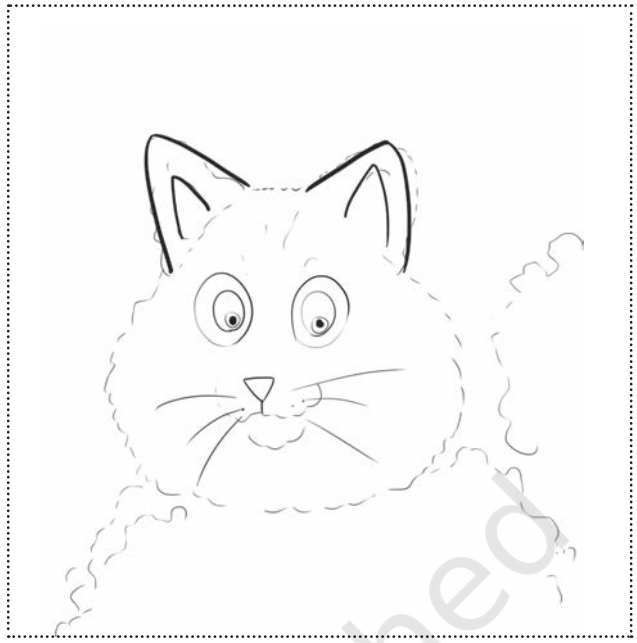

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

घूमो-देखो

लोकतक झील — मणिपुर

मणिपुर राज्य की लोकतक झील भारत की ऐसी एकमात्र ताजा पानी की झील है जो तैरती हुई दिखाई देती है। इस सुंदर झील में घनी जलीय घास के बड़े-बड़े हिस्से तैरते रहते हैं जिन्हें 'फुमदी' कहते हैं। सोचिए! इन फुमदियों पर मछुआरे अपनी झोंपड़ी बनाकर रहते हैं। 'फुमदी' का सबसे बड़ा द्वीप 40 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल का है। इस द्वीप पर भारत तथा विश्व का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क स्थित है जो 'केईबुल लामजाओ' नाम से जाना जाता है। भारतीय वैज्ञानिकों के अनुसार 'फुमदी' में बहु-एंजाइम उत्पादक जीवाणु और पौधों की वृद्धि के लिए उपयोगी रसायन भी मौजूद होते हैं। यहाँ अनेक जलीय पौधे और जानवर बिना संरक्षण के फल-फूल रहे हैं। मणिपुर का राज्य पशु 'संगई हिरण' भी इस क्षेत्र में घूमता हुआ दिख जाता है।

© NCERT not to be republished

हरे-भरे पहाड़ों की नगरी — कूर्ग (कर्नाटक)

कूर्ग या कोडागु, एक बहुत सुंदर पर्यटन स्थल है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह कर्नाटक का एक प्रशासनिक ज़िला है। यहाँ के हरे-भरे पहाड़, घने जंगलों, मसालों और चाय-कॉफी के बागानों से भरे पड़े हैं। इस कारण इसकी सुंदरता अद्‌भुत है। कूर्ग तीन तालुकों (क्षेत्रों) से मिलकर बना है— मदिकेरी, सोमवारपेट और विराजपेट। कूर्ग अपने शांत वातावरण तथा सुंदरता के लिए पर्यटकों के मनपसंद स्थलों में से एक है। यहाँ का मौसम अधिकतर सौम्य ही रहता है। गरमी के मौसम में भी यहाँ का तापमान अधिक नहीं रहता। कूर्ग की मंडलपट्टी पहाड़ी की ऊँचाई से आप आकाश में घूमते बादलों को समीप से देखने का आनंद उठा सकते हैं।

कूर्ग कावेरी नदी का उद्‌गम स्थान भी है। यहाँ के ब्रह्मगिरि तथा पुष्पगिरि अभयारण्य अनेक दुर्लभ पशु-पक्षियों के घर हैं, जैसे– एशियाई हाथी, चित्तीदार हिरण, सांभर हिरण, गौर (भारतीय बाइसन) आदि पशु तथा ग्रे होर्नबिल, नीलगिरि फ्लाईकैचर, पन्ना कबूतर आदि पक्षी।

© NCERT not to be republished

९ न्याय

0531CH09

पात्र परिचय

सिद्धार्थ - कपिलवस्तु के राजकुमार
शुद्धोदन - कपिलवस्तु के महाराजा
सखा - सिद्धार्थ का मित्र
देवदत्त - सिद्धार्थ का चचेरा भाई
मंत्री - महाराजा का मंत्री
प्रतिहारी

पहला दृश्य

(रंगमंच पर राज-उद्यान का एक दृश्य। संध्याकाल। मंच पर लालिमा। किरणें चित्र बनाती हैं। पुष्प झूमते हैं। दूर नेपथ्य में वन से लौटती गायों का स्वर उठता हुआ। पक्षी विदा का गान गाते हैं। उद्यान में इस समय कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ प्रसन्न मन एक वेदी पर बैठे हैं। पास ही उनका एक सखा है। दोनों बातें कर रहे हैं।)

सिद्धार्थ - देखो मित्र! कैसा सुहावना समय है! कैसी शांति है! पक्षी लौट रहे हैं। वे अपने बच्चों से मिलने को व्याकुल हैं और गायें अपने बछड़ों को प्यार करने के लिए उतावली हो रही हैं।

(गायों के बछड़े-बछियों के रँभाने के स्वर उठते हैं।)

सखा - हाँ कुमार! सुनो, बछड़े कैसे स्नेह से पुकार रहे हैं। भला कुमार, वे कैसे जानते हैं कि यह समय उनकी माँओं के घर लौटने का है?

© NCERT not to be republished

सिद्धार्थ - तुम्हारी बात तो ठीक है, पर मित्र, देखो न, जब भोजन का समय होता है तो हमें अपने आप भूख लग आती है।

सखा - हाँ कुमार! यह बात तो है। सोने के वक्त नींद भी आ जाती है।

सिद्धार्थ - ऐसा कैसे हो जाता है मित्र! बड़े अचरज की बात है।

सखा - अचरज तो है ही। देखो न, सूरज रोज सवेरे पूरब से निकलता है और शाम को पश्चिम में छिप जाता है।

सिद्धार्थ - और गरमी हर साल एक ही समय पर शुरू होती है। पानी भी हर साल नियत समय पर पड़ता है। ऐसा मालूम होता है कि हर वस्तु का एक स्वभाव होता है।

(*पक्षियों के उड़ने की फड़फड़ाहट*)

सखा - (*ऊपर देखते हुए*) हाँ, शायद यही बात है। अरे, अरे कुमार! ऊपर तो देखो, कैसे सुंदर पक्षी हैं।

सिद्धार्थ - (*ऊपर देखते हुए*) अरे मित्र, ये तो राजहंस हैं!

सखा - देखो, इकट्ठे उड़ते हुए ये कैसे अच्छे लगते हैं!

सिद्धार्थ - सचमुच अच्छे लगते हैं। इनकी गरदन तो देखो, कैसे आगे को निकली हुई है, जैसे हवा में तैर रहे हैं।

सखा - और तुम क्या समझते हो कुमार! ये तैर तो रहे ही हैं। पानी पर चलना तैरना कहलाता है और हवा में चलना उड़ना।

© NCERT not to be republished

सिद्धार्थ - (*हँसकर*) सच मित्र! तुम तो बहुत बातें जानते हो।

सखा - (*हँसकर*) पर तुमसे कम। गुरुजी कहते थे कि सिद्धार्थ पिछले जन्म में कोई योगी था।

सिद्धार्थ - (*अचरज से*) सच!

सखा - सच।

सिद्धार्थ - (*ऊपर देखते-देखते*) अच्छी बात है, मैं गुरुजी से पूछूँगा, योगी किसे कहते हैं... अरे मित्र, देखो! यह क्या हुआ?

सखा - (*घबराकर*) क्या हुआ कुमार? अरे, यह किसने तीर चलाया?

सिद्धार्थ - (*उतावला*) और उस पक्षी को देखो... वह किस तेजी से धरती पर गिर रहा है।

सखा - (*उसी तरह*) वह घायल हो गया है। उसकी चीख तो सुनो... और बाकी पक्षी कैसे प्राण लेकर भाग रहे हैं!

(हंस की चीख। उसका भूमि पर आते हुए दिखाई देना। सिद्धार्थ आगे बढ़ते हैं। हंस उनकी गोदी में आ गिरता है। उसके शरीर में तीर लगा हुआ है और खून बह रहा है। कुमार करुणा से भरकर उसे सँभालते हैं।)

सिद्धार्थ - किस निर्दयी ने इस भोले-भाले पक्षी को घायल किया है? इसने किसी का क्या बिगाड़ा था?

© NCERT not to be republished

सखा - यह सुंदर जो है, प्यारा जो लगता है।

सिद्धार्थ - (*तीर निकालते हुए*) क्यों, क्या सुंदर होना पाप है? क्या प्यारा लगना बुरा है? माँ जब मुझसे कहती हैं — सिद्धार्थ, तुम कितने प्यारे हो, तो वे मुझे मारती नहीं बल्कि और भी ज्यादा प्यार करती हैं।

(*तीर निकल जाने पर हंस सुख मानता है और बड़े अनुराग से कुमार की गोदी में चिपक जाता है। कुमार स्नेह से उसके शरीर पर हाथ फेरते हैं।*)

सिद्धार्थ - क्या तुम्हारा मन इसको मारने को चाहता है?

सखा - (*काँपता-सा*) कुमार...

सिद्धार्थ - बताओ सखे! देखो तो, इसकी आँखें कितनी भोली हैं! इसको छूने में कितना स्नेह पैदा होता है!

सखा - (*साँस खींचकर*) नहीं कुमार! मैं इसको नहीं मार सकूँगा।

सिद्धार्थ - तुम ही नहीं मित्र! कोई भी व्यक्ति, जिसके पास हृदय है, इन निर्दोष पक्षियों को नहीं मार सकेगा। लेकिन हाँ, तुम दौड़कर राजवैद्य से मरहम तो ले आओ।

सखा - अभी जाता हूँ।

(*सखा जाता है। तभी कुमार देवदत्त तेजी से आते हैं।*)

देवदत्त - अभी मैंने एक उड़ते हुए हंस को तीर मारकर नीचे गिराया था। मैंने अपनी आँखों से उसे गिरते देखा था। वह इधर कहीं आया है। (*हँसकर*) कुमार, मेरा लक्ष्य अब पूरी तरह सध गया है। कल मैं गुरुजी से कहूँगा तो वे कितने प्रसन्न होंगे! तुम मेरी गवाही दोगे न?

सिद्धार्थ - हाँ, मैं तुम्हारी गवाही दूँगा देवदत्त! तुमने एक निर्दोष पक्षी को मारने का प्रयास किया है। इसका प्रमाण यह हंस है।

(*सिद्धार्थ हंस को आगे बढ़ाते हैं। वह सहसा देवदत्त को देखकर चीखता है और सिद्धार्थ की गोद में दुबक जाता है।*)

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

देवदत्त - अहा, मेरा हंस तुम्हारे पास है। लाओ, इसे मुझे दो।

सिद्धार्थ - क्यों दूँ?

देवदत्त - क्योंकि यह मेरा है।

सिद्धार्थ - इसका प्रमाण?

देवदत्त - प्रमाण! अरे प्रमाण क्या? मैंने इसे मारा है। इसके शरीर में मेरा तीर लगा है।

सिद्धार्थ - तुमने मारा है परंतु मैंने बचाया है... इसलिए यह हंस मेरा है। मैं तुम्हें नहीं दूँगा।

देवदत्त - तुम्हें देना होगा सिद्धार्थ!

सिद्धार्थ - मैं नहीं दूँगा देवदत्त!

देवदत्त - तुम राजकुमार हो इसलिए धौंस जमाना चाहते हो, पर यह न भूलना, मैं भी राजकुमार हूँ।

© NCERT not to be republished

सिद्धार्थ - (*मुस्कुराकर*) मैं कब कहता हूँ तुम राजकुमार नहीं हो। पर उससे क्या होता है? मैं यह हंस तुमको कभी नहीं दूँगा।

(*सखा का प्रवेश। वह अचरज से देवदत्त को देखता है। फिर हंस को मरहम लगाता है। हंस फड़फड़ाता है, गोदी में चिपक जाता है और फिर शांत हो जाता है।*)

देवदत्त - कुमार, मैं हंस लेकर छोड़ूँगा। यह मेरा है।

सिद्धार्थ - देखा जाएगा।

देवदत्त - (*तिलमिलाकर*) कुमार...

सिद्धार्थ - (*शांत स्वर*) ठीक है देवदत्त, मैं विवश हूँ।

सखा - कुमार, क्षमा करें, मैं कुछ निवेदन करूँ?

सिद्धार्थ - कहो मित्र!

सखा - आपका झगड़ा इस प्रकार नहीं सुलझ सकता। मेरा सुझाव है कि हमें महाराज के पास चलना चाहिए।

देवदत्त - (*क्रोध से*) मैं अभी महाराज के पास जाता हूँ। मैं उनसे तुम्हारी शिकायत करूँगा। मैं तब देखूँगा कि तुम मेरा हंस मुझे कैसे नहीं लौटाते!

सिद्धार्थ - आओ मित्र! हम भी चलें। महाराज ही इसका निर्णय करेंगे।

सखा - चलो कुमार!

(*दोनों जाते हैं। परदा गिरता है।*)

दूसरा दृश्य

(मंच पर महाराज शुद्धोदन की सभा का दृश्य। मुख्य-मुख्य मंत्री अपने-अपने आसन पर बैठे हैं। महाराज का आसन कुछ ऊँचा। मंत्री इस समय कुछ निवेदन कर रहे हैं। इसी समय

© NCERT not to be republished

प्रतिहारी प्रवेश करता है। प्रणाम करके वह खड़ा हो जाता है। महाराज पूछते हैं।)

महाराज - क्या है प्रतिहारी?

प्रतिहारी - महाराज की जय हो! राजकुमार देवदत्त आने की आज्ञा चाहते हैं।

महाराज - इस समय! आने दो।

(प्रतिहारी लौटता है। मंत्री फिर कुछ कहने लगते हैं। कुछ ही क्षण में देवदत्त प्रवेश करते हैं।)

देवदत्त - मैं महाराज को प्रणाम करता हूँ।

महाराज - देवदत्त कहो, इस समय कैसे आए? क्या उद्यान में नहीं गए?

देवदत्त - महाराज, मैं आपसे न्याय चाहता हूँ। राजकुमार मेरा हंस नहीं देते।

महाराज - (*मुस्कुराकर*) राजकुमार सिद्धार्थ?

देवदत्त - हाँ महाराज!

महाराज - उसने तुम्हारा हंस छीन लिया है?

देवदत्त - हाँ महाराज! मैंने उड़ते हुए हंस को अपने तीर से मारा था। वह राजकुमार के पास जा गिरा। वे अब उसे नहीं लौटाते। न्याय से वह मेरा है।

महाराज - कुमार अब कहाँ हैं?

देवदत्त - उद्यान में महाराज!

महाराज - प्रतिहारी, कुमार से कहो कि महाराज उन्हें याद करते हैं।

प्रतिहारी - जो आज्ञा महाराज!

(प्रतिहारी प्रणाम करके मुड़ता है कि तभी राजकुमार सिद्धार्थ हंस को गोद में लिए वहाँ प्रवेश करते हैं।)

सिद्धार्थ - सिद्धार्थ आपको प्रणाम करता है महाराज!

सखा - मैं भी महाराज को प्रणाम करता हूँ।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

महाराज - सिद्धार्थ, देवदत्त कहता है कि तुमने उसका हंस छीना है। क्या यह ठीक है? यह जो हंस तुम्हारी गोद में है, क्या यह वही हंस है?

सिद्धार्थ - जी महाराज, वही है।

महाराज - क्या यह देवदत्त का है?

सिद्धार्थ - जी नहीं, यह मेरा है।

देवदत्त - महाराज, यह हंस मेरा है। इसको मेरा तीर लगा है।

महाराज - शांत देवदत्त, क्रोध मत करो। तुम कहते हो कि यह हंस तुम्हारा है क्योंकि तुमने इसका आखेट किया है।

देवदत्त - जी महाराज!

महाराज - क्यों सिद्धार्थ, देवदत्त ठीक कहता है?

सिद्धार्थ - जी महाराज, हंस का आखेट देवदत्त ने किया है।

महाराज - तो फिर तुम कैसे कहते हो कि यह हंस तुम्हारा है?

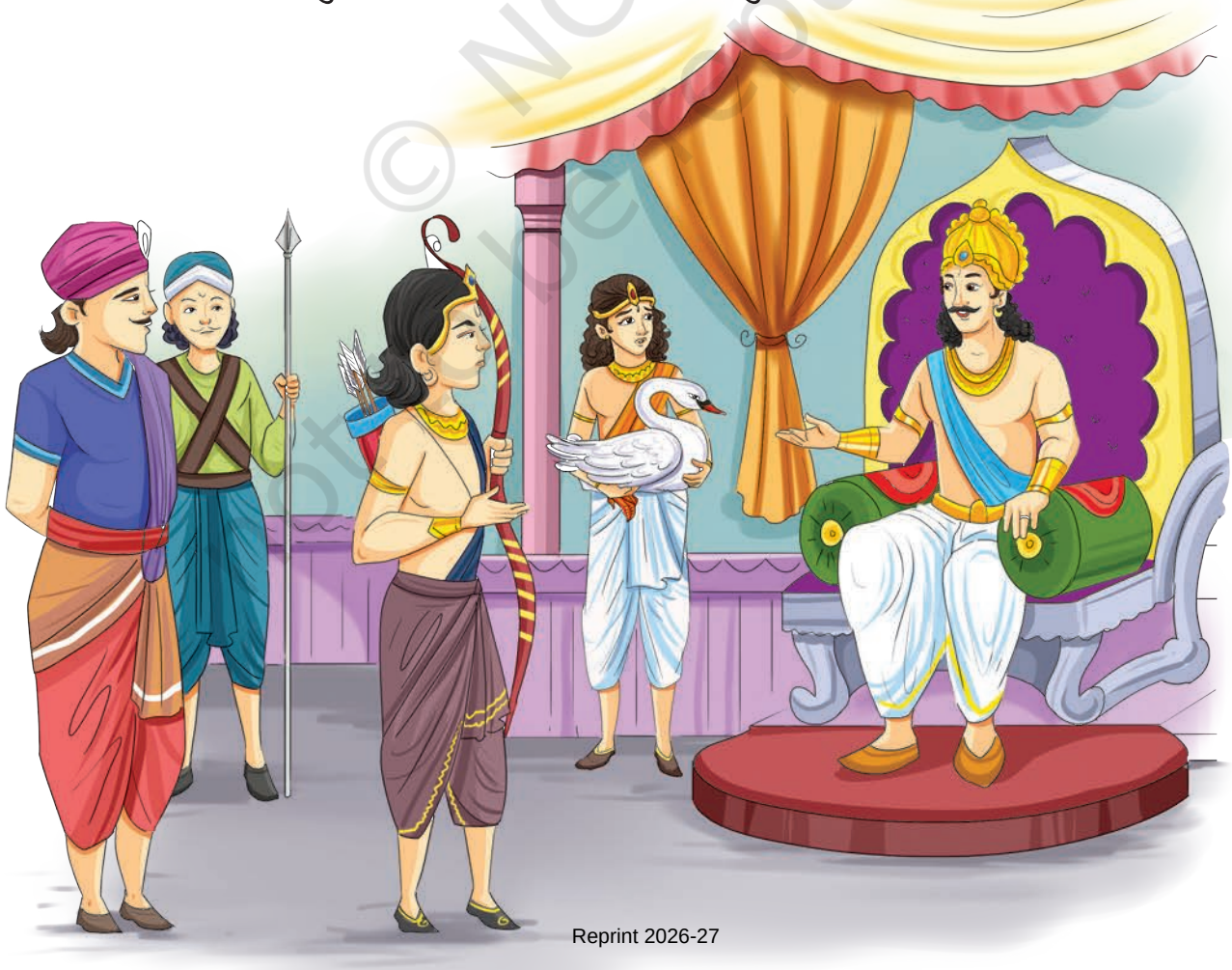

© NCERT not to be republished

सिद्धार्थ - महाराज, देवदत्त ने हंस को मारा है परंतु मैंने उसे बचाया है। बचाने वाला मारने वाले से बड़ा होता है।

(*सभा में हर्ष-ध्वनि*)

महाराज - पर सिद्धार्थ, वीर अपना आखेट नहीं छोड़ सकता।

सिद्धार्थ - ठीक है महाराज! वीर अपना आखेट नहीं छोड़ सकता परंतु वीर शरणागत को भी नहीं छोड़ सकता। हंस मेरी शरण में आ चुका है। मैं उसे नहीं लौटाऊँगा।

(*सभा में फिर हर्ष उमड़ता है। राजकुमार शांत मन से हंस को सहलाते रहते हैं। महाराज की आँखों में स्नेहपूरित गर्व है। देवदत्त तिलमिलाता है।*)

देवदत्त - महाराज! मैंने पहले हंस को मारा है इसलिए वह मेरा है।

सिद्धार्थ - पहले मारा था, तभी तो वह मेरी शरण में आया है। बिना मारे वह मेरी शरण में कैसे आता?

(*सब लोग स्तंभित होकर एक-दूसरे को देखते हैं।*)

महाराज - मंत्री जी! समस्या जटिल है। आप कुछ रास्ता सुझा सकते हैं?

मंत्री - महाराज! समस्या बड़ी आसान है। मुझे आज्ञा दें तो मैं अभी इसका निर्णय किए देता हूँ।

महाराज - (*हर्षित होकर*) नेकी और पूछ-पूछ! मंत्री जी, यही तो हम चाहते हैं।

मंत्री - तो अभी देखिए महाराज! (*मुड़कर*) कुमार देवदत्त! तुम कहते हो कि हंस तुम्हारा है?

देवदत्त - जी हाँ, हंस मेरा है। मैंने उसे तीर मारकर गिराया है।

मंत्री - ठीक है। राजकुमार सिद्धार्थ! तुम कहते हो कि हंस तुम्हारा है?

सिद्धार्थ - जी मंत्री जी, मैंने उसे बचाया है।

मंत्री - ठीक है। राजकुमार, तुम हंस को यहाँ इस आसन पर बैठा दो।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

सिद्धार्थ - जी, बैठाता हूँ।

(राजकुमार आगे बढ़कर हंस को आसन पर बैठा देते हैं। हंस फड़फड़ाता है। राजकुमार उसे पुचकारते हैं।)

सिद्धार्थ - डरो नहीं मित्र! तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। मैं यहीं हूँ।

(पीछे हट जाते हैं।)

मंत्री - कुमार देवदत्त! हंस यहाँ आसन पर बैठा है। तुम इसे बुलाओ तो!

(सभा अचरज से भरकर देवदत्त को देखती है। वह आगे बढ़कर हंस को पुचकारता है।)

देवदत्त - (*पुचकारकर*) आओ... मेरे पास आओ।

(पक्षी डरकर फड़फड़ाता और चीखता है।)

मंत्री - कुमार देवदत्त! हंस तुम्हारे पास नहीं आना चाहता। राजकुमार सिद्धार्थ! अब तुम्हारी बारी है। तुम बुलाओ।

(देवदत्त मुँह लटकाए पीछे हटते हैं और सिद्धार्थ आगे बढ़ते हैं। सभा स्तंभित है।)

सिद्धार्थ - (*प्यार से*) आओ मित्र! मेरी गोद में आ जाओ।

(सिद्धार्थ के कंठ से स्नेहपूरित शब्द निकलते ही हंस एकदम उड़कर उनकी गोद में आ चिपकता है। महाराज के नेत्र सजल हो जाते हैं। मंत्री गंभीर स्वर में कहते हैं—)

मंत्री - देखिए महाराज! पक्षी ने अपने आप इस प्रश्न का निर्णय कर दिया है। वह राजकुमार सिद्धार्थ के पास रहना चाहता है। वह उन्हीं को मिले।

महाराज - मंत्रिवर! हमें तुम्हारा निर्णय स्वीकार है। हम आज्ञा देते हैं कि हंस राजकुमार सिद्धार्थ के पास रहे।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

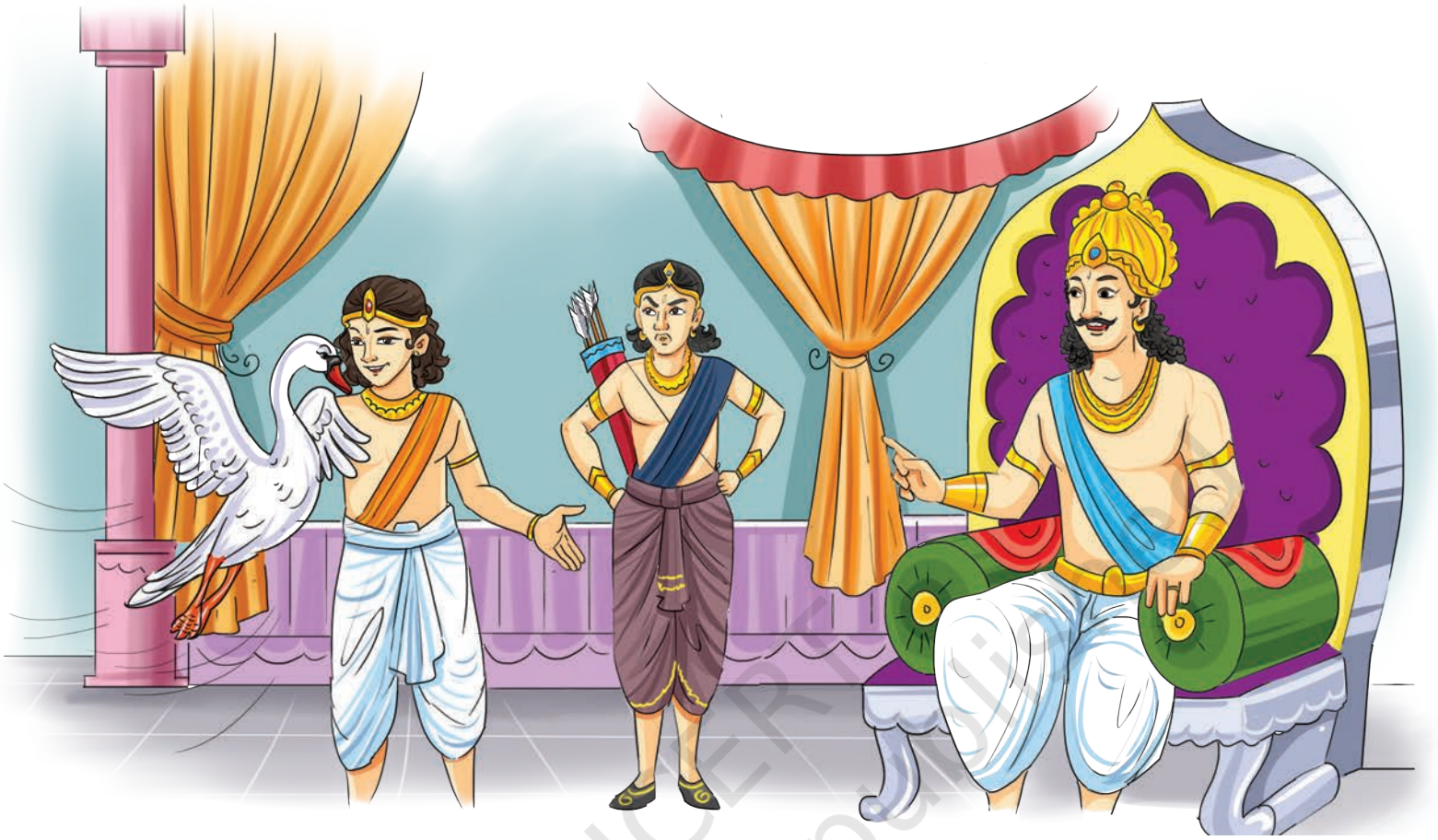

(सभा हर्ष और उल्लास से जय-जयकार करती है। राजकुमार सिद्धार्थ प्रेम से हंस को छाती से चिपकाते हैं। देवदत्त गरदन झुका लेता है। महाराज और मंत्री हर्ष से मुस्कुराते हैं। परदा धीरे-धीरे गिरने लगता है। राजकुमार जाते दिखाई देते हैं। हंस उनकी गोद में ऐसे चिपका है जैसे बच्चा माँ की गोद में चिपक जाता है। परदा पूरा गिर जाता है।)

– विष्णु प्रभाकर

शिक्षण-संकेत – कक्षा को चार समूहों में विभाजित करके सभी समूहों से इस नाटक का मंचन करवाएँ। सदस्य, पात्रों के अनुसार अपनी वेशभूषा में कुछ परिवर्तन कर सकते हैं। नाटक के पात्र संवादों को अपनी स्थानीय भाषा में भी बोल सकते हैं।

Reprint 2026-27

बातचीत के लिए

1. जब शाम होती है तो आपको प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?
2. क्या आपने कभी किसी पशु-पक्षी को बचाया है? उनसे जुड़ा कोई अनुभव साझा कीजिए।
3. यदि आप मंत्री के स्थान पर होते तो न्याय कैसे करते?
4. इस नाटक में सभी पात्र पुरुष हैं। यदि किन्हीं दो पात्रों को महिला पात्र के रूप में प्रस्तुत करना हो तो आप किन्हें बदलकर प्रस्तुत करना चाहेंगे और क्यों?

सोचिए और लिखिए

1. हंस को घायल देखकर सिद्धार्थ ने क्या किया?
2. अंततः हंस सिद्धार्थ को ही क्यों मिला?
3. कहानी को अपने ढंग से प्रवाह चार्ट के रूप में लिखिए—

सिद्धार्थ व उसके सखा का प्रकृति को निहारना।

↓

तीर लगे पक्षी का घायल होकर गिरना।

↓

.....

.....

↓

.....

.....

.....

.....

↓

.....

.....

.....

.....

↓

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

अनुमान और कल्पना

1. जिस समय आकाश में हंस को तीर लगा उस समय उसके अन्य साथियों ने आपस में क्या बातें की होंगी?
2. हंस देवदत्त के पास उड़कर क्यों नहीं गया?
3. राजा शुद्धोदन ने निर्णय के बाद सिद्धार्थ से क्या कहा होगा?
4. एक रात सिद्धार्थ मीठी नींद सो रहे हैं। उनके सपने में हंस आता है और सिद्धार्थ के साथ न्याय वाले दिन का अपना अनुभव सुनाता है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि हंस ने सिद्धार्थ से क्या-क्या बातें की होंगी?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भाषा की बात

1. पाठ में हंस और हँस शब्द आए हैं। हंस में अनुस्वार (ं) का प्रयोग हुआ है और हँस में चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग हुआ है। अब आप इस पाठ में आए अनुस्वार एवं चंद्रबिंदु वाले शब्दों को खोजिए और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए। उनका वाक्यों में भी प्रयोग कीजिए।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

2. रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सूर्य का <u>उदय</u> पूर्व दिशा में और ..... पश्चिम दिशा में होता है।

(ख) उसने <u>मारा</u> है परंतु मैंने ..... है।

(ग) इस <u>निर्दोष</u> पक्षी को मारने वाला ..... है।

(घ) इस <u>जटिल</u> समस्या का हल बहुत ..... है।

3. नीचे दिए गए चित्रों और शब्दों को जोड़कर मुहावरे/लोकोक्ति बनाइए। साथ ही अपनी रुचि के किन्हीं पाँच मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए—

(क) के बहाना।

(ख) मिचौनी खेलना।

(ग) और ग्यारह।

(घ) अक्ल बड़ी या

(ङ) क्या जाने का स्वाद!

(च) होना।

(छ) होना।

(ज) तले दबाना।

(झ) में कूदना।

(ञ) को दिखाना।

शिक्षण-संकेत – शिक्षक, बच्चों द्वारा इन मुहावरों/लोकोक्तियों के जो भी उत्तर आएँ, उन्हें स्वीकार करते हुए बच्चों को सही उत्तर के लिए प्रेरित करें। यदि संभव हो तो कक्षा में इस गतिविधि के अनुसार अन्य मुहावरे/लोकोक्तियाँ भी बनवाई जा सकती हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पाठ से आगे

1. हंस वाली घटना के बाद सिद्धार्थ, देवदत्त को एक संदेश देना चाहते हैं। आपके अनुसार सिद्धार्थ ने देवदत्त को क्या संदेश लिखकर भेजा होगा—

प्रिय भाई देवदत्त

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आपका भाई

सिद्धार्थ

© NCERT not to be republished

2. बगीचे में सुंदर-सुंदर गुलाब के फूल लगे हैं। प्रमोद को ये फूल बहुत सुंदर लगते हैं। वह उन फूलों को तोड़कर अपने पास रख लेता है। करुणा को भी फूल बहुत पसंद हैं। वह प्रतिदिन फूलों को खाद-पानी देकर उनकी देखभाल करने का निर्णय लेती है। आप इन फूलों से अपना प्रेम कैसे दर्शाएँगे एवं क्यों? अपनी कक्षा के साथियों के साथ चर्चा कर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

Reprint 2026-27

3. कुछ पक्षियों की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। कई पक्षी तो ऐसे हैं जो विलुप्त होने की स्थिति में आ गए हैं, उदाहरण के लिए गौरैया। चित्रों के माध्यम से नीचे कुछ ऐसे संकेत दिए गए हैं जो पक्षियों की दिन-प्रतिदिन कम होती संख्या के लिए उत्तरदायी हैं। चित्रों को देखकर अपने सहपाठियों के साथ इन कारणों पर चर्चा कीजिए। यह भी पता लगाइए कि हम इन पक्षियों के बचाव और उनकी संख्या में वृद्धि के लिए कैसे योगदान दे सकते हैं।

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

1. अपने सहपाठियों के साथ पुस्तकालय में जाइए और गौतम बुद्ध से संबंधित जातक कथाओं को पढ़िए।
2. राजा विक्रमादित्य भी अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध थे। राजा विक्रमादित्य के न्याय से जुड़ी कथाओं को पुस्तकालय सहायक एवं सहपाठियों की सहायता से ढूँढ़िए और उन्हें पढ़कर आपस में इन कथाओं पर बातचीत कीजिए।

Reprint 2026-27

3. आपके घर अथवा आस-पास ऐसे कौन-से व्यक्ति हैं जिनके पास लोग अपनी समस्याओं को सुलझाने हेतु सहायता के लिए जाते हैं? उनके बारे में अभिभावकों से पूछिए और कक्षा में साझा कीजिए।

मैं भी सिद्धार्थ

1. नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं जो सहायता, समझदारी और करुणा से संबंधित हैं। कक्षा में अपने समूह में इन पर संवाद कीजिए एवं किसी एक चित्र पर कुछ पंक्तियाँ भी लिखिए।

2. नाटक के प्रथम दृश्य में सिद्धार्थ और उनका सखा राज उद्यान के सौंदर्य का देख-सुनकर आनंद ले रहे हैं। यदि उनका कोई सखा देखने-सुनने में असमर्थ होता तो सिद्धार्थ उसे इस आनंद का अनुभव कैसे करवाते? कक्षा में चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

मेरा पक्षी

अपने अभिभावक और शिक्षक की सहायता से निम्न चित्रों को देखते हुए अपने लिए कागज का एक पक्षी बनाइए—

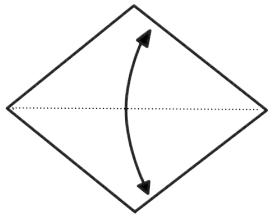

1

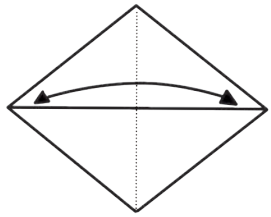

2

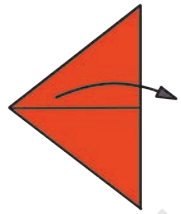

3

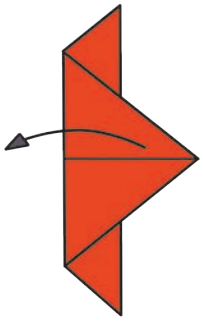

4

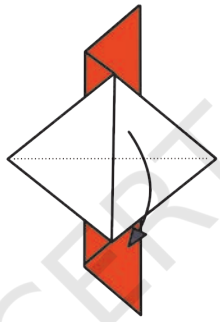

5

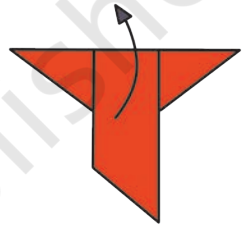

6

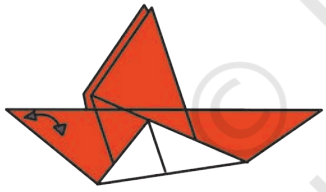

7

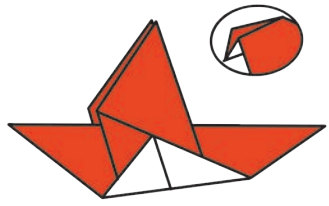

8

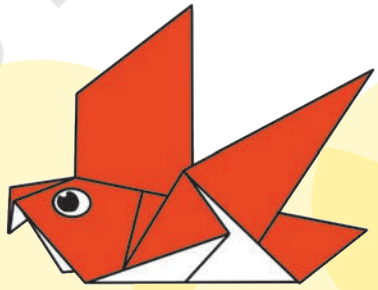

9

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

10

तीन मछलियाँ

0531CH10

बहुत समय पहले की बात है। उत्तर भारत के एक सुंदर सरोवर में तीन मछलियाँ रहती थीं जिनमें गाढ़ी मित्रता थी। तीनों मछलियाँ सरोवर की अन्य मछलियों के साथ मिल-जुलकर विनोद और सैर करती रहती थीं। इनमें से पहली मछली का नाम था अनागतविधाता। वह बहुत बुद्धिमती थी और अपने नाम के अनुसार भविष्य की संभावित समस्याओं का हल पहले से ही निकालकर रखती थी। दूसरी मछली का नाम था प्रत्युत्पन्नमति। जैसा उसका नाम था वैसी ही तीक्ष्ण और तीव्र उसकी बुद्धि थी। वह भविष्य की किसी भी आशंकित समस्या का पहले से समाधान करने की आवश्यकता नहीं समझती थी क्योंकि उसकी सूझ-बूझ इतनी पैनी थी कि वह समय पड़ने पर किसी भी उलझन का हल क्षण भर में निकाल लेती थी। तीसरी मछली का नाम था यद्भविष्य। अपने नाम के अर्थ को वह भी सार्थक करती थी। वह किसी भी संकट की संभावना पर ध्यान नहीं देती थी तथा श्रम और चिंतन से बचती थी। उसका मत था कि यत्न करने और सोचने-विचारने से कोई लाभ नहीं क्योंकि 'जो होना होगा सो तो होगा ही' इसलिए सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ देना चाहिए और निश्चिंत होकर आनंद से रहना चाहिए।

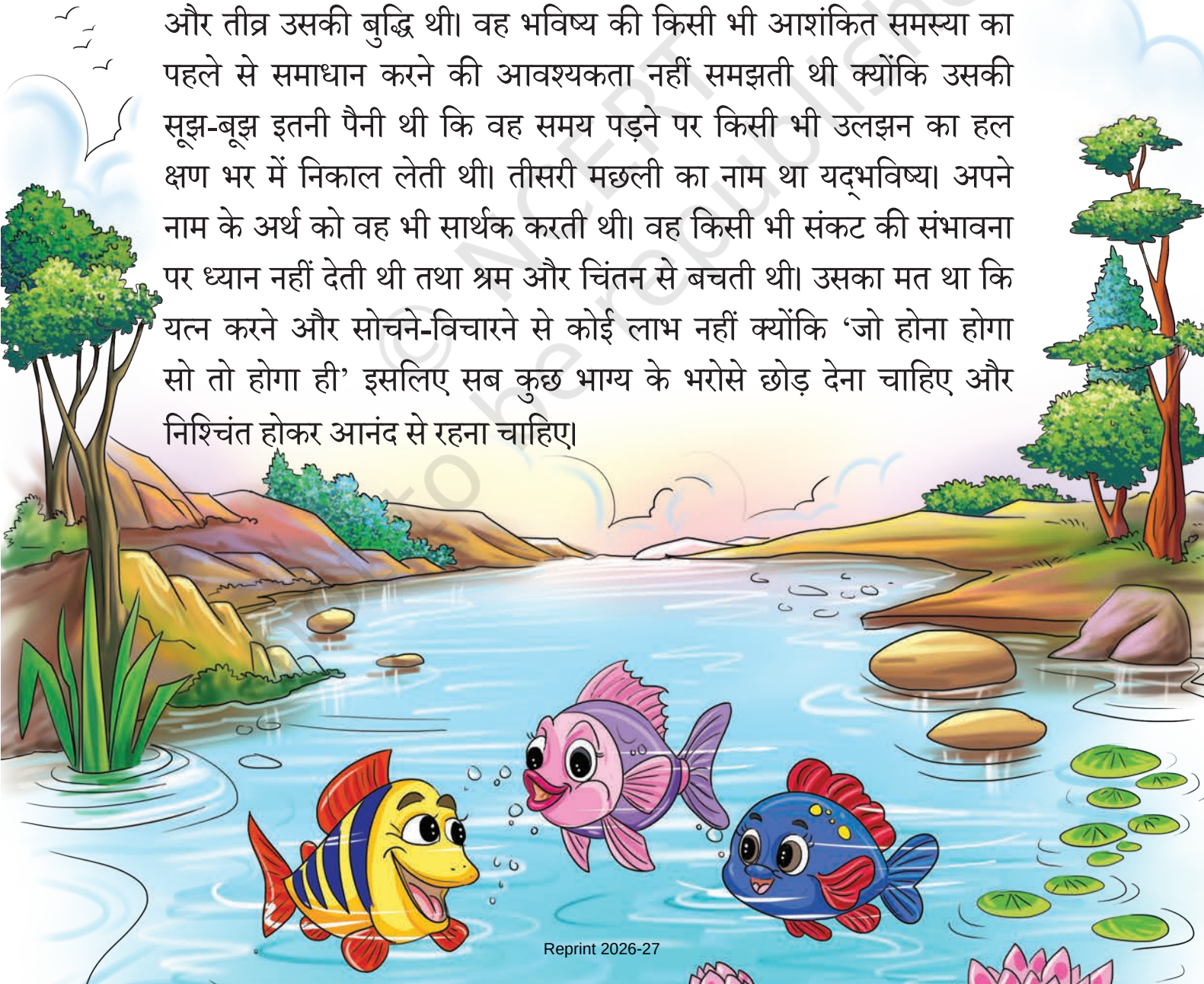

© NCERT not to be republished

एक दिन शाम के समय उस सरोवर के किनारे से अकस्मात् दो मछुआरे निकल रहे थे। उन मछुआरों ने यह सरोवर पहले कभी नहीं देखा था। इतना रमणीय स्थान देखकर वे सरोवर के किनारे विश्राम करने बैठ गए। क्षण भर में उनका ध्यान पानी में सैर करती हुई मछलियों पर गया। "अरे! देखो इस सरोवर में कितनी बड़ी मछलियाँ हैं" पहला मछुआरा बोला। "हाँ, हाँ, और इतनी सारी मछलियाँ एक ही जगह हमने पहले कभी नहीं देखीं" दूसरा मछुआरा बोला। पहले मछुआरे ने फिर कहा, "भाई कल सवेरे हम यहाँ बड़ा जाल लेकर आएँगे और इन सब मछलियों को पकड़ेंगे।" "ठीक है" दूसरे मछुआरे ने सहर्ष सम्मति दिखाई और दोनों मछुआरे उत्साह से उठकर घर की ओर चल दिए।

मछुआरों की बातें तीनों मछलियों ने सुन लीं। उन्होंने तुरंत सरोवर की सभी मछलियों को बुलाकर एक सभा की। अनागतविधाता ने सब मछलियों को संबोधित करके बताया

कि दो मछुआरे अगले दिन सवेरे सरोवर पर जाल डालकर सब मछलियों को पकड़ने की योजना बना रहे हैं। यह सुनकर सब मछलियाँ भयभीत हो गईं और पूछने लगीं कि क्या करना चाहिए। अनागतविधाता ने कहा कि इस संकट से बचने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि सवेरा होने से पहले हम सब यह सरोवर छोड़कर पास के

Reprint 2026-27

दूसरे सरोवर में चले जाएँ। इस पर प्रत्युत्पन्नमति ने कहा कि मैं तो यहीं रहूँगी और यदि मछुआरे आएँगे तो उस समय की परिस्थिति देखकर कुछ उपाय ढूँढ़ लूँगी। यद्भविष्य तो स्वभाव से ही आलस्यमयी थी। वह कहने लगी कि मैं तो अपने इस पुराने निवास स्थान को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। भाग्य में जो लिखा होगा वही होगा, मुझे कुछ

करने की आवश्यकता नहीं है। यदि भाग्य में बचना लिखा होगा तो हम सब बच ही जाएँगे। हो सकता है मछुआरे आएँ ही नहीं। इसके पश्चात अनागतविधाता और बहुत-सी मछलियाँ घर छोड़कर पास के दूसरे सरोवर में चली गईं। प्रत्युत्पन्नमति, यद्भविष्य और कुछ अन्य मछलियाँ जो यद्भविष्य की राय से सहमत थीं, वहीं रहीं।

जब सवेरा हुआ तो सरोवर की मछलियाँ मना रहीं थीं कि कदाचित् मछुआरे नहीं आएँगे। परंतु थोड़ी ही देर में मछुआरों की ध्वनियाँ सुनाई पड़ीं और उन्होंने आकर जाल डाल दिया और सभी मछलियों को पकड़ लिया। प्रत्युत्पन्नमति और यद्भविष्य भी जाल में फँस गई थीं। मछुआरे बड़े प्रसन्न थे कि इतनी स्वस्थ और बड़ी-बड़ी मछलियाँ उन्होंने पकड़ ली हैं।

अब प्रत्युत्पन्नमति अपने बचने का उपाय बड़ी तीव्रता से सोचने लगी और उसे तुरंत सूझ गया कि क्या करना चाहिए। मछुआरों की बातचीत से वह समझ गई कि उन्हें

Reprint 2026-27

स्वस्थ और जीवित मछलियाँ ही चाहिए। उसने उसी क्षण अपना शरीर सिकोड़ लिया और आँखें बंद करके निर्जीव सी बनकर पड़ गई। मछुआरे मछलियों को सँभालने लगे तो देखा कि एक मरी हुई मछली है। उन्होंने तुरंत प्रत्युत्पन्नमति को जाल से निकालकर सरोवर में फेंक दिया और अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि के कारण उसकी जान बच गई। पर यद्भविष्य की जान नहीं बच सकी और मछुआरे उसे और उसकी साथी मछलियों को लेकर चलते बने।

– मालती देवी
(पंचतंत्र पर आधारित)

पंचतंत्र नीति साहित्य का एक विशिष्ट ग्रंथ है जिसे लगभग 2500 से 3000 वर्ष पूर्व भारत में रचा गया था। इसके लेखक प्रसिद्ध आचार्य विष्णु शर्मा माने जाते हैं। *पंचतंत्र* का निर्माण एक शिक्षण सामग्री के रूप में किया गया था जिसका उद्देश्य बच्चों को रोचक कथाओं के माध्यम से जीवन-मूल्य सिखाना था। इस ग्रंथ में नैतिक शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखी कहानियाँ हैं जो विभिन्न पशु-पक्षियों के माध्यम से प्रस्तुत की गई हैं। ये कहानियाँ न केवल बच्चों अपितु वयस्कों के लिए भी जीवन के विभिन्न पहलुओं का बोध कराने में सार्थक हैं और आज के युग में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी प्राचीन समय में थीं।

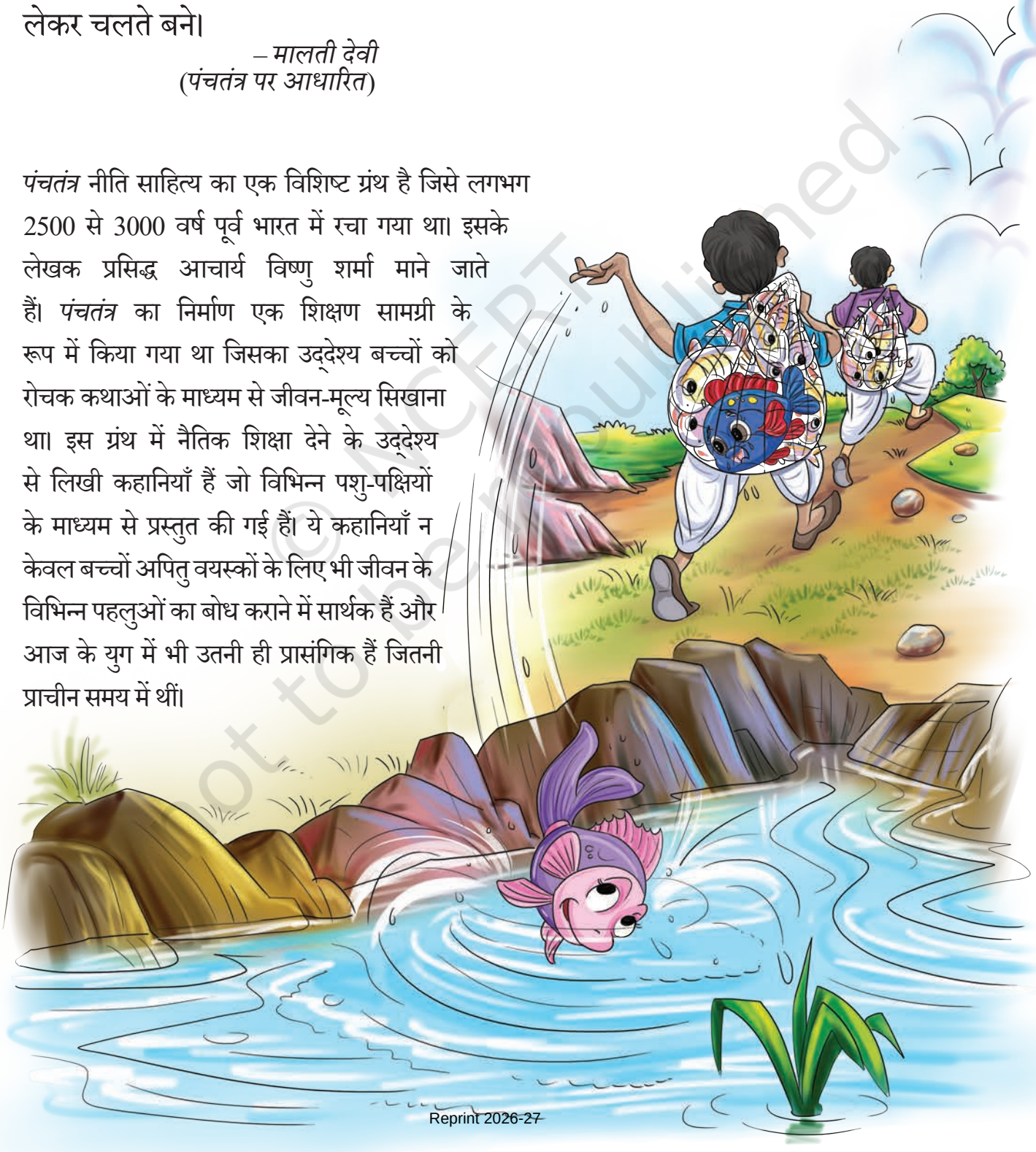

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. क्या आपने कभी नदी, पोखर या समुद्र तट का भ्रमण किया है? आपने वहाँ क्या-क्या देखा?
2. क्या किसी कार्य को भाग्य के भरोसे छोड़ना चाहिए? अपने उत्तर का कारण दीजिए।
3. यद्भविष्य मछुआरों से अपने प्राण नहीं बचा पाई। यदि उसके स्थान पर आप होते तो मछुआरों से अपने प्राण कैसे बचाते?
4. आपको कौन-सी मछली सबसे अच्छी लगी और क्यों?

पाठ से

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर मछली का चित्र ( ) बनाइए। एक से अधिक विकल्प भी सही हो सकते हैं।

(क) अनागतविधाता को बहुत बुद्धिमती किस कारण से बताया गया है?

(i) नाम के अनुरूप स्वभाव होने के कारण

(ii) सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ देने और चिंता न करने के कारण

(iii) भविष्य की संभावित समस्याओं का हल पहले से ही निकाल लेने के कारण

(iv) श्रम और चिंतन से बचने की प्रवृत्ति के कारण

(ख) मछुआरों की बातें सुनकर सभी मछलियों ने सभा क्यों की?

(i) गप-शप के लिए

(ii) अपने प्राण बचाने हेतु कोई उपाय ढूँढ़ने के लिए

(iii) मछुआरों को अपने जाल में फँसाने के लिए

(iv) पास के दूसरे सरोवर में जाने के लिए

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(ग) मछुआरों ने प्रत्युत्पन्नमति को जाल में से बाहर क्यों फेंक दिया?

(i) उन्हें जीवित मछलियाँ चाहिए थीं।

(ii) उन्हें प्रत्युत्पन्नमति सुंदर नहीं लगी।

(iii) जाल में बहुत अधिक मछलियाँ थीं।

(iv) उनसे जाल उठाया नहीं जा रहा था।

(घ) मछुआरों के जाल में कौन-कौन सी मछलियाँ फँस गईं?

(i) अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति और अन्य सभी बड़ी-बड़ी मछलियाँ

(ii) प्रत्युत्पन्नमति, यद्भविष्य और अन्य सभी बड़ी-बड़ी मछलियाँ

(iii) अनागतविधाता और अन्य सभी बड़ी-बड़ी मछलियाँ

(iv) प्रत्युत्पन्नमति, यद्भविष्य और अनागतविधाता

2. स्तंभ 'क' और स्तंभ 'ख' में आपस में संबंध रखने वाले शब्दों व कथनों का मिलान कीजिए—

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
सुंदर	बुद्धिमती
अनागतविधाता	आलसी
प्रत्युत्पन्नमति	मछलियाँ
बड़ी-बड़ी	तीक्ष्ण और तीव्र बुद्धि
यद्भविष्य	सरोवर

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

सोचिए और लिखिए

1. प्रत्युत्पन्नमति पहले से ही समस्या का समाधान करने की आवश्यकता क्यों नहीं समझती थी?
2. सभी मछलियों के भयभीत होने का क्या कारण था?
3. 'जो होना होगा सो तो होगा ही', यह किस मछली का मानना था और वह ऐसा क्यों मानती थी?
4. अनागतविधाता ने मछुआरों की योजना से बचने के लिए क्या उपाय सुझाया?
5. प्रत्युत्पन्नमति ने मछुआरों से बचने के लिए क्या उपाय किया?

भाषा की बात

1. कहानी में आए कुछ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द नीचे शब्द सरोवर में दिए गए हैं। इनकी पहचान करते हुए उन्हें उनके संबंधित परिवार के स्थान पर लिखिए—

शब्द सरोवर

कुछ	सभा	वह	बचना	सुंदर
तीन	सरोवर	पहली	रहना	हमने
मछली	सोचना	अच्छा	उन्होंने	मछुआरा
यद्भविष्य	दो	लिखना	जाना	मैं

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

2. कहानी में आए एकवचन और बहुवचन शब्दों की खोज करते हुए निम्न तालिका को दिए गए उदाहरण के अनुसार पूर्ण कीजिए—

एकवचन शब्द	बहुवचन शब्द
मछली	मछलियाँ
.....	ध्वनियाँ
मैं	.....
.....	.....
.....	.....

3. नीचे दिए गए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

ने, में, को, के, का, की, पर

(क) मछुआरों का ध्यान पानी में सैर करती हुई मछलियों ..... गया।

(ख) मछुआरों ..... बातें तीनों मछलियों ..... सुन लीं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(ग) वह कहने लगी कि मैं तो अपने इस पुराने निवास स्थान ..... छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी।

(घ) उत्तर भारत ..... एक सुंदर सरोवर ..... तीन मछलियाँ रहती थीं।

4. दिए गए विराम चिह्नों में से उचित विराम चिह्न का प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए वाक्यों को पुनः अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

? , । ! “ ” -

(क) एक समय की बात है

(ख) पहला मछुआरा बोला अरे देखो इस सरोवर में कितनी बड़ी बड़ी मछलियाँ हैं

(ग) मछुआरों ने सरोवर में अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमति यद्भविष्य और बड़ी बड़ी स्वस्थ मछलियाँ देखीं

(घ) हाँ हाँ और इतनी सारी मछलियाँ एक ही जगह हमने पहले कभी नहीं देखीं दूसरा मछुआरा बोला

(ङ) मछुआरों की बातें तीनों मछलियों ने सुन लीं

अनुमान और कल्पना

1. प्रत्युत्पन्नमति ने मछुआरों से बचने की जो योजना बनाई, यदि वह उसमें सफल न होती तो उसकी अन्य योजना क्या हो सकती थी?
2. क्या आपने समुद्र देखा है? अनुमान लगाकर बताइए कि समुद्र में इतना अधिक जल कहाँ से आता है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

3. अपनी सूझ-बूझ के कारण प्रत्युत्पन्नमति मछुआरों से बच गई। मान लीजिए कि वह तैरकर पास के सरोवर में अपनी मित्र अनागतविधाता के पास पहुँच गई। दोनों में आपस में क्या-क्या बातचीत हुई होगी? अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

बूझो तो जानें

1. नीचे पानी में तैरती हुई मछलियों को ध्यान से देखिए और बताइए कि इनमें से बिलकुल एक जैसी दो मछलियाँ कौन-सी हैं?

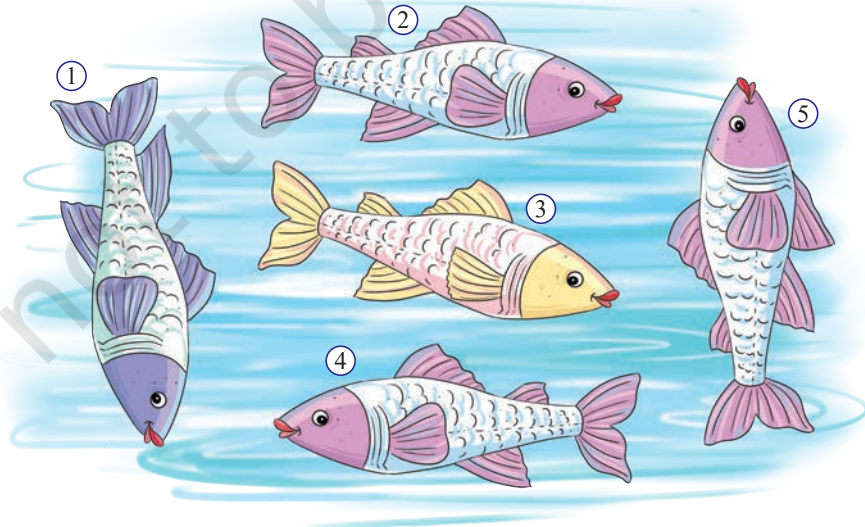

उत्तर – अंक 2 और 4 की मछलियाँ

© NCERT not to be republished
Reprint 2026-27

पुस्तकालय से

विद्यालय के पुस्तकालय में जाकर कहानी में आए निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से लिखिए—

1. शब्द : गाढ़ी
   अर्थ : घनिष्ठ, गहरी

2. शब्द : विनोद
   अर्थ : .....

3. शब्द : तीक्ष्ण
   अर्थ : .....

4. शब्द : चिंतन
   अर्थ : .....

5. शब्द : विश्राम
   अर्थ : .....

6. शब्द : श्रम
   अर्थ : .....

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

खट्ठे हैं अंगूर

आपकी अभिव्यक्ति

जैसा कि आपने इस पाठ के अंत में पढ़ा, *पंचतंत्र* की रचना प्राचीन काल में की गई थी। समय के साथ *पंचतंत्र* का प्रसार अरब देशों एवं यूरोप समेत विश्व के अनेक भागों में हुआ। प्राचीन यूनान (वर्तमान ग्रीस) में रचित और संपूर्ण यूरोप में प्रचलित *ईसप की दंतकथाएँ* भी *पंचतंत्र* की प्रेरणा से ही रची गईं और कालांतर में संपूर्ण विश्व में प्रसारित हुईं। आपने इन्हीं दंतकथाओं में से एक कहानी 'लोमड़ी और अंगूर' या 'खट्टे हैं अंगूर' के नाम से पढ़ी या सुनी होगी।

दिए गए चित्र की सहायता से 'खट्टे हैं अंगूर' कहानी को अपने शब्दों में कविता या कहानी के रूप में लिखिए। इस गतिविधि में आप अपने शिक्षक या अभिभावक की सहायता भी ले सकते हैं।

© NCERT not to be republished

11 हमारे ये कलामंदिर

0531CH11

इस बार निशा की मौसी ने छुट्टियों में उसे अजंता और एलोरा दिखाने का वादा किया था। निशा ने पुस्तकों में अजंता, एलोरा के बारे में पढ़ा था। तभी से उसके मन में उत्सुकता थी कि ये गुफाएँ देखने में कैसी होंगी।

दशहरे की छुट्टियाँ आईं तो उनका अजंता और एलोरा जाने का कार्यक्रम बन गया। रेलगाड़ी में आरक्षण छत्रपति संभाजीनगर तक था। संभाजीनगर महाराष्ट्र राज्य का एक नगर है। संभाजीनगर पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। निशा और मौसी ने स्टेशन पर ही विश्रामगृह में रात बिताई। दूसरे दिन बड़े सवेरे ही उठकर वे बस से अजंता की ओर चल दीं। वहाँ से अजंता लगभग सौ किलोमीटर दूर है।

अजंता पहुँचकर जो दृश्य निशा ने देखा, वह बड़ा ही मनोरम था। एक ओर छोटी-सी नदी बह रही थी। नदी में बड़े-बड़े शिलाखंड पड़े थे। नदी के दक्षिण में एक पहाड़ी पर एक पंक्ति में उनतीस गुफाएँ थीं। इन गुफाओं का मुँह पूर्व दिशा की ओर होने के कारण प्रातःकाल के सूर्य की किरणें इन पर पड़ रही थीं। गुफा के ठीक नीचे एक कुंड बना था जिसमें पानी भरा हुआ था। घाटी में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।

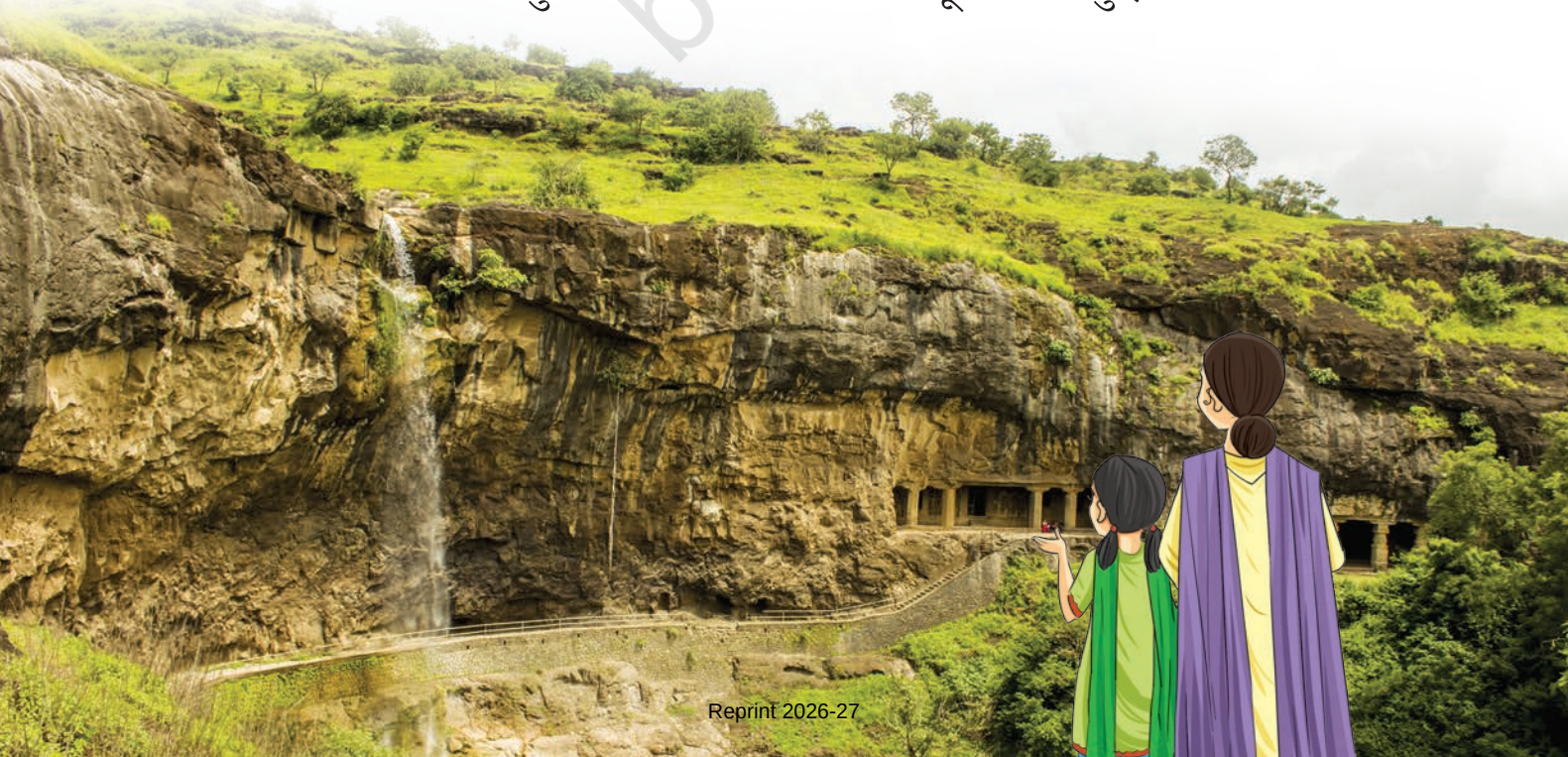

© NCERT not to be republished

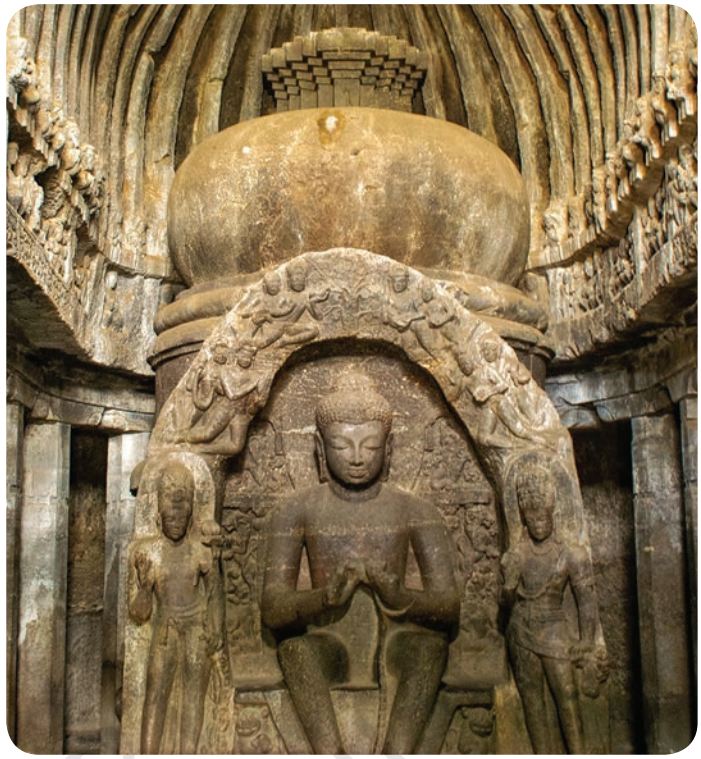

निशा, मौसी के साथ गुफाओं को देखने के लिए अंदर गई। उन्होंने देखा कि गुफाओं के अंदर दीवारों पर अत्यंत सुंदर चित्र बने हैं। गौतम बुद्ध का घर छोड़कर तप के लिए जाना, भिक्षुओं को उपदेश देना, साधु के रूप में भिक्षा माँगने जाना आदि के चित्र अत्यंत सजीव थे। इसके अतिरिक्त पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, स्त्रियों आदि के भी चित्र थे। उन्हें देखते ही निशा के मुँह से निकला, "वाह!" उन सभी चित्रों में अत्यंत सुंदर रंग भरे थे। सैकड़ों साल बीत जाने पर भी ये रंग फीके नहीं पड़े थे। मौसी ने कहा, "निशा, ये गुफाएँ दो हजार वर्ष पुरानी हैं।"

निशा ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "दो हजार वर्ष! पर आज भी इनके रंग ज्यों के त्यों कैसे हैं?"

मौसी ने कहा, "उस समय रंग बनाने का ढंग बहुत अनोखा था। कहते हैं कि उस समय ये रंग पत्तों, जड़ी-बूटियों, फूलों आदि से बनाए जाते थे।"

निशा टकटकी लगाए चित्रों को देखती रही। चित्रों में हाथों की मुद्रा, आँखों के भाव, अंगों की लोच, मुखों पर सुख-दुख के भाव तथा झुर्रियाँ सभी कुछ अत्यंत अद्‌भुत था। ऐसे सजीव चित्र थे कि लगता था अभी बोल पड़ेंगे।

कुछ गुफाएँ अत्यंत लंबी-चौड़ी थीं, कुछ छोटी। निशा को सबसे अधिक आश्चर्य यह देखकर हुआ कि ये गुफाएँ पहाड़ों को ही काटकर बनाई गई थीं। इन गुफाओं में बनी मूर्तियाँ भी पत्थरों को तराशकर बनाई गई थीं।

© NCERT not to be republished

अजंता की गुफाएँ देखकर निशा और मौसी वापस संभाजीनगर आ गईं। वहाँ से वे दूसरे दिन बस में बैठकर एलोरा की गुफाएँ देखने गईं। संभाजीनगर से एलोरा लगभग चालीस किलोमीटर दूर है।

एलोरा पहुँचकर निशा ने देखा कि पहाड़ों को ही काटकर लगभग तीस मंदिर बनाए गए हैं। इन मंदिरों में बहुत ही सुंदर मूर्तियाँ देखने को मिलीं। ये मूर्तियाँ केवल बौद्ध धर्म से ही संबंधित नहीं थीं, बल्कि इनमें से कुछ हिंदू और जैन धर्म से भी संबंधित थीं।

इन मूर्तियों की कारीगरी देखते ही बनती थी। बड़ी-बड़ी विशाल शिलाओं को तराशकर इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें तथा मूर्तियाँ गढ़ी गई थीं। निशा उन्हें देख-देखकर चकित हो रही थी। कैलाश मंदिर दिखाते हुए मौसी जी ने कहा — "निशा, यह अत्यंत प्रसिद्ध मंदिर है। पूरा मंदिर एक ऊँचे पहाड़ को ऊपर की ओर से तराशकर बनाया गया है। देखो, एक ही चट्टान से बनी इतनी बड़ी और सुंदर इमारत कितनी अद्‌भुत है!"

© NCERT not to be republished

निशा — "अद्‌भुत! यह गर्व की बात है कि हजारों वर्ष पहले भी हमारे देश में कला का इतना विकास हो चुका था।"

अजंता और एलोरा देखकर निशा और मौसी जी वापस लौट आए पर निशा का मन अभी भी उन बेजोड़ कलाकृतियों की ओर लगा था।

बातचीत के लिए

1. आपकी छुट्टियाँ कब-कब होती हैं? आप छुट्टियों में कहाँ-कहाँ जाते हैं?
2. अजंता और एलोरा की गुफाओं के भीतर दीवारों पर अत्यंत सुंदर चित्र बने थे। आपके घर और घर के आस-पास कौन-कौन से चित्र बने या लगे हैं?
3. आपके घर में कौन-कौन और कहाँ-कहाँ चित्रकारी करते हैं? (जैसे – कागज पर, धरती पर, दीवारों पर, मिट्‌टी की वस्तुओं पर, कपड़ों पर आदि।)
4. गुफाओं के चित्र देखते ही निशा के मुँह से 'वाह!' क्यों निकला? आपके मुँह से कब-कब 'वाह!' निकलता है?

© NCERT not to be republished

पाठ से

दिए गए प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के आगे सूरज का चित्र (☼) बनाइए —

1. निशा, अजंता और एलोरा जाने के लिए क्यों उत्साहित थी?

   (क) वह पहली बार हवाई यात्रा करने वाली थी।

   (ख) उसने इन गुफाओं के बारे में पुस्तकों में पढ़ा था।

   (ग) उसे मौसी जी से एक नया खिलौना मिलने वाला था।

   (घ) उसने अजंता और एलोरा के बारे में मित्रों से सुना था।

2. निशा को अजंता और एलोरा देखकर कैसा लगा?

   (क) उसे निराशा हुई। (ख) उसे आश्चर्य हुआ।

   (ग) उसे दुख हुआ। (घ) वह उदास हो गई।

3. अजंता की गुफाओं में बने रंग इतने वर्षों बाद भी क्यों फीके नहीं पड़े थे?

   (क) वे विशेष प्रकार के कागज पर बनाए गए थे।

   (ख) चित्रों में प्रति वर्ष फिर से नया रंग भरा जाता था।

   (ग) रंग, फूलों जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से बनाए गए थे।

   (घ) वे सभी गुफाएँ बहुत ठंडे स्थान पर स्थित थीं।

4. यात्रा से लौटने के बाद भी निशा को वे कलाकृतियाँ बार-बार क्यों याद आ रही थीं?

   (क) उसने अपनी पाठ्यपुस्तक में उनके बारे में पढ़ा था।

   (ख) मौसी जी ने वादा किया था कि वे फिर वहाँ जाएँगे।

   (ग) यात्रा बहुत लंबी थी इसलिए उसे याद आ रही थी।

   (घ) गुफाओं की सभी कलाकृतियाँ बहुत आकर्षक थीं।

अब अपने समूह में चर्चा करके पता लगाइए कि किस-किसने कौन-कौन से उत्तर चुने और क्यों।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

सोचिए और लिखिए

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए —

1. अजंता में निशा ने क्या-क्या देखा?
2. कैलाश मंदिर के बारे में आपको कौन-सी बात सबसे अधिक आश्चर्यजनक लगी?
3. मौसी जी ने छोटी और बड़ी गुफा के बारे में क्या बताया?
4. क्या कारण है कि अजंता की गुफाओं का मुँह पूर्व दिशा में बनाया गया है?
5. अजंता और एलोरा तक पहुँचने के लिए यातायात के कौन-कौन से साधनों का प्रयोग कर सकते हैं?

अनुमान एवं कल्पना

1. यदि अजंता की दीवारों के चित्र बोल सकते तो वे हमें क्या कहानियाँ सुनाते?
2. मान लीजिए कि आप हजारों वर्ष पहले के संसार में चले गए हैं और आपको अजंता की गुफाओं में एक नया चित्र बनाने का अवसर मिला है। आप क्या बनाएँगे और क्यों?

भाषा की बात

1. पाठ में से कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन्हें उनके मिलते-जुलते अर्थों के साथ रेखाएँ खींचकर मिलाइए —

शब्द	अर्थ
शिलाखंड	कंदरा, गुहा
गुफा	संन्यासी, याचक
कुंड	चट्टान, पत्थर
भिक्षु	तालाब, जलाशय

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

2. "निशा और मौसी ने स्टेशन पर ही विश्रामगृह में रात बिताई।"

यहाँ 'विश्रामगृह' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है — 'विश्राम' और 'गृह'। विश्राम का अर्थ है — आराम। गृह का अर्थ है — घर। अतः विश्रामगृह का अर्थ हुआ — आराम करने का घर या स्थान।

पाठ में से ऐसे ही दो शब्दों के मेल से बने अन्य शब्दों को खोजकर उनके अर्थ लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

3. निशा ने आश्चर्यचकित होकर कहा — "दो हजार वर्ष! पर आज भी इनके रंग ज्यों के त्यों कैसे हैं?"

'ज्यों का त्यों' का अर्थ है — कोई परिवर्तन न होना।

इसी प्रकार के कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनका प्रयोग करते हुए अपनी लेखन-पुस्तिका में वाक्य लिखिए —

ज्यों का त्यों	जैसे का तैसा	बिलकुल वैसा ही
वैसा का वैसा	जैसे थे वैसे ही	वास्तविक रूप में

4. "ऐसे सजीव चित्र थे कि लगता था अभी बोल पड़ेंगे।"

"इन मूर्तियों की कारीगरी देखते ही बनती थी।"

रेखांकित अंशों को ध्यान में रखते हुए अब नीचे दिए गए वाक्यांशों से वाक्य बनाइए —

दंग रह जाना	ऐसा जैसे सपना हो	प्रशंसा के योग्य होना
आँखें न हटा पाना	दिल को छू जाना	कल्पना से परे होना
मन मोह लेना	दृश्य भूल न पाना	दृष्टि थम जाना

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

5. नीचे एक वर्ग पहेली दी गई है। इस वर्ग पहेली में कुछ विशेषण शब्द छिपे हुए हैं। शब्दों को खोजिए और उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए —

अ	द्	भु	त	म	छो
बे	सुं	द	र	नो	टी
जो	क	ठि	न	र	प्र
ड़	स	जी	व	म	सि
ब	वि	शा	ल	च	द्ध
ड़ी	रं	ग	बि	रं	गा

चित्र का वर्णन

आपने पाठ में अजंता के चित्रों का सुंदर वर्णन पढ़ा। नीचे अजंता का एक प्रसिद्ध चित्र दिया गया है। इसका वर्णन अपने शब्दों में लेखन-पुस्तिका में कीजिए —

Reprint 2026-27

मानचित्र

आपने पाठ में अजंता का वर्णन पढ़ा। नीचे अजंता का एक मानचित्र दिया गया है। इस वर्णन और मानचित्र की सहायता से नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर खोजिए —

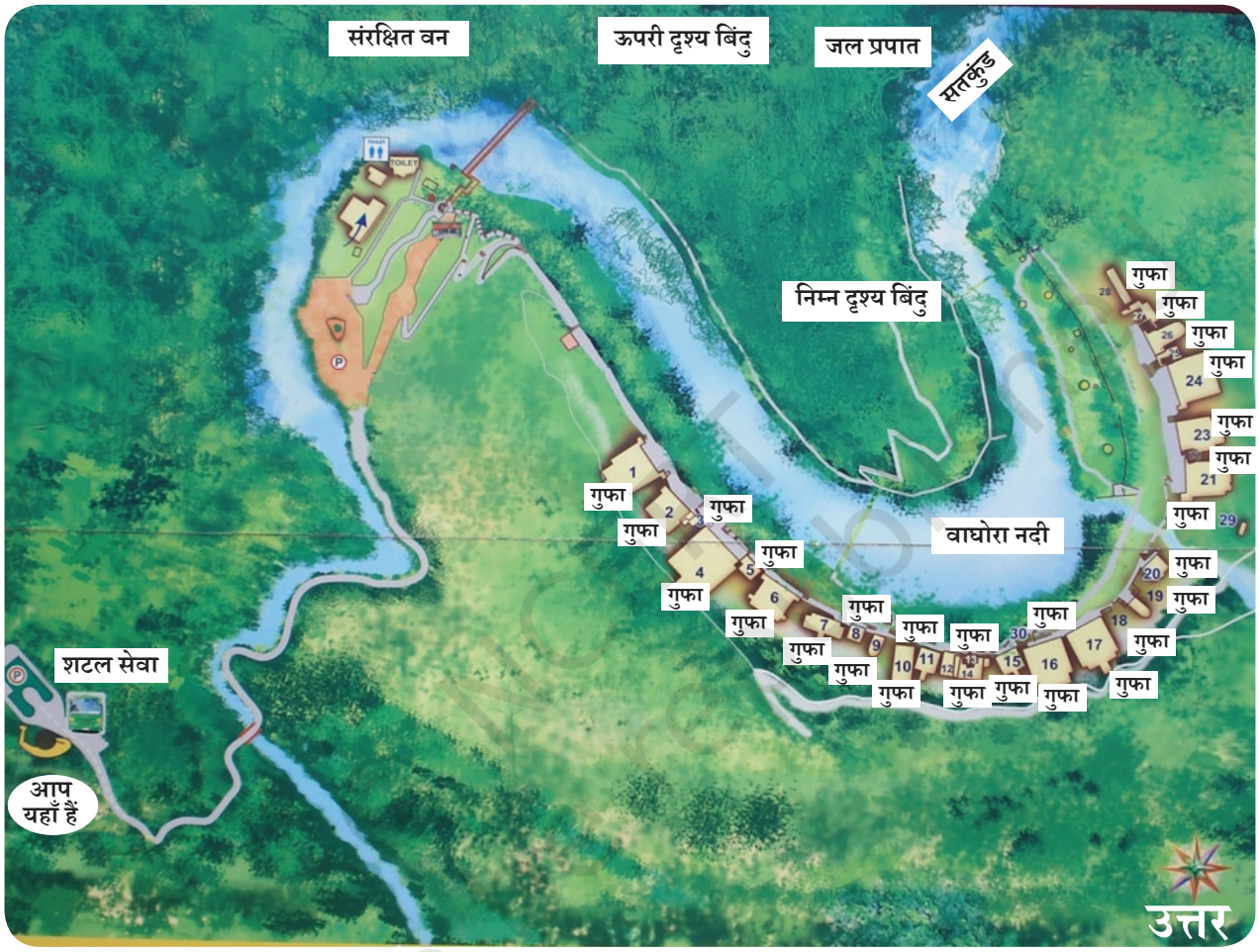

1. नदी का क्या नाम है?
2. कुल कितनी गुफाएँ दिखाई गई हैं?
3. चारों दिशाओं में से कौन-सी दिशा का संकेत दिया गया है?
4. "आप यहाँ हैं" से क्या आशय है?
5. कुंड का क्या नाम है?

Reprint 2026-27

आइए मापें

लंबाई मापने के फीते की सहायता से अपने समूह के साथ मिलकर कक्षा में इन्हें मापिए और लिखिए—

1. कक्षा की लंबाई – .....
2. कक्षा की चौड़ाई – .....
3. दरवाजे की चौड़ाई – .....
4. खिड़की की चौड़ाई – .....
5. श्यामपट्ट की लंबाई-चौड़ाई – .....

रंगों का संसार

आपने पाठ में पढ़ा कि रंगों को प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग करके भी बनाया जा सकता है। आगे रंग बनाने की कुछ विधियाँ दी गई हैं। अपने अभिभावकों की सहायता से इनका प्रयोग करके आप भी प्राकृतिक रंग बनाइए—

हरा रंग

सामग्री : पालक, मेहँदी, पुदीना या हरा धनिया, पानी

विधि : पालक के पत्तों को पानी में उबालिए और फिर पीस लीजिए। इस मिश्रण को छानकर गाढ़ा हरा रंग तैयार किया जा सकता है। पुदीना, धनिया व पालक की पत्तियों को धूप में सुखाकर और उसका पाउडर बनाकर आप हरे रंग को तैयार कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पीला रंग

सामग्री : हल्दी पाउडर, पानी

विधि : एक चम्मच हल्दी पाउडर में थोड़ा पानी मिलाइए और इसे अच्छी तरह से घोलिए। हल्दी का रंग गहरा पीला होता है और इसे आप चित्रकारी के लिए आसानी से उपयोग कर सकते हैं।

लाल रंग

सामग्री : चुकंदर, पानी

विधि : चुकंदर को छोटे टुकड़ों में काटकर पानी में उबालिए। इसके बाद इसे ठंडा होने दीजिए और फिर पीसकर छान लीजिए। इससे गहरा लाल रंग मिल जाएगा। आप इसे पानी के साथ पतला करके पेंट के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं।

नीला रंग

सामग्री : नील (कपड़ों में लगाने वाला)

विधि : नीले रंग के लिए नील को पानी में मिला लीजिए।

भूरा रंग

सामग्री : कॉफी पाउडर या चाय की पत्तियाँ, पानी

विधि : थोड़ा-सा कॉफी पाउडर या चाय की पत्तियों को पानी में उबाल लीजिए। इसे ठंडा करके प्रयोग कीजिए। इससे भूरा रंग तैयार होगा।

पुस्तकालय से

इस पाठ में आपने अजंता-एलोरा के बारे में पढ़ा और उसके बारे में जाना। अब भारत के अन्य दर्शनीय स्थानों के बारे में अपने पुस्तकालय में खोजबीन कीजिए और उनके बारे में पढ़िए। साथ ही कक्षा में उनके बारे में चर्चा भी कीजिए।

© NCERT not to be republished

धन्यवाद कार्ड

निशा को उसकी मौसी ने अजंता और एलोरा की गुफाएँ दिखाईं। इस कारण निशा ने अपनी मौसी को धन्यवाद कार्ड लिखा। अब आप भी अपने किसी संबंधी को धन्यवाद कार्ड लिखिए—

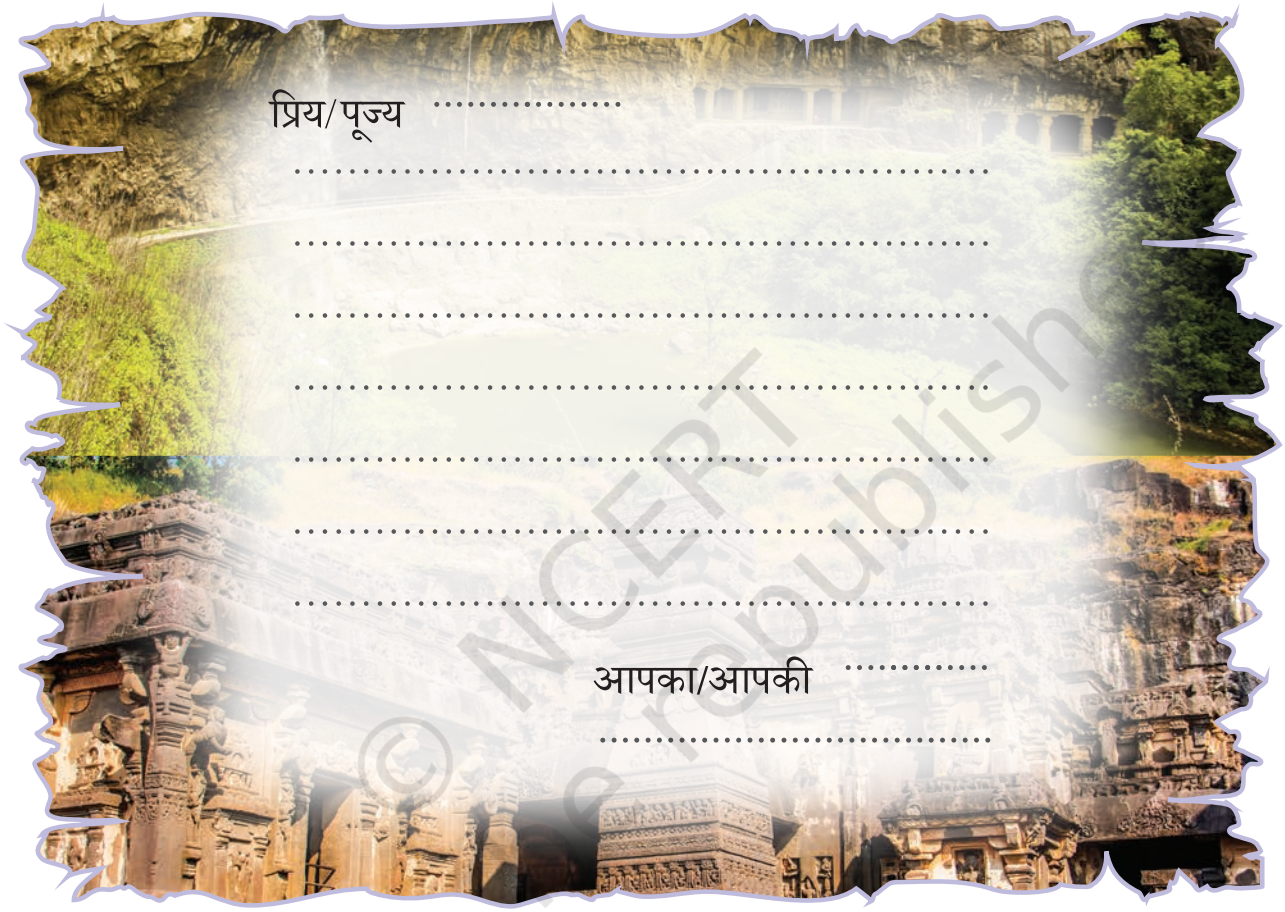

प्रिय/पूज्य .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आपका/आपकी .....

.....

हमारी धरोहर

हमारे देश में बहुत सुंदर ऐतिहासिक स्मारक एवं कलाकृतियाँ हैं। ये हमारे देश की शोभा एवं गौरव बढ़ाते हैं। यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम भी इनकी सुंदरता को बनाए रखें। इन स्मारकों को छूने, इनकी दीवारों को खुरचने अथवा कुछ भी अंकन करने से इन्हें हानि पहुँचती है। इसलिए इन पर्यटन स्थलों का भ्रमण करते समय हमें सावधानी रखनी चाहिए।

© NCERT not to be republished

आपकी अभिव्यक्ति

क्या आपने कभी कोई रेल यात्रा की है? अपनी किसी रेल यात्रा का कोई रोचक अनुभव साझा कीजिए। यदि आपने रेल यात्रा नहीं की हो तो अपने किसी मित्र या परिवार के सदस्य के अनुभव भी लिख सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

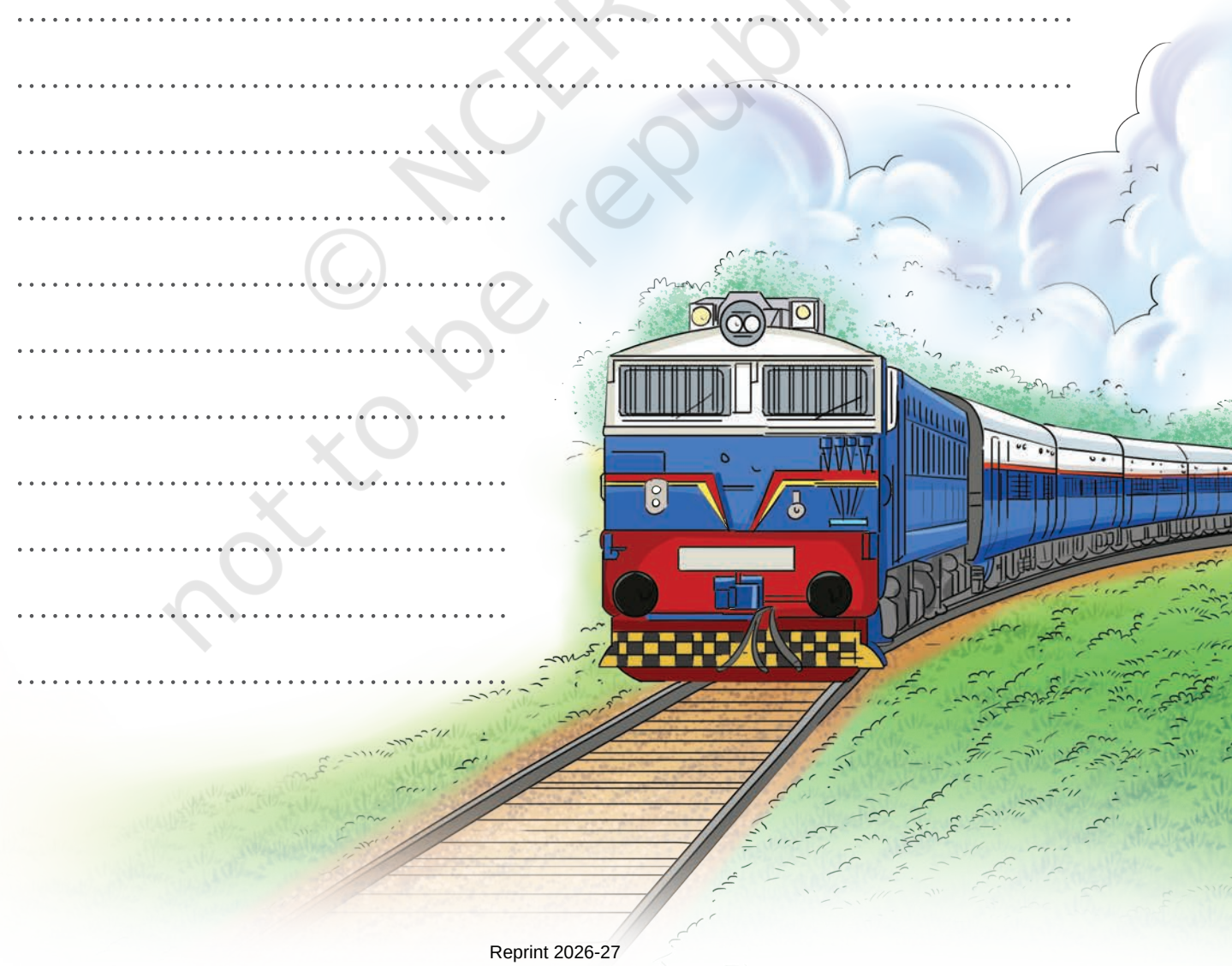

© NCERT not to be republished

आपकी चित्रकारी

हिंदी की गिनती मिलाकर चित्र पूरा कीजिए और उसमें अपनी रुचि के रंग भरिए—

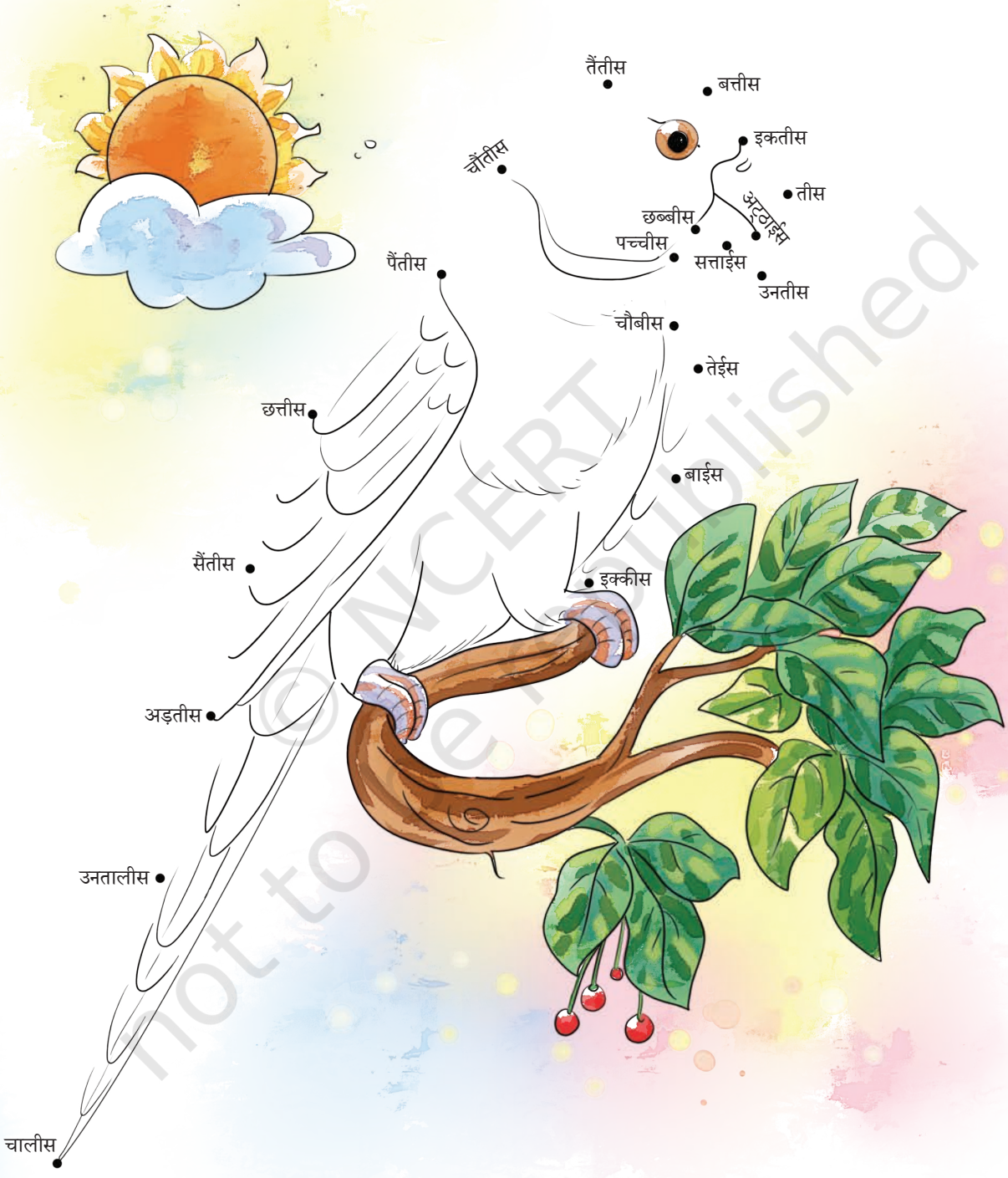

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

12 गंगा की कहानी

0531CH12

मेरा जन्म हिमालय की गोद में हुआ था। नन्ही-सी धारा के रूप में मैं उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद में स्थित गंगोत्री हिमनद के उस स्थान से निकली जिसे गोमुख कहते हैं। गोमुख से थोड़ा नीचे गंगोत्री में मेरा भव्य मंदिर है जहाँ देशभर से तीर्थयात्री आते हैं। राजा भगीरथ ने इसी स्थान पर तपस्या की थी। इसलिए मेरा नाम भागीरथी भी है। यहाँ से मैं नीचे ढुलकती चली और मेरा रूप और निखरने लगा। पहाड़ों को चीरती, चट्टानों से टकराती हुई, उछलती-कूदती मैं आगे बढ़ती गई।

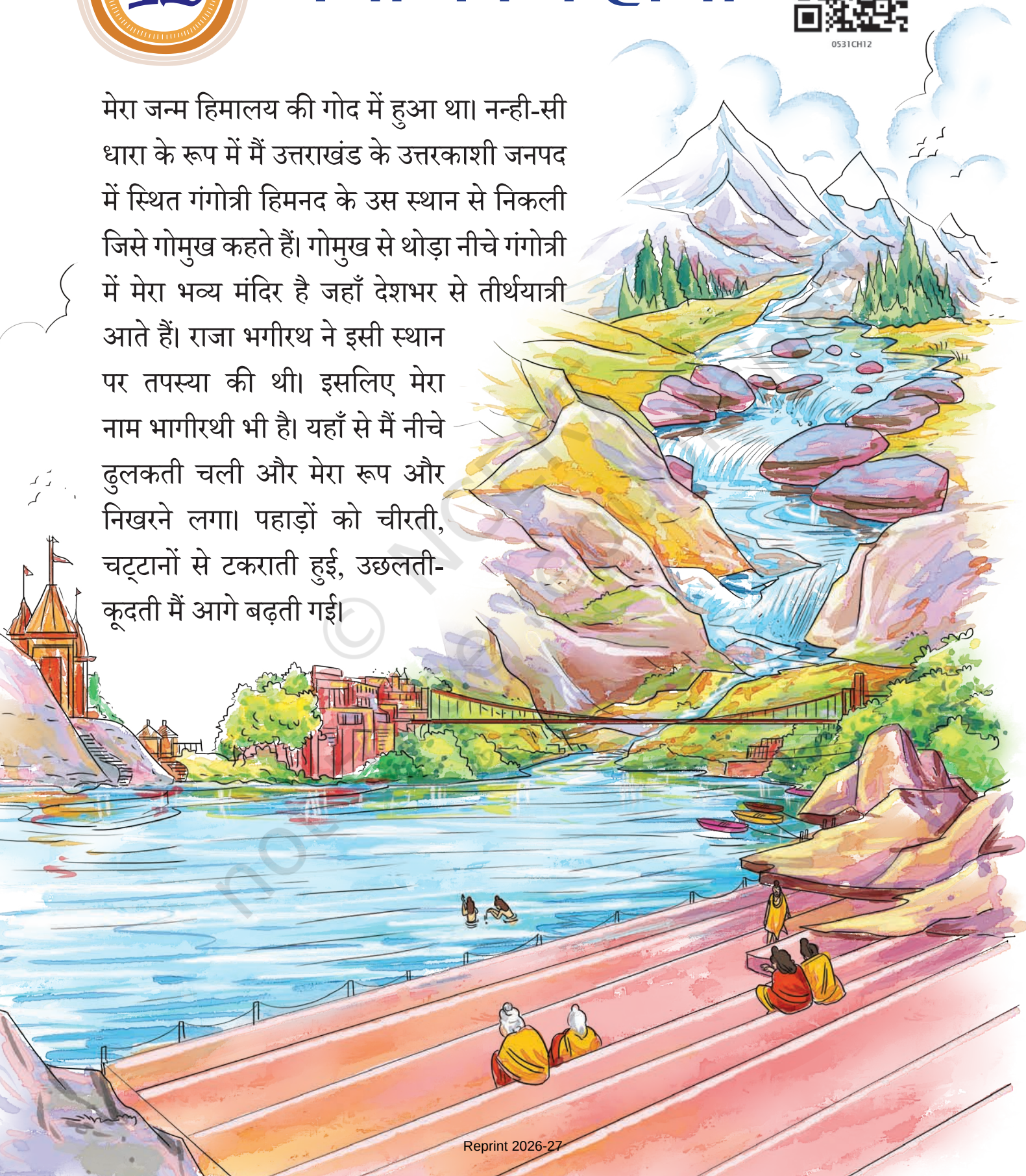

© NCERT not to be republished

देवप्रयाग में मुझसे अलकनंदा आ मिली। ऋषिकेश पहुँचने पर मैं मैदान में उतर आई। यहाँ मेरे किनारों पर साधु-संतों और महात्माओं के आश्रम हैं। बहुत से नगर मेरे तट पर बस गए हैं। कई कारखाने खुल गए हैं। इन सबको मैं ही पानी पहुँचाती हूँ।

गंगोत्री

ऋषिकेश और हरिद्वार मेरे किनारों पर बसे प्रसिद्ध तीर्थ हैं। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य और वातावरण बहुत शांत है। हरिद्वार में हर बारह वर्ष बाद कुंभ का मेला लगता है। हरिद्वार के पास से एक नहर निकाली गई है जिसे गंगानहर कहते हैं। लाखों एकड़ भूमि को सींचती हुई यह नहर उत्तर प्रदेश के कानपुर जनपद पहुँचती है। मैं भी घूमती-घामती कानपुर पहुँच जाती हूँ।

ऋषिकेश

कानपुर भारत का प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है। यहाँ कपड़े, चमड़े और लोहे के कारखाने हैं। इन कारखानों को पानी मुझसे ही मिलता है।

कानपुर से चलकर मैं प्रयागराज पहुँचती हूँ। यहाँ यमुना से मेरा संगम होता है। इस संगम पर भी प्रत्येक बारहवें वर्ष कुंभ का मेला लगता है। इस मेले में देश के कोने-कोने से लाखों लोग आते हैं।

प्रयागराज

© NCERT not to be republished

मैं फिर आगे बढ़ती हूँ। चलते रहना, बहते रहना ही मेरा काम है। मैं वाराणसी पहुँचती हूँ। इस नगर का दूसरा नाम काशी है। यह बहुत बड़ा तीर्थ है।

वाराणसी से आगे बढ़ने पर मैं कई नदियों को अपनी गोद में लेती हुई बिहार राज्य में पहुँचती हूँ। यहाँ से पटना, भागलपुर आदि

वाराणसी

कोलकाता

नगरों से होती हुई मैं पश्चिम बंगाल में प्रवेश करती हूँ।

पश्चिम बंगाल में मेरी दो धाराएँ हो जाती हैं। एक धारा बांग्लादेश को चली जाती है। वहाँ उसका नाम पद्मा पड़ गया है। दूसरी धारा कोलकाता (कलकत्ता) की ओर जाती है। वहाँ मुझे हुगली भी कहते हैं। अंत में मैं बंगाल की खाड़ी में समुद्र से मिल जाती हूँ।

मुझे भारतवासी पवित्र नदी मानते हैं। गंगोत्री से निकलते समय मेरा चाँदी जैसा चमकीला रूप रहता है। किंतु मुझे दुख है कि काशी पहुँचते-पहुँचते मेरा चमकीला रंग मटमैला हो जाता है। कारखानों और शहरों का गंदा पानी मेरे जल को दूषित कर देता है।

लेकिन मुझे अब इस बात की प्रसन्नता है कि इस ओर लोगों का ध्यान गया है। मेरे जल को शुद्ध करने के प्रयास आरंभ हो गए हैं। मुझे उस दिन की प्रतीक्षा है जब मेरा जल वैसा ही स्वच्छ और निर्मल हो जाएगा जैसा गंगोत्री से निकलते समय रहता है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

बातचीत के लिए

1. नीचे दिए गए चित्र को देखिए और इसमें दिखाए गए पानी के स्रोत का नाम बताइए—

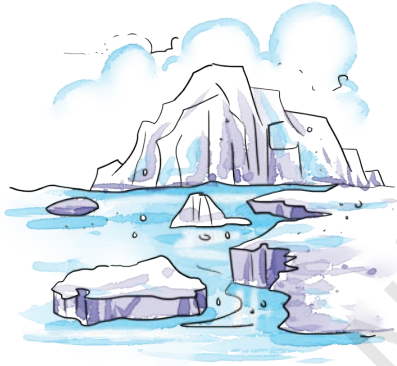

2. आपके निवास स्थान के आस-पास कौन-सी नदी/नदियाँ बहती है/हैं?
3. आपके घर में पानी कहाँ से आता है?
4. आप नदियों के जल को प्रदूषित होने से किस प्रकार बचा सकते हैं? इस बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

पाठ से

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर जल की बूँद का चित्र (💧) बनाइए। एक से अधिक विकल्प भी सही हो सकते हैं—

(क) "मेरा जन्म हिमालय की गोद में हुआ था।" इस वाक्य में 'मेरा' शब्द किसके लिए आया है?

(i) गोमुख ☐ (ii) गंगा नदी ☐

(iii) पर्वत ☐ (iv) नगर ☐

(ख) "लेकिन मुझे अब इस बात की प्रसन्नता है कि इस ओर लोगों का ध्यान गया है।" यहाँ किस ओर ध्यान जाने की बात कही गई है?

(i) गंगा में प्रदूषण की ओर ☐

(ii) गंगा के चमकीले रंग की ओर ☐

(iii) गंगा जल की पवित्रता की ओर ☐

(iv) गंगा की धाराओं की ओर ☐

(ग) जल प्रदूषण किन कारणों से होता है?

(i) कारखानों और नगरों द्वारा नदियों में डाले जाने वाले अपशिष्ट से ☐

(ii) कारखानों के धुएँ से ☐

(iii) नदी तथा तालाब में स्नान करने से ☐

(iv) तेज आवाज में भोंपू बजाने से ☐

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

(घ) "यहाँ यमुना से मेरा संगम होता है।" इस वाक्य में 'संगम' शब्द का भाव है—

(i) एक से अधिक नदियों का आपस में मिलना

(ii) विपरीत दिशा की ओर बहना

(iii) दो धाराओं में बँट जाना

(iv) दो धाराओं का मिलकर बहना

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

(क) गंगा नदी के किनारे बसे कुछ नगरों के नाम लिखिए।

(ख) गंगा के तट पर बसे औद्योगिक नगरों से गंगा को क्या हानि हुई है?

(ग) कुंभ का मेला कब-कब और कहाँ-कहाँ लगता है?

(घ) "गंगोत्री से निकलते समय मेरा चाँदी जैसा चमकीला रूप रहता है। किंतु मुझे दुख है कि काशी पहुँचते-पहुँचते मेरा चमकीला रंग मटमैला हो जाता है।"

उपर्युक्त वाक्य से संबंधित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(i) यहाँ पर चाँदी जैसे चमकीले रूप से क्या तात्पर्य है?

(ii) काशी पहुँचते-पहुँचते गंगा का चमकीला रंग मटमैला क्यों हो जाता है?

3. पाठ के आधार पर सही कथन के आगे (✓) का और गलत कथन के आगे (×) का चिह्न लगाइए—

(क) गंगा के किनारे कई तीर्थ स्थान हैं।

(ख) गंगा का जन्म अरावली की गोद में हुआ है।

(ग) कारखानों का गंदा पानी गंगा के जल को दूषित कर रहा है।

(घ) गंगा का एक नाम भागीरथी है।

(ङ) पश्चिम बंगाल में गंगा की तीन धाराएँ हो जाती हैं।

© NCERT not to be republished

मिलान कीजिए

स्तंभ 'क' और स्तंभ 'ख' का आपस में मिलान कीजिए—

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
गंगा का उद्भव	वाराणसी
देवप्रयाग	गोमुख
औद्योगिक नगर	पद्मा नदी
बांग्लादेश	अलकनंदा
तीर्थ स्थल	कानपुर

भाषा की बात

1. इस वाक्य को पढ़िए—

"यहाँ यमुना से मेरा संगम होता है।"

इस वाक्य में 'होता' शब्द 'होना' क्रिया का रूप है।

निम्नलिखित वाक्यों में 'होना' क्रिया के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) आप जब भी आते हैं, मुझे बहुत प्रसन्नता ..... है।

(ख) कुंभ के मेले में लाखों लोग सम्मिलित ..... ।

(ग) आपके माता-पिता आपकी प्रतीक्षा कर रहे ..... ।

(घ) पहाड़ों का मौसम बड़ा सुहावना ..... है।

(ङ) यह काम कल ही ..... था परंतु किसी कारण से नहीं ..... पाया।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

2. पाठ में 'हिमालय' शब्द 'हिम' और 'आलय' शब्दों से मिलकर बना है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों को मिलाकर नया शब्द बनाइए—

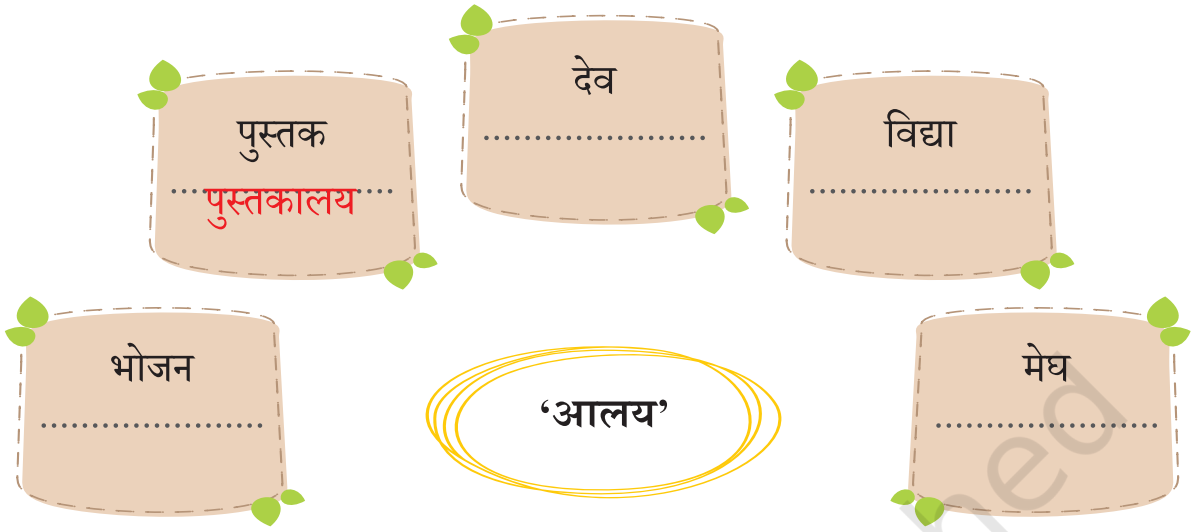

अब अपने बनाए हुए शब्दों का अपनी लेखन-पुस्तिका में वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. नीचे गंगा नदी के दृश्य में कुछ शब्द लिखे गए हैं। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए—

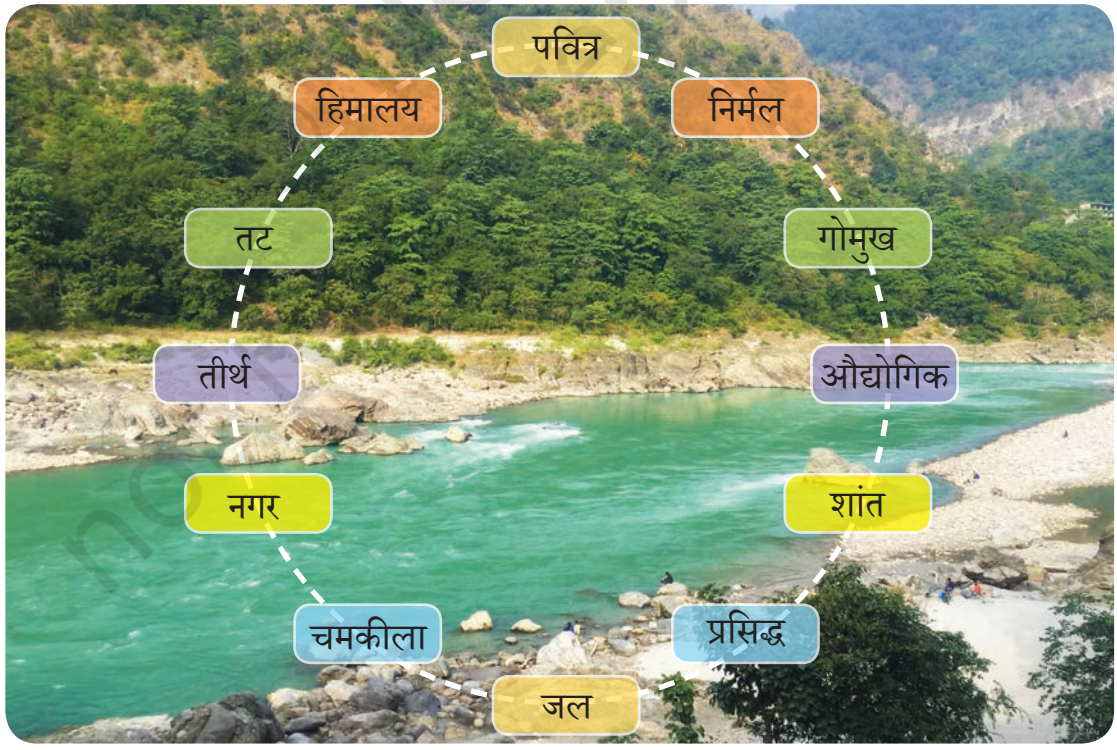

Reprint 2026-27

4. "मैं काम कर रहा हूँ।"

"मेरे कर में लेखनी है।"

यहाँ पहले वाक्य में 'कर' शब्द का प्रयोग क्रिया के रूप में हुआ है तथा दूसरे वाक्य में 'कर' शब्द का अर्थ 'हाथ' है। 'कर' का एक अन्य अर्थ 'टैक्स' भी होता है। इस प्रकार आपने देखा कि अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग के कारण एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं।

अब आप भी अपनी पाठ्यपुस्तक और अन्य स्रोतों से ऐसे शब्दों की एक सूची तैयार कीजिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

समझ और अनुभव

1. गंगा नदी के साथ तीर्थ स्थलों के जुड़ने के क्या कारण हो सकते हैं?
2. यदि नदियाँ दिन-प्रतिदिन प्रदूषित होती रहेंगी तो हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. पाठ में 'कानपुर' को भारत का प्रसिद्ध औद्योगिक नगर कहा गया है। यहाँ 'औद्योगिक नगर' से क्या आशय है?

कलाकारी

नीचे 'जल संरक्षण' विषय पर एक चित्र दिया गया है। आप भी दिए गए स्थान पर कोई चित्र बनाकर जल संरक्षण का एक उपाय सुझाइए—

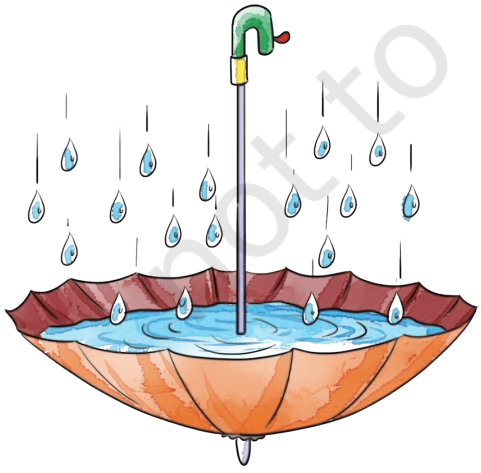

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

गंगा से बातचीत

गंगा अपने चमकीले रंग को मटमैला होते देखकर दुखी है। यदि आपको कभी गंगा नदी से बात करने का अवसर मिले तो आपकी क्या बातचीत होगी?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

1. विद्यालय के पुस्तकालय, अभिभावकों तथा अन्य स्रोतों से गंगा की सहायक नदियों के बारे में पता लगाइए। साथ ही यह भी पता कीजिए कि उनका उद्गम स्थान कौन-सा है और उनके किनारे कौन-कौन से प्रसिद्ध नगर स्थित हैं।
2. नदियों को साफ करने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में पता कीजिए। इसके लिए आप पुस्तकालय, शिक्षकों-अभिभावकों एवं अन्य स्रोतों की सहायता ले सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

गगनयान

(कक्षा में अध्यापिका का प्रवेश और सभी विद्यार्थियों द्वारा अभिवादन)

सभी विद्यार्थी – सुप्रभात अध्यापिका जी!

अध्यापिका – सुप्रभात बच्चो! कक्षा 3 में हमने चंद्रयान को जाना और कक्षा 4 में आदित्य-एल 1 के साथ सूर्य से भी भेंट कर आए। आशा है कि ये दोनों यात्राएँ आप लोगों को आनंदमय लगी होंगी! (*अध्यापिका कहते हुए मुस्कुराती हैं।*)

शर्मिला – जी, अध्यापिका जी! मैंने तो कल्पना में अपना अंतरिक्ष विमान भी सोच लिया है...

कुछ विद्यार्थी – सच! हमें भी दिखाओ। (*कक्षा में बातचीत होने लगती है।*)

अध्यापिका – क्या बात है! (*अपना टैब चालू करते हुए कहती हैं।*) आज भी हम एक अनोखे यान के बारे में जानने वाले हैं... क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि आज हम किस नए यान के बारे में जानेंगे?

साधना – अध्यापिका जी! क्या हम तारायान के बारे में जानेंगे?

राकेश – शायद बादलयान?

दीक्षा – मेरा मन तो कहता है कि आप शनियान की बात करने वाली हैं?

सानिया – और मेरा अनुमान है कि मंगलयान की बात होने वाली है।

मनोहर – अध्यापिका जी, मुझे लग रहा है कि हम शुक्रयान की बात करेंगे।

अशरफ़ – और मुझे लगता है कि आप आज आकाशयान के बारे में बताएँगी। मैं गरमियों में जब रात को घर की छत पर सोने के लिए लेटता हूँ तो देर

© NCERT not to be republished

तक आकाश को देखता रहता हूँ। गाँव में तो बहुत-से तारे भी दिखाई देते हैं।

अध्यापिका – बहुत सुंदर बात कही, अशरफ़!

रत्ना – (*उत्साह से*) अध्यापिका जी, मैं भी जब बादल देखती हूँ तो मेरा मन करता है कि मैं उन पर चढ़कर पूरे आकाश की यात्रा कर आऊँ!

अध्यापिका – लगता है आप सब बच्चे सभी ग्रहों की यात्रा करना चाहते हैं! पर आज हम जिस यान की बात करने वाले हैं, उसका नाम है— 'गगनयान'। अशरफ़ का अनुमान लगभग सही था। तो बताइए, तैयार हैं आप जानने के लिए?

विद्यार्थी – (*उत्साह एवं ऊर्जा से*) जी हाँ!

© NCERT not to be republished

डोलमा – अध्यापिका जी, मेरा मन तो करता है कि मैं कई प्रकार के यानों के बारे में जानूँ और...

सतविंदर – अध्यापिका जी, इसका मन तो यह भी करता है कि यह सब यानों में बैठकर दूर-दूर तक घूम आए। (*कुछ बच्चे हँसते हैं।*)

अध्यापिका – (*हँसते हुए*) अच्छा, यह बात है! हो सकता है आपमें से ही कोई वैज्ञानिक बने और किसी यान में बैठकर जाए।

संदीप – अध्यापिका जी, मैंने गगनयान के बारे में अभी तक कुछ नहीं सुना है?

सभी विद्यार्थी – हमने भी गगनयान के बारे में कभी नहीं सुना?

अध्यापिका – बच्चो, हमारे देश के वैज्ञानिक इस यान के निर्माण कार्य में लगे हुए हैं। आशा है कि यह मिशन शीघ्र ही पूरा हो जाएगा।

साधना – अध्यापिका जी, यह गगनयान क्या करेगा?

विजय – अध्यापिका जी! गगनयान हमें आकाश में घुमाएगा क्या?

अध्यापिका – नहीं बच्चो, गगनयान हमें संपूर्ण अंतरिक्ष की यात्रा कराएगा। इसका उद्देश्य मनुष्य को अंतरिक्ष में भेजना है।

पीटर – अध्यापिका जी, मनुष्य तो पहले भी अंतरिक्ष में जा चुका है और जा रहा है। मेरी माता जी ने मुझे बताया था।

अध्यापिका – हाँ, बिलकुल सही कह रहे हो। किंतु गगनयान मिशन भारत की पहली मानव अंतरिक्ष उड़ान परियोजना है। इसमें तीन सदस्यों के चालक दल

© NCERT not to be republished

को तीन दिनों के लिए अंतरिक्ष में भेजा जाएगा और उन्हें भारतीय समुद्री जल में उतारकर सुरक्षित पृथ्वी पर वापस लाया जाएगा।

सानिया – अच्छा, यह भारत का पहला यान होगा जो मनुष्य को अंतरिक्ष में लेकर जाएगा।

अध्यापिका – बिलकुल सही। यदि भारत ने सफलतापूर्वक गगनयान तैयार कर लिया तो अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। आप सब भी खुले आकाश में पक्षियों की भाँति विचरण कर पाएँगे। (*मुस्कुराती हैं और यह सुनकर बच्चे उत्साहित हो जाते हैं।*)

अशरफ़ – अध्यापिका जी, गगनयान में सबसे पहले कौन अंतरिक्ष में जाएगा?

अध्यापिका – गगनयान मिशन तीन चरणों में विभाजित है। पहले दो चरण मानवरहित होंगे तथा तीसरे चरण में तीन अंतरिक्ष यात्रियों को भेजा जाएगा।

साधना – तो क्या पहले चरण में खाली यान अंतरिक्ष में भेजा जाएगा?

अध्यापिका – नहीं, पहले चरण में व्योममित्र को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा।

मनोहर – ये व्योममित्र कौन है अध्यापिका जी?

अध्यापिका – इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) ने व्योममित्र नाम का ह्यूमनॉइड रोबोट बनाया है जिसे गगनयान मिशन के अंतर्गत पहले चरण में अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। (*बच्चे ह्यूमनॉइड रोबोट के बारे में सुनकर चकित हो जाते हैं।*)

© NCERT not to be republished

दीक्षा – अध्यापिका जी! व्योममित्र रोबोट अंतरिक्ष में जाकर क्या करेगा?

अध्यापिका – व्योममित्र अंतरिक्ष से संबंधित जानकारी एकत्रित करेगा, सुरक्षा की जाँच करेगा और अंतरिक्ष यान प्रणाली पर नजर रखेगा ताकि जब अंतरिक्ष यात्री वहाँ जाएँ तो उन्हें अधिक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

पीटर – अध्यापिका जी! अंतरिक्ष में तीसरे चरण में कितने यात्री जाएँगे?

अध्यापिका – गगनयान मिशन के तीसरे चरण में तीन अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने की योजना है। उन्हें अंतरिक्ष में भेजने से पहले अंतरिक्ष में रहने का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

राकेश – (*आश्चर्य से*) इस प्रशिक्षण में उन्हें क्या-क्या सिखाया जाएगा? वहाँ तो चलने के लिए भूमि भी नहीं होगी... खाने के लिए घर का भोजन भी नहीं होगा... वे लोग वहाँ कैसे रहेंगे?

अध्यापिका – (*हँसती हैं*) इस प्रशिक्षण में इन तीनों यात्रियों को अंतरिक्ष के वातावरण में रहने के कौशल सिखाए जाएँगे।

दीक्षा – अध्यापिका जी, गगनयान कब अंतरिक्ष में जाएगा?

अध्यापिका – इसके लिए हमें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी होगी। अगले वर्ष जब आप नई कक्षा में जाने की तैयारी कर रहे होंगे तब गगनयान भी अपनी कक्षा में संभवतः स्थापित हो चुका होगा।

शिक्षण-संकेत – शिक्षक विद्यार्थियों को 'इसरो' के विषय में बताएँ। साथ ही उन्हें टैब एवं अन्य उपकरणों के माध्यम से इसरो में होने वाली गतिविधियों की जानकारी भी दें।

© NCERT not to be republished

इसे भी जानिए

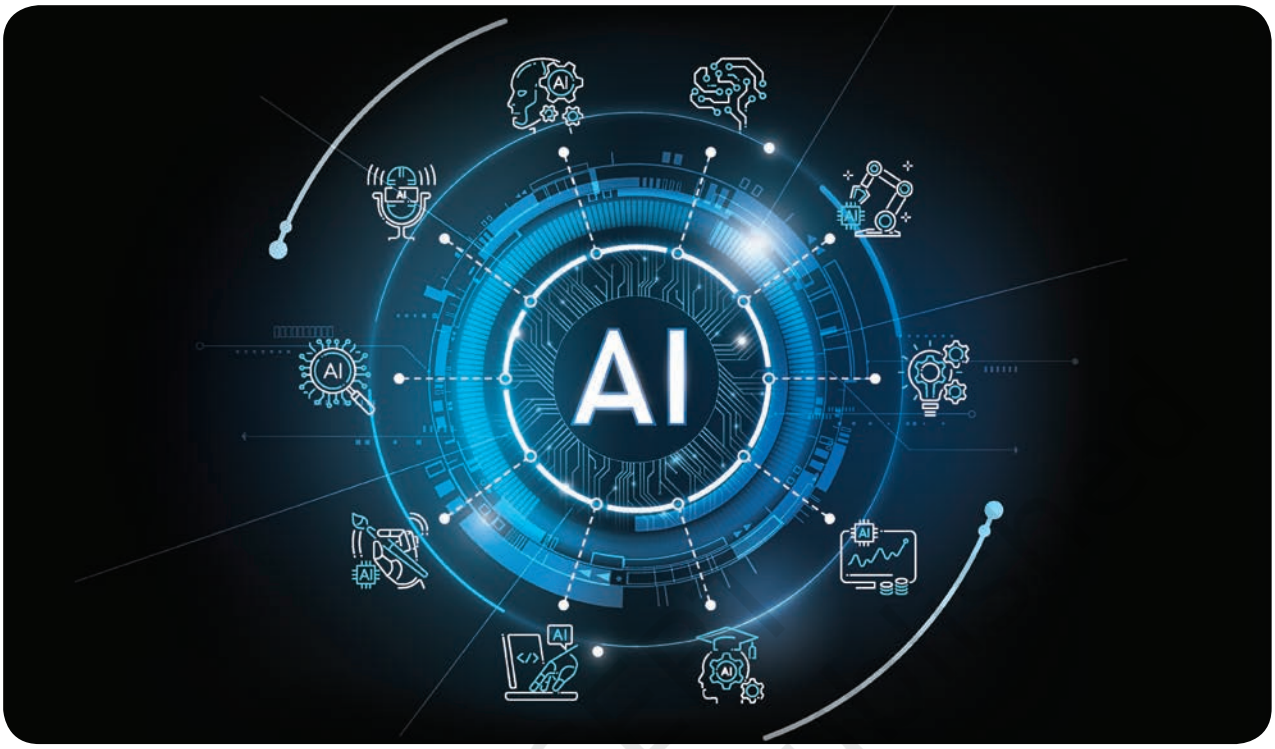

आजकल आप लोगों ने ए.आई. का नाम बहुत सुना होगा। इसका पूरा नाम 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' है। हिंदी में इसे 'कृत्रिम मेधा' कहा जा सकता है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसके अंतर्गत कंप्यूटर अथवा मशीनों में मानवीय सूझ-बूझ की प्रणाली को डाला जाता है। इसी तकनीक के कारण कोई मशीन किसी मनुष्य की तरह सोच-समझ सकती है। वह आपके द्वारा पूछे गए प्रश्नों अथवा जिज्ञासाओं के उत्तर दे सकती है। इतना ही नहीं, वह विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के साथ-साथ किसी रचनाकार की तरह कविता या कहानी भी रच सकती है। है न यह अद्भुत! आप भी पुस्तकालय, शिक्षक-अभिभावकों एवं अन्य स्रोतों के माध्यम से इसके उपयोग और सीमाओं के बारे में पता कीजिए।

© NCERT not to be republished

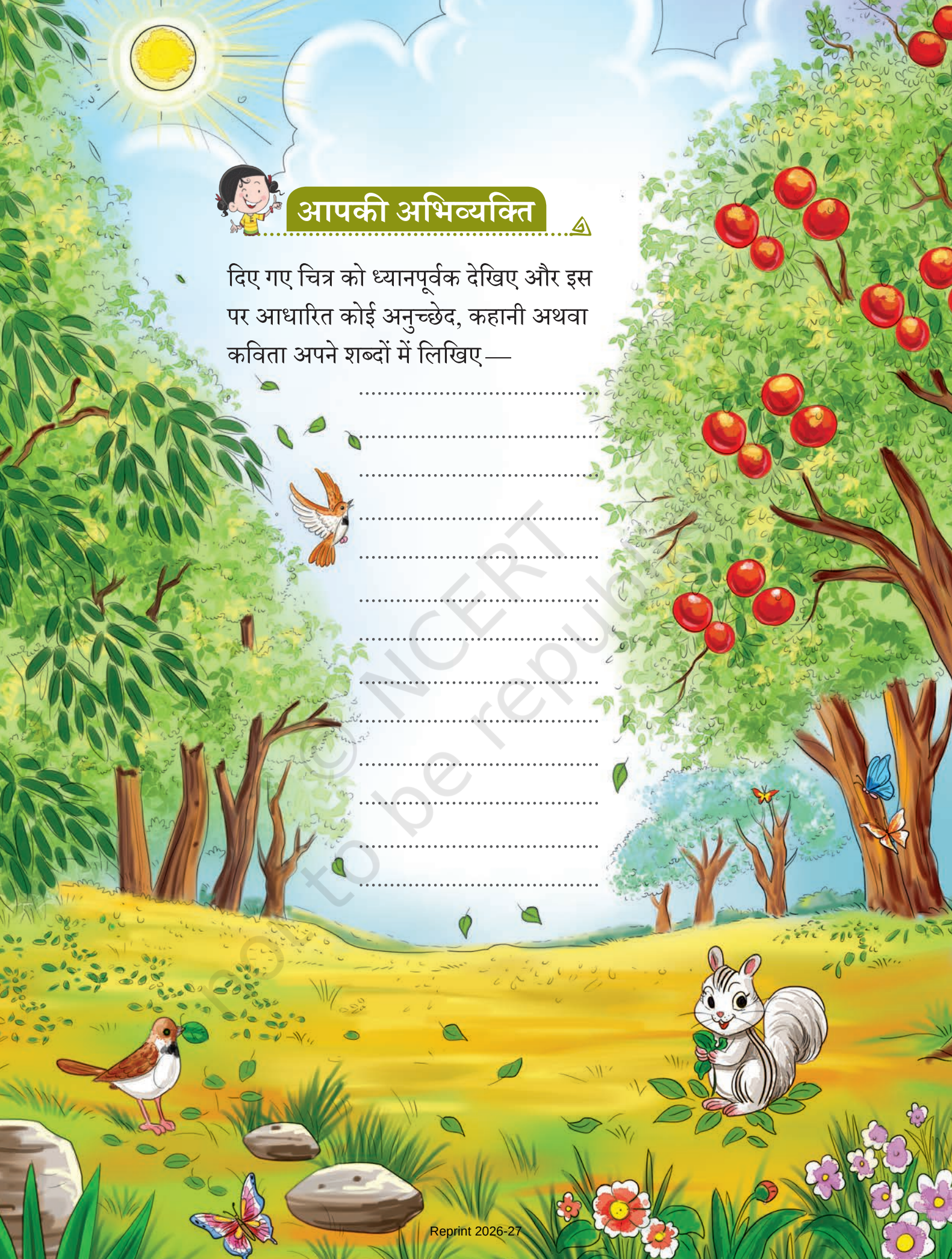

आपकी अभिव्यक्ति

दिए गए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और इस पर आधारित कोई अनुच्छेद, कहानी अथवा कविता अपने शब्दों में लिखिए—

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished